केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय
Central University of Tibetan Studies
(Deemed University)

वार्षिक रिपोर्ट
Annual Report
2013-2014

SARNATH, VARANASI - 221007
www.cuts.ac.in

विषय-सूची

परिच्छेद पृष्ठ संख्या

1. विश्वविद्यालय का संक्षिप्त परिचय 3
2. संकाय 10
3. शोध विभाग 28
4. शान्तरक्षित ग्रन्थालय 47
5. प्रशासन 55
6. गतिविधियाँ 61

परिशिष्ट

1. विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित दीक्षान्त समारोह और उनमें उपाधि से सम्मानित विशिष्ट विद्वानों की सूची 75
2. सोसायटी के सदस्यों की सूची 77
3. अधिशासी बोर्ड के सदस्यों की सूची 79
4. विद्वत् परिषद् के सदस्यों की सूची 81
5. वित्त समिति के सदस्यों की सूची 84
6. योजना एवं प्रबोधक परिषद के सदस्यों की सूची 85
7. प्रकाशन समिति के सदस्यों की सूची 86

सम्पादन समिति

अध्यक्ष :
डॉ. बनारसी लाल
एसोशिएट प्रोफेसर
दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध विभाग

सदस्य :
मौसमी गुहा बैनर्जी
असिस्टेंट प्रोफेसर (अंग्रेजी) एवं अध्यक्ष
प्राचीन एवं आधुनिक भाषा विभाग

डॉ. डी. पी. सिंह
पी. ए.
शान्तरक्षित ग्रन्थालय

सदस्य सचिव :
श्री एम.एल. सिंह
वरिष्ठ लिपिक (प्रशासन अनुभाग प्रथम)

1. विश्वविद्यालय का संक्षिप्त परिचय

तिब्बती तथा सीमान्त हिमालय क्षेत्र के विद्यार्थियों के शिक्षा एवं प्रशिक्षण के उद्देश्य से, भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू तथा परम पावन 14वें दलाई लामा के पवित्र प्रयासों से सन् 1967 में स्थापित केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान एक अद्वितीय विश्वविद्यालय है।

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के संघटक विभाग के रूप में शुभारम्भ करके सन् 1977 में केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान नाम के साथ, विश्वविद्यालय ने भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के अधीन स्वायत्त संस्थान का दर्जा प्राप्त किया।

दिनांक 5 अप्रैल, 1988 को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा धारा 3 के अन्तर्गत की गई अनुशंसा के आधार पर भारत सरकार ने केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान की अद्वितीय कार्यपद्धति तथा उपलब्धियों के आधार पर संस्थान को मान्य विश्वविद्यालय का दर्जा प्रदान किया।

दिनांक 30 सितम्बर, 2008 को केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान के सोसायटी के अनुमोदन के आधार पर संस्थान का परिवर्तित नाम केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय हुआ। विश्वविद्यालय के इस नये नाम का लोकार्पण परम पावन दलाई लामा जी ने दिनांक 15 जनवरी, 2009 को अपने कर-कमलों से किया।

सन् 2000 तक विश्वविद्यालय, प्रो. समदोंग रिनपोछे, विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति एवं भूतपूर्व प्रधानमंत्री, निर्वासित तिब्बती सरकार के कुशल नेतृत्व में प्रगति पथ पर अग्रसर रहा।

इस समय यह विश्वविद्यालय, प्रो. गेशे ङवङ् समतेन, कुलपति के कुशल नेतृत्व तथा संकायों के विद्वान् सदस्यों के समर्पित सहयोग से, पूर्ण कुशलता के साथ, भोट अध्ययन, बौद्ध अध्ययन तथा हिमालयी अध्ययन के क्षेत्र में अपने उद्देश्यों की पूर्ति हेतु सतत् अग्रसर है।

निर्धारित विषयों के अध्ययन-अध्यापन के साथ यह विश्वविद्यालय अपने शोध विद्यार्थियों एवं देश-विदेश से आने वाले शोध विद्यार्थियों का मार्गदर्शन कर रहा है। इस सन्दर्भ में यह विश्वविद्यालय बौद्ध एवं बौद्धेतर भारतीय दार्शनिक विचारधाराओं, बौद्ध एवं पाश्चात्य दार्शनिक विचारधाराओं तथा बौद्ध दार्शनिकों एवं वैज्ञानिकों के मध्य विचार विनिमय एवं संवाद के लिए एक सशक्त मंच प्रदान कर रहा है।

विश्वविद्यालय की उच्च शैक्षणिक गुणवत्ता तथा शिक्षण-प्रशिक्षण प्रणाली को मान्यता प्रदान करते हुए, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्थापित स्वायत्त संस्था, राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (NAAC) ने, इस विश्वविद्यालय को सर्वोच्च पाँच सितारा संस्थान का प्रमाण-पत्र प्रदान किया है।

केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, नैक द्वारा सर्वोच्च श्रेणी प्राप्त करने वाला अपनी तरह का अकेला विश्वविद्यालय है।

उद्देश्य एवं योजनाएँ

भारत सरकार तथा परम पावन दलाई लामा जी द्वारा स्थापित संस्थान की परिकल्पना एवं लक्ष्य को विश्वविद्यालय के निम्नलिखित उद्देश्यों में समाहित किया गया है, जिनकी सतत् पूर्ति हेतु विश्वविद्यालय पिछले तीन दशकों से प्रयासरत है।

- तिब्बती संस्कृति एवं परम्पराओं का संरक्षण।
- ऐसे भारतीय ज्ञान-विज्ञान एवं साहित्य का पुनरुद्धार, जो मूल भाषा में समाप्त हो चुके हैं, परन्तु तिब्बती भाषा में उपलब्ध हैं।
- ऐसे सीमान्त भारतीय क्षेत्रों के विद्यार्थियों को वैकल्पिक शिक्षा की सुविधा प्रदान करना, जो पूर्व में इस तरह की उच्च शिक्षा तिब्बत जाकर प्राप्त करते थे।
- आधुनिक विश्वविद्यालय शिक्षा-प्रणाली के अन्तर्गत पारम्परिक विषयों की शिक्षा एवं प्रशिक्षण की व्यवस्था प्रदान करना तथा तिब्बती अध्ययन के क्षेत्र में उपाधियाँ प्रदान करना है।
- बौद्ध दर्शन और तिब्बती अध्ययन की शिक्षा प्रदान करना एवं इसके माध्यम से व्यक्तित्व में नैतिक मूल्यों का विकास करना।

विश्वविद्यालय के उपर्युक्त उद्देश्यों के आधार पर विश्वविद्यालय की शैक्षणिक व्यवस्था को निम्नानुसार संगठित किया गया है।

(1) शैक्षणिक

(क) हेतु एवं अध्यात्म विद्या संकाय

(i) मूलशास्त्र विभाग

(ii) सम्प्रदायशास्त्र विभाग

(iii) बोन सम्प्रदायशास्त्र विभाग

(ख) शब्द विद्या संकाय

(i) प्राचीन एवं आधुनिक भाषा विभाग

(ii) संस्कृत विभाग

(iii) तिब्बती भाषा एवं साहित्य विभाग

(ग) आधुनिक विद्या संकाय

(i) समाजशास्त्र विभाग

(घ) शिल्प विद्या संकाय

(i) तिब्बती काष्ठकला विभाग

(ii) तिब्बती चित्रकला विभाग

(ङ) सोवा रिग्-पा एवं भोट ज्योतिष संकाय

(i) सोवा रिग्-पा विभाग

(ii) भोट ज्योतिष विभाग

(2) शोध विभाग

(क) पुनरुद्धार विभाग

(ख) अनुवाद विभाग

(ग) दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध विभाग

(घ) कोश विभाग

(3) शान्तरक्षित ग्रन्थालय

(क) अवाप्ति एवं तकनीकी अनुभाग

(ख) सामयिकी, पत्र-पत्रिका, सन्दर्भ एवं इनफ्लिबनेट अनुभाग

(ग) तिब्बती अनुभाग

(घ) आदान-प्रदान अनुभाग

(ङ) संचयागार अनुभाग

(च) मल्टीमीडिया अनुभाग

(छ) कम्प्यूटर अनुभाग

(ज) भण्डार एवं अनुरक्षण अनुभाग

(4) प्रशासन

(क) प्रशासन अनुभाग-1

(ख) प्रशासन अनुभाग-2

(ग) परीक्षा अनुभाग

(घ) सम्पत्ति अनुभाग

(ङ) वित्त अनुभाग

(च) प्रकाशन अनुभाग

उपर्युक्त शैक्षणिक एवं शोध गतिविधियों की संगठनात्मक रूपरेखा निम्नलिखित प्रकार से की गयी है—

विश्वविद्यालय की संगठनात्मक रूपरेखा

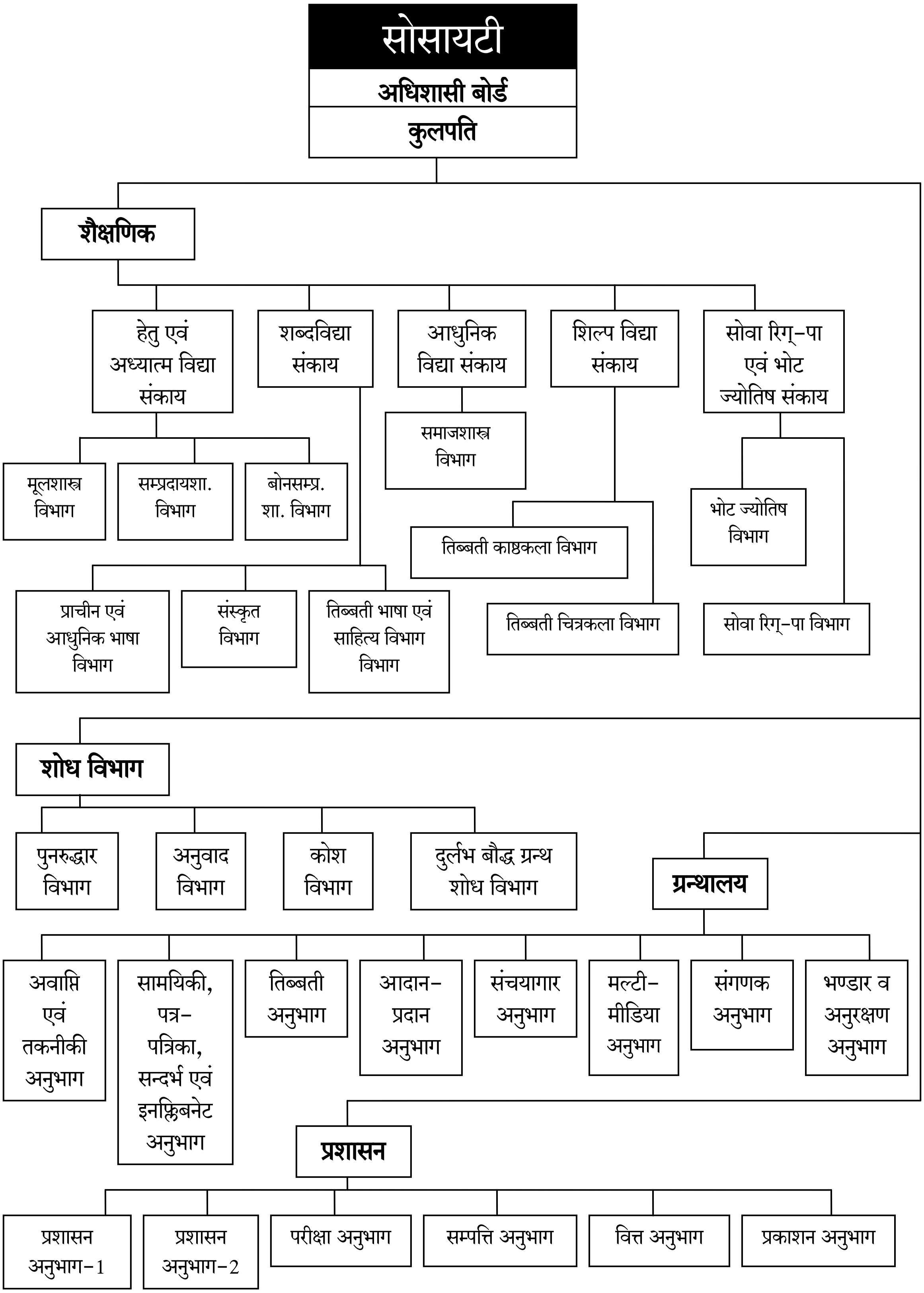

शैक्षणिक : पंजीकरण/ नामांकन एवं परीक्षा 2013-14

विश्वविद्यालय में विभिन्न पाठ्यक्रमों में छात्र नामाङ्कित किए जाते हैं। वर्ष 2013-14 का परीक्षा फल निम्नाङ्कित तालिका में प्रस्तुत किया जा रहा है। वर्ष 2012-13 से विश्वविद्यालय की परीक्षा पद्धति में क्रेडिट पद्धति लागू की गई है।

10 अंकीय ग्रेडिंग स्केल

प्राप्तांक	ग्रेड प्वाइंट	ग्रेड	श्रेणी
80-100	8-10	ए +	प्रथम श्रेणी विशिष्टता सहित
70-79	7-7.9	ए	उच्च प्रथम श्रेणी
60-69	6-6.9	बी +	प्रथम श्रेणी
45-59	4.5-5.9	बी	द्वितीय श्रेणी
36-44	3.6-4.4	सी	तृतीय श्रेणी
35 एवं 35 से कम	3.5 एवं उससे कम	डी	अनुत्तीर्ण

प्रथम अधिसत्र (जुलाई 2013 से दिसम्बर 2013)

परीक्षा का नाम	कुल नामांकित छात्र	अनुपस्थित छात्रों की संख्या	उपस्थित छात्रों की संख्या	अनुत्तीर्ण छात्रों की संख्या	उत्तीर्ण छात्रों की संख्या	टिप्पणी
पूर्वमध्यमा, प्रथम वर्ष	40	00	40	00	40	
पूर्वमध्यमा, द्वितीय वर्ष	55	00	55	05	50	
उत्तरमध्यमा, प्रथम वर्ष	49	00	49	00	49	
उत्तरमध्यमा, द्वितीय वर्ष	41	01	40	02	38	
शास्त्री, प्रथम वर्ष	41	02	39	03	36	
शास्त्री, द्वितीय वर्ष	33	01	32	02	30	
शास्त्री, तृतीय वर्ष	42	01	41	01	40	
आचार्य, प्रथम वर्ष	26	03	23	01	22	
आचार्य, द्वितीय वर्ष	22	02	20	00	20	
उ.म. (आयु.), प्रथम वर्ष	09	00	09	01	08	

उ.म. (आयु.), द्वितीय वर्ष	08	00	08	01	07	
ज्योतिष शास्त्री, द्वितीय वर्ष	01	00	01	00	01	
फाइन आर्ट्स, द्वितीय	02	00	02	01	01	
बी. फाइन आर्ट्स, प्रथम	02	00	02	01	01	
बी. फाइन आर्ट्स, द्वितीय	01	00	01	00	01	
बी. फाइन आर्ट्स, तृतीय	04	00	04	00	04	
एम.एफ.ए., प्रथम	03	00	03	00	03	
बी.एस.एम.एस., द्वितीय वर्ष	04	00	04	00	04	
बी.एस.एम.एस., तृतीय वर्ष	03	00	03	01	02	
बी.एस.एम.एस., चतुर्थ वर्ष	05	00	05	00	05	
बी.एस.एम.एस., पंचम वर्ष	02	00	02	00	02	
कुल योग	**393**	**10**	**383**	**19**	**364**	

द्वितीय अधिसत्र (दिसम्बर 2013 से मई 2014)

परीक्षा का नाम	कुल नामांकित छात्र	अनुपस्थित छात्रों की संख्या	उपस्थित छात्रों की संख्या	अनुत्तीर्ण छात्रों की संख्या	उत्तीर्ण छात्रों की संख्या	टिप्पणी
पूर्वमध्यमा, प्रथम वर्ष	40	01	39	04	35	
पूर्वमध्यमा, द्वितीय वर्ष	57	00	57	00	57	
उत्तरमध्यमा, प्रथम वर्ष	49	00	49	01	48	
उत्तरमध्यमा, द्वितीय वर्ष	41	01	40	02	38	
शास्त्री, प्रथम वर्ष	39	02	37	05	32	
शास्त्री, द्वितीय वर्ष	34	00	34	06	28	
शास्त्री, तृतीय वर्ष	42	01	41	03	38	
आचार्य, प्रथम वर्ष	24	03	21	00	21	

आचार्य, द्वितीय वर्ष	20	00	20	02	18	
उ.म. (आयु.), प्रथम वर्ष	10	00	10	04	06	
उ.म. (आयु.), द्वितीय वर्ष	08	00	08	00	08	
ज्योतिष शास्त्री, द्वितीय वर्ष	01	00	01	01	00	
फाइन आर्ट्स, द्वितीय	02	00	02	01	01	
बी. फाइन आर्ट्स, प्रथम	02	00	02	00	02	
बी. फाइन आर्ट्स, द्वितीय	01	00	01	00	01	
बी. फाइन आर्ट्स, तृतीय	04	00	04	00	04	
एम.एफ.ए., प्रथम	03	00	03	00	03	
बी.एस.एम.एस., द्वितीय वर्ष	04	00	04	00	04	
बी.एस.एम.एस., तृतीय वर्ष	03	00	03	00	03	
बी.एस.एम.एस., चतुर्थ वर्ष	05	00	05	00	05	
बी.एस.एम.एस., पंचम वर्ष	02	00	02	00	02	
कुल योग	**391**	**08**	**383**	**29**	**354**	

2. संकाय

विश्वविद्यालय की शैक्षणिक गतिविधियाँ मुख्यतः अध्ययन-अध्यापन एवं शोध-कार्य है । परीक्षाओं के प्रमाण-पत्र विश्वविद्यालय स्वयं जारी करता है।

विश्वविद्यालय बौद्ध अध्ययन, तिब्बती आयुर्विज्ञान (सोवा रिग्-पा) एवं ज्योतिष में शास्त्री, आचार्य, एम. फिल., पीएच. डी. एवं एम.डी./एम.एस. पाठ्यक्रमों का संचालन करता है। इसमें विद्यार्थियों को पूर्वमध्यमा प्रथम वर्ष (नौवीं कक्षा) से ही प्रवेश दिया जाता है और उन्हें पूर्व स्नातक तक के चार वर्षीय पाठ्यक्रम को पूरा करना होता है, जो उन्हें आधुनिक विश्वविद्यालय शिक्षा-प्रणाली में दी जा रही, परम्परागत शिक्षा के निमित्त तैयार करता है। पूर्वमध्यमा से लेकर आचार्य तक, नौ वर्षीय बौद्ध अध्ययन के पाठ्यक्रम में विद्यार्थियों को तिब्बती, संस्कृत, हिन्दी अथवा अंग्रेजी भाषाओं का तथा भारतीय बौद्ध शास्त्रों एवं उनकी तिब्बती टीकाओं का अध्ययन कराया जाता है। इसके साथ-साथ सम्प्रदाय शास्त्र, बोन परम्परा, इतिहास, अर्थशास्त्र एवं राजनीतिशास्त्र का भी अध्ययन कराया जाता है।

सोवा रिग्-पा संकाय में परम्परागत तिब्बती चिकित्सा शिक्षा पद्धति के सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक अध्ययन के साथ आधुनिक चिकित्सा-विज्ञान के विकृति-विज्ञान, शरीर-रचना-विज्ञान एवं शरीर-क्रिया-विज्ञान का अध्ययन कराया जाता है। विद्यार्थियों को तिब्बती चिकित्सा पद्धति में निपुण बनाने हेतु उन्हें नैदानिक प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

तिब्बती ललित कला के विद्यार्थियों को थंका चित्रपट के निर्माण की विधि तथा तिब्बती काष्ठकला के विद्यार्थियों को काष्ठ-तक्षण-कला सिखाई जाती है। इसके साथ ही बौद्ध दर्शन, तिब्बती भाषा एवं साहित्य, अंग्रेजी या हिन्दी एवं कला का इतिहास का भी ज्ञान कराया जाता है।

शिक्षण प्रविधि एवं अभिगम

विश्वविद्यालय के उद्देश्यों के अनुरूप विभिन्न पाठ्यक्रमों की संरचना की गयी है। अध्यापकों के सुझावों तथा उन पर अध्ययन परिषद् के विषय-विशेषज्ञों की सहमति के आधार पर पाठ्यक्रमों की संरचना एवं उनमें परिवर्तन-परिवर्द्धन किया जाता है तथा इन्हें अन्तिम रूप में विद्वत् परिषद एवं अधिशासी बोर्ड द्वारा पारित किया जाता है।

इनके अतिरिक्त विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विकास के लिए विश्वविद्यालय परिसर में सामूहिक एवं वैयक्तिक स्तर पर और भी अनेक गतिविधियाँ होती रहती हैं, जिनमें सामूहिक परिचर्चा, व्याख्यान, खेल-कूद, शैक्षणिक विनिमय कार्यक्रम एवं समाज सेवा सम्मिलित हैं। यह विश्वविद्यालय पूर्णरूप से आवासीय है। सभी पाठ्यक्रम परिसर में ही चलाये जाते हैं।

परीक्षा एवं मूल्यांकन

पंजीकृत विद्यार्थियों को परीक्षा में सम्मिलित होने के लिए कम से कम 85% उपस्थिति अनिवार्य है। परीक्षा अधिसत्रों में संचालित होती हैं।

आलोच्य वर्ष में आयोजित विभिन्न पाठ्यक्रमों की परीक्षाओं के परिणाम निम्नलिखित तालिका में प्रदर्शित किए गए हैं-

संकाय

शैक्षणिक विभागों का परिचय

(क) हेतु एवं अध्यात्म विद्या संकाय

डॉ. टशी छेरिंग (एस) - संकायाध्यक्ष

(I) मूलशास्त्र विभाग

मानव-जीवन की वास्तविकता एवं उसके उद्देश्य को समझने में सक्षम बनाने के निमित्त बौद्ध दर्शन एवं संस्कृति का संरक्षण एवं विकास करना, इस विभाग का उद्देश्य है। इस विभाग में बौद्ध-दर्शन, न्याय, मनोविज्ञान आदि विषय, बुद्धवचन तथा भारतीय आचार्यों द्वारा रचित शास्त्रों का अध्यापन होता है। मानव एवं अन्य प्राणियों के लिये इस जगत् को बेहतर बनाने में सहायता करना भी इस विभाग का उद्देश्य है। मात्र अपने कल्याण की बात न सोचकर करुणा एवं शान्ति का आश्रय लेकर वर्तमान जगत् की आवश्यकतानुसार इन गुणों का प्रसार करना भी इसके उद्देश्यों में शामिल है। यह विभाग बौद्ध दर्शन के अध्यापन के साथ-साथ शोध-कार्य भी कर रहा है। वैश्वीकरण के इस युग में नागार्जुन के शिष्यों एवं महासिद्धों के विचारों के पुनरुद्धार एवं उनके युगानुकूल समायोजन पर उपर्युक्त विभाग शोधरत है।

(1) भिक्षु लोब्संग यारफेल - एसोशिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
(2) प्रो. गेशे येशे थबख्ये - प्रोफेसर (पुनर्नियोजित)
(3) डॉ. वङ्छुक दोर्जे नेगी - एसोशिएट प्रोफेसर (अवकाश पर)
(4) गेशे लोब्संग थरख्ये - अतिथि प्राध्यापक
(5) गेशे लोसंग वंगडग - अतिथि प्राध्यापक
(6) गेशे तेनज़िन नोरबू - अतिथि प्राध्यापक
(7) गेशे खरपो - अतिथि प्राध्यापक

शैक्षणिक गतिविधियाँ-

भिक्षु लोब्संग यारफेल

1. अभिधर्मकोश, विनय एवं अभिसमयालंकारवृत्ति पर व्याख्या लेखन का कार्य जारी है।
2. दिनांक 31 दिसम्बर, 2013 और 1-3 जनवरी, 2014 को शैक्षणिक आदान प्रदान कार्यक्रम के अन्तर्गत मैसाच्युसेट, अमेरिका के पाँच कालेजों के छात्रों को बोधिचर्यावतार का अध्यापन किया।

(II) सम्प्रदायशास्त्र विभाग

इस विभाग में तिब्बती विद्वानों द्वारा बुद्धवचन एवं भारतीय आचार्यों के ग्रन्थों पर रचित टीका तथा स्वतन्त्र ग्रन्थों पर अध्यापन-कार्य होता है। भिक्षु एवं सामान्य विद्यार्थियों को तिब्बती बौद्ध परम्परा के चारों सम्प्रदायों की शिक्षा एक स्थान पर देना, इस विश्वविद्यालय की स्थापना के प्रमुख उद्देश्यों में से एक है। यद्यपि भिक्षु, बौद्ध-विहारों में रहकर बौद्ध धर्म एवं दर्शन का अध्ययन कर सकते हैं, परन्तु उनमें चारों सम्प्रदायों की एक साथ शिक्षण की व्यवस्था नहीं है। इसके अतिरिक्त सामान्य विद्यार्थियों के लिए तिब्बती बौद्ध विहारों में अध्ययन की कोई व्यवस्था नहीं है।

उक्त सिद्धान्त एवं तथ्यों के आधार पर यह विभाग तिब्बती बौद्ध परम्परा के निम्नलिखित सम्प्रदायों की परम्पराओं के अध्ययन एवं शोध में कार्यरत है–

(क) कर्ग्युद सम्प्रदाय

(1) डॉ. टशी सम्फेल	-	एसिस्टेंट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष (स.शा.)
(2) भिक्षु सोनम ग्यात्सो	-	प्रोफेसर
(3) भिक्षु लोब्संग थोक्मेद	-	एसोशिएट प्रोफेसर
(4) भिक्षु रमेशचन्द्र नेगी	-	एसिस्टेंट प्रोफेसर
(5) भिक्षु मेहर सिंह नेगी	-	अतिथि प्राध्यापक

(ख) साक्या सम्प्रदाय

(1) डॉ. टशी छेरिङ् (एस)	-	एसोशिएट प्रोफेसर
(2) भिक्षु नवांग लोडो	-	एसिस्टेंट प्रोफेसर
(3) भिक्षु डक्पा सेङ्गे	-	एसिस्टेंट प्रोफेसर
(4) भिक्षु नवांग जोद्पा	-	अतिथि प्राध्यापक

शैक्षणिक गतिविधियाँ-

डॉ. टशी छेरिङ् (एस)

1. दिनांक 18-19 मई, 2013 को डोलमा फोटंग, नयी दिल्ली की ओर से मनाली (हि. प्र.) में आयोजित संगोष्ठी "पश्चिमी हिमालयी संस्कृति" में भाग लिया तथा आलेख प्रस्तुत किया।
2. दिनांक 29 दिसम्बर, 2013 से 20 जनवरी, 2014 तक पाँच अमेरिकी कालेजों के छात्रों के लिए आयोजित शैक्षिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के संयोजन में मुख्य कोआर्डिनेटर का कार्य सम्पन्न किया।
3. दिनांक 10-12 दिसम्बर, 2013 को विश्वविद्यालय एवं ज्ञान-प्रवाह, वाराणसी के संयुक्त आयोजकत्व में सम्पन्न राष्ट्रीय संगोष्ठी "बुद्धिस्ट आर्ट एण्ड फिलॉसफी" में भाग लिया तथा शोध-पत्र प्रस्तुत किया।
4. दिनांक 2-4 जनवरी, 2014 को डॉ. लोब्संग रपगे का "इन्ट्रोडक्शन टू न्यूरो साइंस ऑफ सस्टेंड एटेंशन फ्रॉम ए बुद्धिस्ट एण्ड वेस्टर्न साइंस" विषय पर व्याख्यान-माला का आयोजन किया।
5. दिनांक 12-16 मार्च, 2014 तक शोध पद्धति विषय पर आयोजित कार्यशाला में व्याख्यान दिया।
6. फरवरी, 2014 को वोंकवांग डिजिटल विश्वविद्यालय, कोरिया के छात्रों के लिए आयोजित पाँच दिवसीय पाठ्यक्रम में व्याख्यान दिया।
7. लयोला कालेज, चैन्नै द्वारा आयोजित संगोष्ठी "इंटर रिलिजियस डॉयलॉग" में शोध-पत्र प्रस्तुत किया।
8. दिनांक 13-14 जनवरी, 2014 को रविशंकर विश्वविद्यालय, रायपुर में आयोजित संगोष्ठी "द फिलॉसॉफी ऑफ नागार्जुन" में भाग लिया तथा शोध-पत्र प्रस्तुत किया।
9. जनवरी, 2014 को रॉयल विश्वविद्यालय भूटान से आए शैक्षिक दल को सम्बोधित किया।

10. इन्टरनेशनल इंस्टीच्यूट ऑफ हायर टिबेटन स्टडीज़, आस्ट्रिया में विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में कार्य किया।
11. विश्वविद्यालय के चीफ विजिलेन्स ऑफिसर के रूप में कार्य किया।

(ग) ञिङमा सम्प्रदाय

(1) भिक्षु दुद्‌जोम नमग्यल	-	एसिस्टेंट प्रोफेसर
(2) भिक्षु सोनम दोर्जे	-	अतिथि प्राध्यापक
(3) भिक्षु छेरिङ्‌ ग्युर्मेद	-	अतिथि प्राध्यापक
(4) खेनपो संगा तेनज़िन	-	अतिथि प्राध्यापक

(घ) गेलुक्‌ सम्प्रदाय

(1) भिक्षु लोब्संग ज्ञलछेन	-	एसोशिएट प्रोफेसर
(2) गेशे थुबतेन लेगशेद्‌	-	एसिस्टेंट प्रोफेसर
(3) भिक्षु लोब्संग छुलठ्रिम	-	एसिस्टेंट प्रोफेसर
(4) भिक्षु नवांग तेनफेल	-	अतिथि प्राध्यापक

शैक्षणिक गतिविधियाँ-

गेशे थुबतेन लेगशेद्‌

1. दिनांक 15-16 जनवरी, 2014 को शैक्षणिक दानादान कार्यक्रम के अन्तर्गत अमेरिका से आये छात्रों को "बौद्ध न्याय" विषय पर दो व्याख्यान प्रदान किया।
2. केन्द्रीय तिब्बती प्रशासन, धर्मशाला द्वारा प्राइमरी स्कूल के अध्यापकों के लिए आयोजित वर्कशाप में दिनांक 3 से 5 नवम्बर को तीन व्याख्यान दिया।
3. एम.फिल. छात्र श्री तेनज़िन कल्दन का निर्देशन किया।
4. टिबेटन यूथ-बुद्धिस्ट एसोसिएशन द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ में "ट्रेनिंग बोधिचित्त थ्रो सेवन इन्स्ट्रक्शन ऑफ काउज़ एण्ड इफेक्ट" विषय पर लेख प्रकाशित।

(III) बोन सम्प्रदायशास्त्र विभाग

बोन सम्प्रदाय तिब्बत का एक प्राचीन धर्म है। इसकी हजारों वर्षों से अविच्छिन्न ऐतिहासिक, धार्मिक एवं दार्शनिक परम्परा चली आ रही है। इस सम्प्रदाय में प्रचुर मात्रा में दर्शन, तर्क-शास्त्र आदि विषयों के साहित्य उपलब्ध हैं।

इस विश्वविद्यालय में बोन सम्प्रदाय के साहित्य को दो भागों में विभाजित कर सुयोग्य अध्यापकों द्वारा अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था की गयी है। प्रथम भाग में बोन सम्प्रदाय के शास्ता शेनरब द्वारा उपदिष्ट वचनों और पूर्व के आचार्यों के ग्रन्थों को तथा द्वितीय भाग में 8वीं शताब्दी के पश्चात्‌ के आचार्यों के ग्रन्थों को रखा गया है।

(1) भिक्षु सी.जी.एस. फुन्छोक ञिमा	-	एसिस्टेंट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
(2) भिक्षु गोरिग तेन्जिन छोदेन	-	एसोशिएट प्रोफेसर

(3) भिक्षु जी.एल.एल. वांगछुक	-	एसिस्टेंट प्रोफेसर (उपाचार्य)
(4) भिक्षु एम.टी. नमदक छुकफुद	-	अतिथि प्राध्यापक
(5) भिक्षु युङ्डुङ् गेलेक	-	अतिथि प्राध्यापक

(ख) शब्द विद्या संकाय

डॉ. बाबूराम त्रिपाठी	-	संकायाध्यक्ष

(I) प्राचीन एवं आधुनिक भाषा विभाग

(1) मौसमी गुहा बैनर्जी	-	एसिस्टेंट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष (अंग्रेजी)
(2) डॉ. बाबूराम त्रिपाठी	-	एसोशिएट प्रोफेसर (हिन्दी)
(3) डॉ. किरण सिंह	-	एसिस्टेंट प्रोफेसर (हिन्दी)
(4) डॉ. सुरेन्द्र कुमार	-	एसोशिएट प्रोफेसर (पालि)
(5) श्री अरविन्द कुमार सिंह	-	अतिथि प्राध्यापक (पालि)
(6) श्री रामभवन यादव	-	अतिथि प्राध्यापक (अंग्रेजी)
(7) सुश्री सोनम वङमो	-	अतिथि प्राध्यापक (अंग्रेजी)

शैक्षणिक गतिविधियाँ-

शैक्षणिक वर्ष 2013-14 में विभाग द्वारा निम्नलिखित गतिविधियाँ सम्पन्न की गईं-

1. दिनांक 20 एवं 27 जुलाई, 2013 को अंग्रेज़ी कक्षा के छात्रों के मध्य ग्रुप डिस्कशन का आयोजन किया गया।
2. दिनांक 4-13 सितम्बर, 2013 को "शुद्ध हिन्दी प्रयोग" विषय पर दस दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया।
3. दिनांक 5 सितम्बर, 2013 को शिक्षक दिवस के अवसर पर पूर्व मध्यमा प्रथम वर्ष के छात्रों के लिए "इम्पोर्टेंस ऑफ टीचिंग एण्ड लर्निंग" विषय पर डॉ. बाबू राम त्रिपाठी, डॉ. यू. सी. सिंह तथा डॉ. एम. जी. बैनर्जी का व्याख्यान आयोजित हुआ।
4. दिनांक 23 सितम्बर, 2013 को शास्त्री एवं आचार्य कक्षाओं के लिए अंग्रेज़ी में "द लाइफ ऑफ स्टुडेंट इन फिलॉसफी- एन एपिस्टमोलॉजीकल सर्च फार ट्रुथ वियोंड पोलिटिकल इलुशन", पूर्व मध्यमा एवं उत्तर मध्यमा के छात्रों के लिए "लर्निंग इंगलिश लैंग्वेज - ए क्लासरूम एक्सपेरियंस वर्सिस ए टेक्नोलॉजी इनेबल अन्डरस्टेंडिंग" विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन हुआ।
5. दिनांक 24 सितम्बर, 2014 को हिन्दी कक्षा के छात्रों के लिए "क्या छात्र राजनीति में भाग ले सकते हैं" विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।
6. दिनांक 28 सितम्बर, 2013 को कन्या महाविद्यालय बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रो. सुमन जैन का शास्त्री कक्षाओं के छात्रों के लिए "हिन्दी उपन्यास और ध्रुवस्वामी" विषय पर व्याख्यान आयोजित हुआ।
7. दिनांक 4 अक्टूबर, 2013 को महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के प्रो. श्रद्धानन्द का शास्त्री एवं पू.म. के छात्रों के लिए "हिन्दी नाटक" तथा "एकांकी" विषय पर व्याख्यान आयोजित हुआ।

8. दिनांक 5 अक्टूबर, 2013 को शास्त्री एवं आचार्य कक्षाओँ के लिए अंग्रेज़ी साहित्य पर बी.एच. यू., वाराणसी के प्रो. के. एन. पाण्डेय का "द इवोल्युशन ऑफ इंडियन इंगलिश पोइट्री" और "मेटाफिज़िकल पोइट्री" विषय पर दो व्याख्यान हुए।

9. दिनांक 1-10 जनवरी तथा 16-18 जनवरी, 2014 को पूर्वमध्यमा प्रथम वर्ष के छात्रों के लिए हैम्पशायर कालेज के प्रो. कोनी कासर का अंग्रेज़ी भाषा विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया।

10. दिनांक 4 जनवरी, 2014 को प्रो. रामसुधार सिंह, यू. पी. कालेज का शास्त्री कक्षाओं के छात्रों के लिए "निर्मला एक मूल्यांकन" एवं "महादेवी वर्मा कृत राम रेखाचित्र" विषय पर विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया।

11. दिनांक 8 जनवरी, 2014 को डॉ. यू.पी. सिंह, अध्यक्ष हिन्दी विभाग, भुड़कुड़ा स्नातकोत्तर कालेज, गाजीपुर का "प्रेमचन्द और निर्मला" तथा "हिन्दी साहित्य का रीतिकाल" विषय पर शास्त्री कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए व्याख्यान आयोजित हुआ।

12. दिनांक 13 फरवरी को विभाग द्वारा हिन्दी एवं अंग्रेज़ी में शास्त्री कक्षाओं के लिए "द सिंग्निफिकेंस ऑफ बुद्धिस्ट आइडियालॉजी इन अशरिंग वर्ल्ड पीस" तथा मध्यमा कक्षाओं के लिए "द इम्पोर्टेंस ऑफ डिसिप्लिन इऩ शेपिंग द करेक्टर ऑफ स्टुडेंट" विषय पर निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

13. दिनांक 15 फरवरी, 2014 को विभाग की ओर से "सन्त रविदास की सामाजिक चेतना" विषय पर एक दिवसीय परिचर्चा सत्र का आयोजन हुआ, जिसमें वाराणसी के विभिन्न संस्थाओं के विद्वानों ने भाग लिया।

14. पूर्वमध्यमा प्रथम वर्ष के छात्रों के लिए वाराणसी के प्रसिद्ध स्थानों यथा कबीर का जन्म स्थान, मुंशी प्रेमचन्द का गाँव तथा काशी विश्वनाथ मन्दिर का शैक्षणिक यात्रा आयोजित किया गया। इसका नेतृत्व डॉ. बी.आर. त्रिपाठी एवं डॉ. रामजी सिंह ने किया।

15. दिनांक 11 मार्च, 2014 को आचार्य के छात्रों के लिए आस्ट्रेलिया निवासी आचार्य दावा दोनडुब का "ट्रान्सलेशन स्टडीज़" विषय पर व्याख्यान हुआ।

16. दिनांक 13 मार्च, 2014 को डॉ. बाबूराम त्रिपाठी द्वारा लिखित ग्रन्थ "एक सुबह और मिल जाती" का विमोचन सम्पन्न हुआ।

17. दिनांक 29 मार्च 2014 को क्लासिकल एण्ड माडर्न लैंग्वेज द्वारा पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया, जिसमें माननीय कुलपति जी ने अध्यक्षता की एवं पुरस्कार वितरण किये। समारोह में वाराणसी के विद्वान् भी उपस्थित थे।

मौसमी गुहा बैनर्जी

1. लेख- "इनेक्टिंग द पोस्ट-कोलोनियल : सिनेमेटिक रिप्रेजेंटेशन ऑफ द न्यू वूमेन" प्रो. महेश कुमार अरोड़ा एवं रितु मोहन वैरागी के द्वारा सम्पादित ग्रन्थ "अपर्णा सेनस् परोमितर एक दिन एण्ड 15 पार्क एवेन्यू" में प्रकाशित हुआ। प्रकाशक : युनिस्टार बुक्स लि. चण्डीगढ़, 2013, ISBN 978-93-5113-289-9.

2. लेख "ट्रान्सेंडिंग द प्रोफिट मोटिव : ए कन्सीडरेशन ऑफ एथिक्स एस द क्विंटेसेन्स ऑफ आर्गेनाइजेशनल कल्चर", इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च, रिज्वी कालेज ऑफ आर्ट, साइंस एण्ड कार्मस, भाग-3 (1), जु-दि. 2013, ISSN 2231-6124 में प्रकाशित हुआ।

3. "फिल्मेवल डिपिक्शन एण्ड फेथ फुल डिपार्चस : सत्यजीत-रे'स् एडेप्शन ऑफ रविन्द्रनाथ टैगोरस् टेक्स्ट" विषय पर विस्तृत योजना विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के समक्ष अनुदान के लिए प्रस्तुत की।

4. "गीताञ्जलि : ऐन एक्साल्टेड मेनीफेस्टेशन ऑफ बुद्धिस्ट एस्थेटिक" विषय पर योजना अनुदान हेतु विश्वविद्यालय को प्रस्तुत की।

5. दिनांक 19-20 अक्टूबर, 2013 को जैन विश्वभारती, लाडनूं में आयोजित इन्टरनेशनल कान्फ्रेंस "ग्लोबलाइज़ेशन एण्ड टीचिंग ऑफ इंगलिश" में भाग लिया तथा "रिपोज़िशनिंग इंगलिश एन एटेंशन टूवार्डस कन्सट्रक्टिंग ए प्रो-ग्लोबल ट्रान्स-क्लोनियल कल्चरलकन्शियसनेस" विषय पर लेख प्रस्तुत किया।

6. दिनांक 25 नवम्बर से 21 दिसम्बर, 2013 तक जादवपुर, विश्वविद्यालय, कोलकाता में यू. जी. सी. द्वारा प्रायोजित ओरिएंटेशन कार्यक्रम में भाग लिया।

7. दिनांक 11-12 फरवरी, 2014 को हल्दिया इंस्टीच्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के स्कूल ऑफ मैनेजमेंट एण्ड सोशल साइंस द्वारा आयोजित इन्टरनेशल कान्फ्रेंस "सोशल टेक्नोलॉजीकल एण्ड इकोनॉमिक पारादिग्मज़ ऑफ मैनेजमेंट एण्ड इट्स इम्पेक्ट ऑन ग्लोबल बिज़नेस सिनारिओ" में डॉ. एम. बैनर्जी का पत्र "अपहोल्डिंग इन्टरव्यु नासेस टुवार्ड ए बेटर ह्युमन रिसोर्स प्लानिंग" लेखक के अनुपस्थिति में प्रस्तुत हुआ। दिनांक 17 फरवरी 2014 में इन्होंने उक्त कान्फ्रेंस में सहभागिता का प्रमाणपत्र प्राप्त किया।

8. प्रो. जे गरफिल्ड एवं प्रो. शौन निकोल्स द्वारा दिये गये रिसर्स प्रपोजल के सन्दर्भ में विश्वविद्यालय द्वारा गठित एथिक्स कमेटी की सदस्य के रूप में उक्त प्रपोजल का निरीक्षण किया। ये योजना नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ सिंगापुर, येल यूनिवर्सिटी और केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय द्वारा संयुक्त तत्त्वावधान से किया जा रहा है।

9. एसिस्टेंट प्रोफेसर मौसुमी गुहा बैनर्जी विश्वविद्यालय की वार्षिक रिपोर्ट वर्ष 2012-13 की समिति की सदस्य के रूप में कार्य किया। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय में सम्पन्न व्याख्यानों एवं गोष्ठियों में सक्रिय रूप से भाग लिया।

डॉ. बाबूराम त्रिपाठी

1. दिनांक 13-14 जुलाई, 2013 को शब्द विद्या संकाय के अध्यक्ष ने अखिल भारतीय साहित्य परिषद् की ओर से आयोजित संगोष्ठी "समाज के विकास में आधुनिक हिन्दी उपन्यास का योगदान" में भाग लिया तथा वक्तव्य प्रदान किया।

2. दिनांक 30 जनवरी से 2 फरवरी 2014 तक धर्मशाला से आये छात्र दल को व्याख्यान दिया।

(II) संस्कृत विभाग

(1) डॉ. धर्मदत्त चतुर्वेदी - एसोशिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
(2) प्रो. के.एन. मिश्र - प्रोफेसर (पुनर्नियोजित)
(3) डॉ. हरेन्द्र कुमार भार्गव - अतिथि प्राध्यापक

विभागीय गतिविधियाँ-

1. संस्कृत दिवस समारोह के उपलक्ष्य में 19 सितम्बर 2013 से एक मासिक संस्कृत प्रशिक्षण कार्यक्रम पूर्वमध्यमा प्रथम वर्ष के छात्रों के लिये आयोजित किया गया।

2. 30 अक्टूबर 2013 को "विश्वबन्धुत्वं संस्कृतेन सम्भाव्यते न वा" विषय पर मध्यमा स्तर पर तथा "नारी पृथिव्यां महती प्रतिष्ठा न वा" विषय पर शास्त्री-आचार्य स्तर पर संस्कृत वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई।
3. 31 अक्टूबर 2013 को "आचारः परमो धर्मः" विषय पर मध्यमा स्तरीय तथा "भारतीयसंस्कृतेः वैशिष्ट्यम्" विषय पर शास्त्री-आचार्य स्तरीय संस्कृत तात्कालिक निबन्ध लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई।
4. 29 मार्च 2014 को विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति जी की अध्यक्षता में संस्कृत कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें प्रो. शिवजी उपाध्याय ने मुख्य अतिथि पद विभूषित किया। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ तथा इस विश्वविद्यालय के विद्वान् कवियों ने सुन्दर मधुर कविताओं की प्रस्तुति की।
5. दोनों अधिसत्रों में पूर्वमध्यमा से आचार्य तक 43 कक्षागत विशेष व्याख्यान आयोजित किए गए।

डॉ. धर्मदत्त चतुर्वेदी

शोधनिबन्ध एवं कविता प्रकाशन-

1. "वर्तमानसन्दर्भे बौद्धकर्मवाददृष्ट्या श्रीमद्भागवतानुशीलनम्" शोध निबन्ध अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका "सुसंस्कृतम्", ISSN 2277-7024, सुरुचि कला समिति खोजवाँ, वाराणसी से प्रकाशित।
2. "शान्तिभिक्षुशास्त्रिणो बौद्धकाव्यरचनाधर्मित्वम्" शोध निबन्ध संस्कृत राष्ट्रिय पत्रिका "सङ्गमनी" त्रैमासिकी, ISSN 2277-9817, साहित्य परिषद् दारागंज, इलाहाबाद से प्रकाशित।
3. "नवीनसंस्कृतबौद्धकाव्यानां युगबोधविमर्शः" शोध निबन्ध अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिका "वाकोवाक्यम्", अक्टूबर 2013, ISSN 0975-4555 (pp 76-83) संस्कृत संस्थान कमच्छा, वाराणसी से प्रकाशित।
4. "शङ्करस्तोत्रम्" पद्यरचना गाण्डीवम् टङ्कार 36 शर 1-2 दिसम्बर 2013, सं.सं.वि.वि., वाराणसी से प्रकाशित।
5. "नारदीयपुराण में भक्तितत्त्व का विश्लेषण" शोध निबन्ध "गुरुकुल पत्रिका", गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार से प्रकाशनाधीन।
6. "भारतीयजनतापार्ट्याः नरेन्द्रमोदीप्रधाने सुविजये काश्चित् संस्कृतस्यापेक्षाः" विषयक संस्कृत निबन्ध गाण्डीवम्, सं.सं.वि.वि., वाराणसी से प्रकाशित।
7. "बौद्धमते प्रत्यक्षप्रमाणविमर्शः" शीर्षकीय शोध निबन्ध श्रीशारदाम्नायपीठ द्वारका (गुजरात) से पत्रिका में प्रकाशनाधीन।
8. "बोधिचित्तावधारणाया लोकोपयोगित्वम्" शीर्षकीय शोध निबन्ध संस्कृत साप्ताहिक "गाण्डीवम्" टङ्कार 36 शर 3-4, 5 जनवरी 2014 को प्रकाशित।

सेमिनारों में शोधपत्र प्रस्तुति व सहभागिता-

1. दिनांक 20 जुलाई 2013 को अखिल भारतीय साहित्य परिषद् व धर्मपाल शोधपीठ द्वारा केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ में आयोजित राष्ट्रिय सङ्गोष्ठी में "ऐतिहासिक उपन्यासों का समाज जाग्रति में योगदान" विषय पर आलेख प्रस्तुत।
2. नवम्बर 2013 में अखिल भारतीय कालिदास समारोह उज्जैन (म.प्र.) में आयोजित संगोष्ठी में "कालिदास-साहित्यस्य जनतान्त्रिकमूल्याभिव्यञ्जकत्वम्" विषयक शोध निबन्ध प्रेषित।

3. दिनांक 8 मार्च 2014 को धर्मागम विभाग संस्कृत विद्याधर्मविज्ञान सङ्काय बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय शोध सङ्गोष्ठी में "धर्मकीर्तिमते प्रत्यक्षप्रमाणमीमांसा" शीर्षकीय शोध निबन्ध प्रस्तुत।

व्याख्यान-

1. दिनांक 11 अगस्त 2013 को श्री शारदा संस्कृत संस्थान द्वारा आयोजित संस्कृत संगोष्ठी में व्याख्यान दिया।
2. दिनांक 27 सितम्बर 2013 को वाकोवाक्यम् संस्कृतसंस्थानम् कमच्छा, वाराणसी द्वारा आयोजित संस्कृत विद्वत्सम्मान समारोह के अवसर पर संस्कृत रचना प्रस्तुत की।
3. दिनांक 12 मार्च 2014 को स्व. पं. वासुदेव द्विवेदी जन्मोत्सव समारोह में अध्यक्षीय भाषण दिया।
4. दिनांक 21 फरवरी 2014 को अन्तर्राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, वाराणसी द्वारा आयोजित संस्कृतवाग्वर्धिनी सभा में विशिष्ट अतिथि के रूप में भाषण दिया।

कवि सम्मेलनों में कविता प्रस्तुति-

1. दिनांक 27 अगस्त 2013 को सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा आयोजित दीक्षान्त समारोह के अवसर पर आयोजित संस्कृत कवि सम्मेलन में संस्कृतगीतम् की प्रस्तुति।
2. दिनांक 18 अक्टूबर 2013 को संस्कृत विभाग, कला सङ्काय, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित संस्कृत सङ्गोष्ठी के अन्तर्गत कवि सम्मेलन में "जीवने नास्ति कस्यापि कश्चित् सखा" शीर्षकीय संस्कृत कविता प्रस्तुति।
3. दिनांक 14 फरवरी 2014 को पद्मभूषण स्व. पं. विद्यानिवास मिश्र की पुण्य स्मृति में आयोजित संस्कृत कवि समवाय में "विश्वजनीनं सर्वमनोज्ञं विद्याश्रीन्यासाधिष्ठानम्" शीर्षकीय कविता की प्रस्तुति।
4. दिनांक 29 मार्च 2014 को संस्कृत विभाग, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ द्वारा आयोजित संस्कृत कवि सम्मेलन में संस्कृत कजरी गीत की प्रस्तुति।

शोधयोजना व ग्रन्थ-सम्पादन-प्रकाशन-

1. "पाणिनीय तथा सारस्वत व्याकरण का तुलनात्मक विमर्श" शोध योजना के अन्तर्गत संज्ञा सूत्रों की पारस्परिक समीक्षा की गई।
2. "अवदानकल्पलता का संस्कृत सम्पादन व हिन्दी अनुवाद" शोध योजना के अन्तर्गत 4 अवदानों पर पाठ-समीक्षा की गई।
3. "यज्ञसुधा" नामक पत्रिका (स्मारिका) का सम्पादन व प्रकाशन किया गया।
4. केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान लेह (लद्दाख) से प्रकाश्यमान "प्रमाणवार्तिक टीका का हिन्दी अनुवाद" के संशोधन-सम्पादन का कार्य किया जा रहा है।
5. "सर्वदेवपूजादर्पणः" ग्रन्थ का सम्पादन कर शारदा संस्कृत संस्थान से प्रकाशित कराया।

शोध-निर्देशन-

1. शोधछात्र दावा शेरपा के "स्ववृत्युपेतमध्यमकालङ्कारस्य पुनरुद्धारः समीक्षणं च" विषय का शोध-निर्देशन किया जा रहा है।

अन्य विविध शैक्षणिक कार्य-

1. दिनांक 11 अगस्त 2013 को शारदा भवन अगस्त्यकुण्डा वाराणसी में गणेशोत्सव पर आयोजित संस्कृत वाद-विवाद प्रतियोगिता में निर्णायकत्व का निर्वाह किया।

(III) तिब्बती भाषा एवं साहित्य विभाग

(1) डॉ. टशी छेरिंग (टी) - एसिस्टेंट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
(2) भिक्षु ल्हक्पा छेरिंग - एसिस्टेंट प्रोफेसर

विभागीय गतिविधियाँ-

1. दिनांक 4 अक्टूबर, 2013 को विभागीय छात्रों के लिए श्री संगे तन्दर नागा का "द कन्सेप्ट ऑफ टिबेटन लेटर एण्ड इट्स लैंग्वेज" विषय पर व्याख्यान आयोजित किया।
2. दिनांक 27-28 फ़रवरी, 2014 को प्रख्यात विद्वान श्री नरकिद ङवङ् दोनडुब का "इटीमोलॉजी ऑफ टिबेटन एण्ड सम प्रोमीनेंट फीचरज़ ऑन टिबेटन बर्वल फारमेशन" विषय पर शास्त्री कक्षाओं के लिए व्याख्यान आयोजित किया।

डॉ. टशी छेरिंग (टी)

1. दिनांक 7-9 जनवरी, 2014 को डिपार्टमेंट ऑफ एजुकेशन की ओर से धर्मशाला में आयोजित "टीचर्स प्रोफेशनल डेब्लपमेंट" विषय पर आयोजित अखिल भारतीय सेमिनार में भाग लिया।
2. दिनांक 1-4 जुलाई, 2013 को केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह लदाख में आयोजित सेमिनार "एजुकेशन सिस्टम इन इंडिया एनशिएंट, मिडवल एण्ड प्रेज़ेन्ट फोर्म एण्ड फ्युचर पोसीवलीटीज़" में शोधपत्र प्रस्तुत किया।
3. "एजुकेशन सिस्टम बिफोर 1959 इन टिबेट" शीर्षक निबन्ध लदाख प्रभा, अंक 18, केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह से प्रकाशित हुआ।
4. शोधछात्र श्री देछेन दोर्जे का निर्देशन कार्य।
5. शैक्षणिक विनिमय के अन्तर्गत सेन्ट्रल इंस्टीच्यूट ऑफ हायर टिबेटन स्टडीज़, आस्ट्रिया से आयी मिस. जस्मीन को दिसम्बर 2013 एवं जनवरी 2014 को सप्ताह में दो दिन तिब्बती भाषा का अध्यापन कार्य किया।

(ग) आधुनिक विद्या संकाय

डॉ. बी. बी. चक्रवर्ती - संकायाध्यक्ष

(I) समाजशास्त्र विभाग

(1) डॉ. जम्पा समतेन - एसोशिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष (तिब्बती इतिहास)
(2) डॉ. बी.बी. चक्रवर्ती - एसोशिएट प्रोफेसर (अर्थशास्त्र)
(3) डॉ. देवराज सिंह - एसोशिएट प्रोफेसर (अर्थशास्त्र) एवं कुलसचिव
(4) डॉ. उमेश चन्द्र सिंह - एसोशिएट प्रोफेसर (एशिया का इतिहास)
(5) डॉ. कौशलेश सिंह - एसोशिएट प्रोफेसर (एशिया का इतिहास)
(6) डॉ. एम.पी.एस. चन्देल - एसोशिएट प्रोफेसर (राजनीतिशास्त्र)

(7) डॉ. अमित मिश्र	-	एसिस्टेंट प्रोफेसर (राजनीतिशास्त्र)
(8) श्री उग्येन	-	अतिथि प्राध्यापक (तिब्बती इतिहास)
(9) श्री गंगने येशे	-	अतिथि प्राध्यापक (तिब्बती इतिहास)
(10) डॉ. जे.बी. सिंह	-	अतिथि प्राध्यापक (अर्थशास्त्र)

शैक्षणिक गतिविधियाँ-

डॉ. अमित मिश्र

1. दिनांक 20-22 सितम्बर, 2013 को मेडीटेरियन सेन्टर फॉर सोशल एण्ड एजुकेशनल रिसर्च तथा ग्रेगोरियाना यूनिवर्सिटी, रोम द्वारा रोम में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंस "ह्यूमन एण्ड सोसल साईसेस" में भाग लिया तथा "पेरादिग्म शिफ्ट इन यू.ए. पीस-कीपिंग इन द पोस्ट कोल्ड बार इरा : सम रिफ्लेक्शनज़" विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किया।
2. दिनांक 10-12 दिसम्बर, 2013 को जे.एन.यू. में आयोजित इन्टरनेशनल कान्फ्रेंस ऑन "एनुअल इन्टरनेशनल स्टडीज़ कोन्वेशन 2013" में भाग लिया तथा "ग्रोथ ऑफ डेमोक्रोसी इन लेटिन अमेरिका एलांग सोशलिस्ट लाइनस : ए कम्परेटिव पर्सपेक्टिव विद इंडिया" विषय पर लेख प्रस्तुत किया।
3. दिनांक 18-20 जून, 2013 को रोम, इटली में सपीन्जा यूनिवर्सिटी, रोम द्वारा आयोजित इन्टरनेशनल कान्फ्रेंस में भाग लिया तथा "ऐण्ड ऑफ कोल्ड वार एण्ड न्यू चैलेंजेस टू डेमोक्रेसी" विषय पर पत्र प्रस्तुत किया।

(घ) शिल्प-विद्या संकाय

प्रो. लोब्संग तेन्जिन - संकायाध्यक्ष

(I) तिब्बती काष्ठकला विभाग

(II) तिब्बती चित्रकला विभाग

(1) श्री बुचुंग	-	अतिथि प्राध्यापक (काष्ठकला)
(2) श्री जिग्मे	-	अतिथि प्राध्यापक (चित्रकला)
(3) सुश्री सुचिता शर्मा	-	अतिथि प्राध्यापिका (इतिहास एवं सौन्दर्यशास्त्र)
(4) श्री देछेन दोर्जे	-	अतिथि प्राध्यापक (भोट साहित्य)
(5) श्री तेनपा छेरिंग	-	अतिथि प्राध्यापक (अंग्रेजी)

विभागीय गतिविधियाँ-

नियमित सिद्धान्त एवं प्रयोग के कक्षाओं के अतिरिक्त इस विभाग द्वारा वाह्य छात्रों को भी समय-समय पर तिब्बती थंका पेंटिंग और उडक्राफ्ट सिखाया जाता है।

ज्ञानप्रवाह (संस्कृति अध्ययन एवं शोध केन्द्र), सामने घाट, वाराणसी, के अनुरोध पर इस विभाग द्वारा 15 से 21 नवम्बर 2013 तक थंका पेंटिंग पर कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के फाइन आर्ट्स विभाग के स्नातकोत्तर छात्र-छात्राओं, शोध-छात्र तथा प्रोफेसरों ने भाग

लिया। प्रतिभागियों को भगवान् बुद्ध के थंका चित्र-लेखन का प्रशिक्षण दिया गया और सत्र के समापन पर उन्हें अपने-अपने चित्र-लेखन के आधार पर प्रमाण-पत्र प्रदान किया गया। इस कार्यशाला को आयोजक तथा प्रतिभागियों ने बड़ी सराहना की एवं भविष्य में भी इस तरह की कार्यशाला का आयोजन करने के लिए अनुरोध किया।

(ङ) सोवा रिग्-पा एवं भोट ज्योतिष संकाय

प्रो. लोब्संग तेन्जिन	-	संकायाध्यक्ष

(I) सोवा रिग्-पा विभाग

(1) डॉ. दोर्जे दमडुल	-	एसोशिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
(2) प्रो. लोब्संग तेन्जिन	-	प्रोफेसर
(3) डॉ. पेमा दोर्जे	-	अतिथि प्राध्यापक
(4) डॉ. ए.के. राय	-	अतिथि प्राध्यापक
(5) डॉ. दावा छेरिंग	-	अतिथि प्राध्यापक
(6) डॉ. छिमी डोलकर	-	अतिथि प्राध्यापक
(7) डॉ. पेन्पा छेरिंग	-	अतिथि प्राध्यापक
(8) डॉ. तेनजिन थुपतेन	-	अतिथि प्राध्यापक
(9) भिक्षु दावा शेरपा	-	अतिथि प्राध्यापक

शैक्षणिक पृष्ठभूमि

विश्वविद्यालय की स्थापना के चार उद्देश्यों में से प्रथम भोट देश के सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण तथा संवर्धन के अन्तर्गत भाषा, साहित्य, धर्म-दर्शन और कला का संवर्धन एवं संरक्षण भी है । तदनुसार तिब्बत की प्राचीन स्वास्थ्य रक्षण की परम्परा के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए सन् 1993 ई. में विश्वविद्यालय में सोवा रिग्-पा एवं भोट ज्योतिष संकाय की स्थापना की गई थी । सोवा रिग्-पा विभाग की स्थापना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं-

(क) तिब्बती चिकित्सा पद्धति का संरक्षण, संवर्धन तथा जनसामान्य एवं बृहत् समाज को स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करना ।

(ख) निर्वासित तिब्बती समाज के युवाओं, हिमालयी निवासियों, इच्छुक विदेशी अध्येताओं एवं विद्यार्थियों को इसे अध्ययन कराना, समझाना तथा चिकित्सीय ज्ञान को प्रसारित करना ।

विभागीय इकाई गतिविधियाँ-

सम्प्रति इस विभाग के अन्तर्गत सात इकाइयाँ हैं । यथा शोध, बहिरंग निदान, औषध निर्माणशाला, निदान प्रयोगशाला, पुस्तकालय, औषध उद्यान और ई.डी.एम.जी. योजना ।

(1) शोध इकाई

(क) पूर्ण योजनाएं –

1. उच्च तनाव के उपचार में सोवा रिग्-पा के दवाओं का प्रभाव ।
2. पायलेट प्रोजेक्ट- नाड़ी स्वभाव एवं रक्तचाप के सम्बन्ध का अध्ययन ।
3. पायलेट प्रोजेक्ट- मृत्यु एवं आत्मा का अध्ययन (विभिन्न संस्कृतियों की दृष्टि से) ।

(ख) कार्याधीन योजनाएं-

1. इमोरी विश्वविद्यालय, अमेरिका और विश्वविद्यालय के सोवा रिग्-पा विभाग के मध्य दानादान कार्यक्रम के अन्तर्गत भोट दवाओं के चूर्ण का विभिन्न रोगों जैसे हेपाटाइटिस एवं कैंसर में कितना प्रभावी है, इस पर शोध-योजना चल रही है।
2. शोध प्रविधि से सम्बद्ध ग्रन्थ का सम्पादन किया जा रहा है।

(ग) भविष्य की योजनाएं-

1. उच्च तनाव का उपचार (तुलनात्मक अध्ययन)।
2. मृत्यु एवं आत्मा।

(2) बहिरंग निदान-

युथोक निदान केन्द्र के नाम से संचालित इस निदान केन्द्र का मुख्य उद्देश्य सोवा रिग्-पा में अध्ययनरत छात्रों, एम.डी./एम. एस. के छात्रों तथा इन्टर्नशिप करने वाले छात्रों के लिए अभ्यास की सुविधा प्रदान करना है। अनुभवी डॉक्टरों के निर्देशन में छात्रों को रोगियों की परीक्षा एवं दवाओं के वितरण का कार्य सिखाया जाता है। इस वर्ष विश्वविद्यालय के छात्रों, अध्यापकों, विश्वविद्यालय के अतिथियों और बाहरी रोगियों सहित कुल 8000 से अधिक रोगियों का निदान किया गया।

(3) औषध-उद्यान

विभाग द्वारा विश्वविद्यालय के परिसर में कालचक्र औषध-उद्यान का स्थापना की गई है। इसकी स्थापना का मुख्य उद्देश्य औषधीय पौधों का संरक्षण तथा विद्यार्थियों को जड़ी-बूटियों का व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करना है। सम्प्रति उद्यान में 107 से अधिक औषधीय पौधे हैं। इन्हें औषध निर्माणशाला में दवाओं के निर्माण के लिए उपलब्ध कराया जाता है।

(4) औषध निर्माणशाला

इस औषध निर्माणशाला में एक फार्माकोलोजिस्ट सहित आठ दैनिक वेतनभोगी कर्मचारी कार्यरत हैं। औषधियों के निर्माण के लिए जड़ी-बूटियाँ मुख्यतः स्थानीय बाज़ार और हिमालयी क्षेत्रों से मंगायी जाती हैं।

(क) वार्षिक स्टॉक का विवरण-

1. हिमालयी क्षेत्रों से खरीदे गए जड़ी-बूटियाँ- (115.680 किलोग्राम)
2. स्थानीय बाज़ार से खरीदे गए सामग्री- (1186.260 किलोग्राम)
3. संगृहीत एवं दान स्वरूप प्राप्त सामग्री- (475.588 किलोग्राम)
4. इ.ड़ी.एम.जी. योजना तवांग से प्राप्त सामग्री- (7.893 किलोग्राम)

(ख) वार्षिक उपभोग का विवरण-

1.गोलियाँ 623.884 कि.ग्र., 2. कैपसूल 1.250 कि.ग्र., 3. चूर्ण 29.990 कि. ग्र., 4. सीरप 495.179 कि.ग्र., 5. मलहम 0. 750 कि. ग्र., 6. टानिक 270.020 कि. ग्र., 7. धूप 0.000 कि.ग्र., 8. प्रायोगिक - अनुसन्धान 5.030 कि.ग्र., 9. शोधन 37.800 कि.ग्र. तथा 10. प्रकीर्णक 0.025 कि. ग्र.।

(ग) वार्षिक उत्पादन-

1. गोलियाँ 80%
2. सीरप 10%
3. चूर्ण 6%
4. टानिक 3%
5. मलहम 1%

(5) निदान प्रयोगशाला

इस निदान प्रयोगशाला का मुख्य उद्देश्य सोवा रिग्-पा के विद्यार्थियों को आधुनिक तकनीक के माध्यम से रोगों की पहचान एवं विश्लेषण कराना है। इस आलोच्य वर्ष में कुल 452 रोगियों का परीक्षण किया गया, जिसमें हैपाटाइटिस, ज्वांडिस, ब्लड ग्रुप, मूत्र-मल परीक्षण, टी. बी., डायबिटीज़ आदि का परिक्षण किया गया।

(6) विभागीय पुस्तकालय

इस विभाग में वागभट्ट पुस्तकालय नाम से एक विभागीय पुस्तकालय की भी स्थापना की गई है, जिसका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों, शोधार्थियों एवं अध्यापकों को सोवा रिग्-पा से सम्बन्धित अध्ययन-सामग्री उपलब्ध कराना है। पुस्तकालय में आज तक सोवा रिग्-पा से सम्बन्धित तिब्बती, हिन्दी, अंग्रेज़ी एवं अन्य भाषाओं में निबद्ध ग्रन्थों का अच्छा संकलन किया गया है। इसकी व्यवस्था के लिए एक अंशकालिक कर्मचारी की नियुक्ति की गई है, जो शान्तरक्षित ग्रन्थालय के निर्देशानुसार कार्य करता है।

शैक्षिक गतिविधियाँ एवं अध्यापन

1. दिनांक 1-30 जून, 2014 को सेरा-जे मोनास्ट्री में डॉ. पेन्पा छेरिंग के नेतृत्व में बी.एस.एम.एस. के छात्रों ने वहाँ आयोजित अक्युपेंचर कोर्स में भाग लिया।
2. दिनांक 1.8.2013 से 1.9.2013 तक बी.एस.एम.एस. के छात्रों ने डॉ. लोब्संग तेनज़िन के नेतृत्व में औषधीय पौधों की पहचान के लिए तवांग, अरुणाचल प्रदेश की शैक्षणिक यात्रा की।
3. अतिथि प्रोफेसर डॉ. पेमा दोर्जे का सोवा रिग्-पा के छात्रों के लिए विभिन्न विषयों पर व्याख्यान आयोजित किए गए।
4. अतिथि प्रोफेसर आर.पी. पाण्डेय का सोवा रिग्-पा के छात्रों के लिए सप्ताह में तीन दिनों का "इण्डियन आयुर्वेद फिलॉसफी एण्ड मेडीकल ट्रीटमेंट" विषय पर व्याख्यान आयोजित किए गए।

वर्तमान योजनाएँ

इस योजना के अन्तर्गत तवांग, अरुणाचल प्रदेश में एक औषधीय उद्यान की स्थापना की गई है। इसका मुख्य उद्देश्य हिमालयी क्षेत्रों में विलुप्त हो रहे औषधीय पौधों का संरक्षण तथा उत्पादन करना है। समुद्र तल से लगभग 16000 फुट की ऊँचाई पर 5.47 एकड़ भूमि में औषधीय उद्यान विकसित किया गया है। इसके लिए भूमि स्थानीय लोगों से लीज़ के आधार पर ली गई है। वहाँ सम्पन्न नवीन विकासात्मक कार्य निम्नलिखित हैं –

नया विकास-

1. इस योजना स्थल से उत्पादित औषधीय पौधों को दवाओं के निर्माण के लिए फार्मेसी विभाग में आपूर्ति की जाती है। सोवा रिग्-पा विभाग को इस वर्ष 7 किलोग्राम विभिन्न औषधियाँ आपूर्ति की गई।

2. इस योजना में विभिन्न 27 दुर्लभ जड़ी-बूटियों को इ.डी.एम.जी. आफिस ग्रीन हाउस में सावधानी पूर्वक संरक्षित किया गया है।
3. ग्रीन हाउस का निर्माण पूर्ण कर दिया गया है, अब इसमें दुर्लभ औषधीय पौधों को रोपने का कार्य चल रहा है।

कान्फ्रेंस, सेमिनार एवं कार्यशाला का आयोजन

1. दिनांक 8-11 अक्टूबर, 2013 को फ्रांस से आयी सुश्री लीला मनोमी का विभाग के छात्रों के ज्ञानवर्धन के लिए "इन्टेलेक्च्युअल प्रोपर्टी लॉ" विषय पर व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया।
2. सोवा रिग्-पा के संकायाध्यक्ष और डॉ. लेफ्ली जेफ के निर्देशन में सोवा रिग्-पा के विद्यार्थियों एवं विदेशी छात्रों के मध्य "सामान्य स्वास्थ्य जागरूकता तथा विशेष उपचार" विषय पर दो दिवसीय पैनल डिस्कशन का आयोजन किया गया।
3. दिनांक 27 मार्च, 2013 को विभाग के छात्रों के ज्ञानवर्धन के लिए "इन्टेलेक्च्युअल प्रोपर्टी लॉ" विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया।

(II) भोट ज्योतिष विभाग

(1) डॉ. जम्पा छोफेल	-	एसिस्टेंट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
(2) डॉ. टशी छेरिंग (जे)	-	एसोशिएट प्रोफेसर
(3) श्री भारत भूषण चौबे	-	अतिथि प्राध्यापक

शैक्षणिक गतिविधियाँ-

(क) संगोष्ठी\कान्फ्रेंस\वर्कशॉप में सहभागिता

1. श्री टशी छेरिंग ने दिनांक 2 जून 2013 को टी.एम.ए.आइ., धर्मशाला द्वारा आयोजित "माइंड, बॉडी एण्ड लाइफ" गोष्ठी में भाग लिया तथा इस विषय पर शोधपत्र प्रस्तुत किया।
2. क्षेत्रीय साइंस सेन्टर, लखनऊ के निर्देश पर अक्टूबर प्रथम सप्ताह में तथा 25-26 नवम्बर, 2013 को "एस्ट्रोनोमिकल अवेयरनेस डे" का आयोजन किया गया।
3. दिनांक 4-5 अक्टूबर, 2013 को विभाग ने "द स्ट्रक्चर ऑफ टाइम एरोंड अस" तथा "द इवोल्यूशन ऑफ द युनिवर्स" विषय पर कार्यशाला आयोजित किया।
4. दिनांक 24 और 26 नवम्बर 2013 में रात्रिकालीन आकाश निरीक्षण का कार्यक्रम सम्पन्न किया।
5. दिनांक 22-23 नवम्बर, 2013 को श्री जम्पा छोफेल ने संस्कृत विश्वविद्यालय में आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार में भाग लिया तथा शोधपत्र प्रस्तुत किया।
6. दिनांक 20-25 जनवरी, 2014 को सम्भोट भवन में "सूर्यसिद्धान्त एण्ड इट्स कन्ट्राडिक्टरी फॉरमूला" विषय पर छह दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया जिसमें पं. विनय झा को निमन्त्रित किया गया।
7. दिनांक 12-14 फरवरी, 2014 को विश्वविद्यालय के सम्भोट भवन में "रिलेटिविटि मैकेनिज़्म एण्ड स्ट्रक्चर ऑफ मैटर" विषय पर त्रि-दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें डॉ. एम. एम. वर्मा को निमन्त्रित किया गया।

8. दिनांक 11-13 मार्च, 2014 को विश्वविद्यालय के सम्भोट भवन में "बुद्ध इरा" विषय पर त्रि-दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें गेशे रिनछेन ङोस् डुब को निमन्त्रित किया गया।

(ख) निबन्ध प्रकाशन का कार्य

1. डॉ. टशी छेरिंग (जे) ने "माइण्ड-बाडी एण्ड लाइफ" विषय पर एक निबन्ध लिखा, जो जून 2013 में टी.एम.ए.आई., धर्मशाला में प्रकाशित हुआ।
2. श्री जम्पा छोफेल का "कम्पेडियम ऑफ टिबेटन एस्ट्रो-साईंस" विषय पर लेख सन् 2013 को ISBN No. 978-81-89165-29-1 में प्रकाशित हुआ।

3. शोध विभाग

प्राचीन लुप्तप्राय ग्रन्थों का पुनरुद्धार, सम्पादन तथा उनका संस्कृत, तिब्बती एवं हिन्दी भाषा में अनुवाद एवं प्रकाशन, विश्वविद्यालय का प्रमुख शोध एवं प्रकाशन कार्य है। पुनरुद्धार, अनुवाद, सम्पादन, संकलन एवं प्रकाशन, विश्वविद्यालय की प्रमुख शोध गतिविधियाँ हैं, जो निम्नलिखित विभागों द्वारा संचालित हैं–

1. पुनरुद्धार विभाग

2. अनुवाद विभाग

3. दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध विभाग

4. कोश विभाग

डॉ. भीमराव अम्बेडकर चेयर

रिसर्च प्रोफेसर - प्रो. प्रदीप पी. गोखले

शैक्षिक गतिविधियाँ-

(क) कान्फ्रेंस एवं सेमिनारों में सहभागिता

1. दिनांक 3-5 अक्टूबर, 2013 को विश्वविद्यालय एवं इण्डियन काउंसिल ऑफ फिलॉसोफिकल रिसर्च, नयी दिल्ली के द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित राष्ट्रीय सेमीनार "बुद्धिज़्म, न्यू-बुद्धिज़्म एण्ड़ द क्वेश्चन ऑफ कास्ट" का आयोजन का कार्य किया तथा गोष्ठी में शोध-पत्र प्रस्तुत किया।
2. दिनांक 16-17 दिसम्बर, 2013 को आई.सी.पी.आर. सेन्टर फॉर बुद्धिस्ट स्टडीज़, जादवपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी "द डेवलप्मेंट ऑफ बुद्धिस्ट इपिस्टमोलॉजी सिन्स दिङनाग" में भाग लिया"।
3. दिनांक 3-5 जनवरी, 2014 को आई.सी.पी.आर. और फुले अम्बेडकर चेयर, मुम्बई विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित इन्टरडिसिप्लनेरी राष्ट्रीय संगोष्ठी "हू इज़ ए वर्थी बीइंग" में भाग लिया।
4. दिनांक 13-15 जनवरी, 2014 को श्री रविशंकरशुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी "द फिलॉसफी ऑफ नागार्जुन" में भाग लिया।
5. दिनांक 19-21 फरवरी, 2014 को डिपार्टमेंट ऑफ कल्चरल स्टडीज़, इएफएल युनिवर्सिटी, हैदराबाद द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी "अन्डरस्टेंडिंग इमेनसिपेशन टूडे : थ्यूरी, फिलॉसफी, पोलिटिक्स" में भाग लिया।
6. दिनांक 8-9 मार्च, 2014 को राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान द्वारा अनुदानित, महापण्डित राहुल सांकृत्यायन प्रतिष्ठान, नयी दिल्ली द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी "संस्कृत वाङ्मय की लोकधर्मी परम्पराएँ- संस्कृत साहित्य के अभिवर्धन में राहुल जी का योगदान के विशेष सन्दर्भ में" में भाग लिया तथा शोधपत्र प्रस्तुत किया।

7. दिनांक 22-23 मार्च, 2014 को आई.सी.पी.आर सेन्टर लखनऊ द्वारा आयोजित सेमीनार "इन्टर फेस विटबीन इन्डिविजुअल एक्टविस्ट एण्ड एकेडमीशियनज़ वर्किंग ऑन दलित इशूज़" में भाग लिया।
8. दिनांक 23-24 मार्च, 2014 को सेन्टर फार एडवांस्ड स्टडीज़ इन फिलॉसफी, इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सेमीनार "प्रॉब्लम ऑफ पर्सनल आइडेंटिटी" में भाग लिया।

(ख) प्रदत्त विशिष्ट व्याख्यान-

1. दिनांक 28 दिसम्बर, 2013 को इंडियन फिलोसॉफिकल कांग्रेस के मदुरै सेशन में बुद्धजयन्ती व्याख्यान प्रदान किया।
2. दिनांक 11 मार्च, 2014 को एस. पी. कालेज, पूने में डिपार्टमेंट ऑफ फिलॉसफी, पूने विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित ऋषभदासजी रन्का मेमोरियल लेक्चर के अन्तर्गत "लिंग्विस्टिक फिलॉसफी इन जैनीज़्म" विषय पर व्याख्यान दिया।

(ग) प्रकाशन (प्रकाशित लेख)

1. "आचार्य वसुवन्धुज़ थ्योरी ऑफ थ्री नेचरज़ : ए फ्रेश स्टडी" जर्नल ऑफ बुदिस्ट स्टडीज़, भाग 10, 2013.
2. "एन एक्सक्लुसिव वाल्यूम ऑन एक्सक्लुशन", (समीक्षा लेख), फिलॉसफी इस्ट एण्ड वेस्ट, वाल्यूम -63, न. 4, अक्टूबर 2013.

1. पुनरुद्धार विभाग

उद्देश्यः

तिब्बती भाषा में उपलब्ध प्राचीन भारतीय बौद्ध वाङ्मय को पुनः संस्कृत में उपलब्ध कराने हेतु इस विभाग की स्थापना हुई है। यह शोध विभाग का एक स्वतन्त्र विभाग है। इसका उद्देश्य न केवल शोध हेतु ग्रन्थों का पुनरुद्धार करना है, अपितु लुप्त प्राचीन भारतीय बौद्ध परम्परा को पुनर्जीवित करना भी है। विश्व में यह एकमात्र ऐसा विश्वविद्यालय है, जहाँ पर इस तरह का कार्य किया जा रहा है। इसमें प्राथमिकता के आधार पर आचार्य नागार्जुन, आर्यदेव, शान्तरक्षित, कमलशील एवं आचार्य अतीश के ग्रन्थों पर कार्य हो रहा है।

संस्कृत भाषा में उपलब्ध भारतीय बौद्ध वाङ्मय के तिब्बती भाषा में अनुवाद की 7वीं शताब्दी की परम्परा का अनुसरण करते हुए, इस विभाग के विद्वान् आज भी संस्कृत भाषा के विद्वानों के साथ तिब्बती ग्रन्थों का संस्कृत में पुनरुद्धार कर रहे हैं। प्राचीन समय में तिब्बती अनुवादकों के लिए बौद्ध दर्शन के भारतीय विद्वानों के साथ मिलकर कार्य करना आवश्यक था। इस परम्परानुसार विभाग के तिब्बती विद्वान्, बौद्ध दर्शन के भारतीय विद्वानों के साथ कार्य कर रहे हैं। विभाग के लिए यह गर्व का विषय है कि यहाँ राष्ट्रपति एवं पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित बौद्धदर्शन के ख्याति-प्राप्त विद्वान् प्रो. रामशंकर त्रिपाठी जी तिब्बती विद्वानों के साथ कार्यरत हैं।

अब तक इस विभाग ने बौद्ध धर्म दर्शन के अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का पुनरुद्धार किया है। विभाग द्वारा प्रकाशित अनेक ग्रन्थ उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी द्वारा पुरस्कृत भी हो चुके हैं।

कार्य प्रकृति— लुप्त बौद्ध संस्कृत ग्रन्थों का तिब्बती भाषा से संस्कृत में पुनरुद्धार, शोध, अन्य बौद्ध ग्रन्थों का अनुवाद, सम्पादन, प्रकाशनार्थ तैयार करना, अन्य शैक्षणिक कार्य तथा विजिटिंग शोध विद्वानों का सहयोग करना।

विभाग में कार्यरत सदस्य एवं पदनाम-

1. भिक्षु ङलछेन नमडोल - एसोशिएट प्रोफेसर
2. डॉ. पेन्पा दोर्जे - सहायक प्रोफेसर (प्रभारी)
3. डॉ. लोब्संग दोर्जे - शोध सहायक
4. भिक्षु ङवङ् ग्यलछन नेगी - शोध सहायक

वर्तमान सत्र में विभाग की गतिविधियाँ निम्नवत् हैं-

(1) मुख्य योजनागत कार्य-

(क) वर्ष 2013-14 में पूर्ण योजनाएं तथा प्रकाशित ग्रन्थ

विमलकीर्तिनिर्देशसूत्र- विभाग के समस्त सदस्य तथा अन्य विभागों के सदस्यों के सहयोग से इस ग्रन्थ का संस्करण सम्पादन किया जा रहा है। इसका सम्पादन पूर्ण कर दिया गया है तथा शोध पत्रिका धीः में क्रमशः प्रकाशित किया जा रहा है। अब तक तीन अध्याय प्रकाशित किए जा चुके हैं।

(ख) कार्याधीन प्रमुख योजनाएं

1. **रत्नकरण्डोद्घाते मध्यमकनाम उपदेश-** मध्यमा प्रतिपत् पर आचार्य दीपंकर द्वारा रचित इस ग्रन्थ के हिन्दी अनुवाद का संशोधन पूर्ण कर लिया गया है तथा भूमिका हेतु सामग्री संकलित की जा रही है।
2. **महाव्युत्पत्ति-** 9वीं शताब्दी में भारतीय आचार्य एवं भोट अनुवादकों द्वारा प्रयुक्त शब्दावलियों के इस संकलन का सम्पादन किया जा रहा है। सम्प्रति दूसरे भोट संस्करणों से पाठ मिलान किया जा रहा है।
3. **सूत्रमेलापक-** आचार्य नागार्जुन रचित इस ग्रन्थ के पुनरुद्धार के प्रथम प्रारूप की समीक्षा तथा हिन्दी अनुवाद किया जा रहा है तथा साथ ही भूमिका लेखन भी किया जा रहा है।
4. **बोधिपथप्रदीपपंजिका-** इस ग्रन्थ का प्रो. रामशंकर त्रिपाठी जी के साथ पुनरुद्धार एवं हिन्दी अनुवाद का अन्तिम संशोधन किया जा रहा है।
5. **युक्तिषष्टिका-** चन्द्रकीर्ति की व्याख्या सहित, इस ग्रन्थ के पुनरुद्धार का दूसरी बार संशोधन किया जा रहा है। सम्प्रति भूमिका लेखन पर कार्य किया जा रहा है।
6. **मध्यमकरत्नप्रदीप-** आचार्य भावविवेक द्वारा रचित इस ग्रन्थ का भोट संस्करणों से समालोचनात्मक संस्करण तैयार किया जा रहा है तथा प्रो. गोखले के साथ हिन्दी अनुवाद का कार्य कार्याधीन है।
7. **प्रतीत्यसमुत्पादस्तुतिटीका-** चङ्क्या रोलपै दोर्जे द्वारा रचित इस ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद किया जा रहा है।
8. **धर्मधातुस्तव-** इस ग्रन्थ के संस्कृत पुनरुद्धार का अन्तिम संशोधन किया जा रहा है, भोट पाठ का सम्पादन सम्पन्न किया जा चुका है तथा भूमिका लेखन जारी है।
9. **महायानपथक्रम-** सुभगवज्र विरचित इस ग्रन्थ के भोट पाठ का संस्करण तथा हिन्दी अनुवाद जारी है।
10. **विनय पारिभाषिक शब्दकोश-** कोश विभाग के साथ विनय से सम्बन्धित शब्दों का संस्कृत और भोट शब्दों के पारिभाषिक शब्दकोश के संकलन-सम्पादन का कार्य किया जा रहा है।

11. **संक्षिप्तनानादृष्टिविभाग-** आचार्य श्रीमित्र द्वारा रचित इस ग्रन्थ का प्रो. गोखले के साथ संस्कृत पुनरुद्धार का प्रथम प्रारूप सम्पन्न किया गया तथा हिन्दी और अंग्रेज़ी अनुवाद किया जा रहा है।
12. **अबोधबोधकनाम प्रकरण-** आचार्य नागार्जुन द्वारा रचित इस ग्रन्थ का प्रो. गोखले के साथ संस्कृत पुनरुद्धार का प्रथम प्रारूप सम्पन्न किया गया तथा हिन्दी और अंग्रेज़ी अनुवाद किया जा रहा है।
13. **प्रहाणपूरकशतवन्दना, कारण्डव्यूहमहायानसूत्र, प्रतीत्यसमुत्पादसूत्र एवं दशकुशल-** का संस्कृत पुनरुद्धार, हिन्दी अनुवाद तथा सम्पादन का कार्य किया जा रहा है।

(2) सेमीनार\ कार्यशाला \व्याख्यान तथा पाण्डुलिपि सर्वेक्षण-

1. डॉ. लोसंग दोर्जे ने दिनांक 7-9 अगस्त, 2013 को कालेज ऑफ हायर टिबेटन स्टडीज़, सारा धर्मशाला द्वारा आयोजित सेमिनार “वेज़ टू इम्प्रूब द ट्रान्सलेशन वर्क इन एक्ज़ाइल सोसायटी” में भाग लिया तथा “ए शार्ट एनालसिस ऑफ ट्रान्सलेशन ऑफ केनोनिकल टेक्टस फ्रॉम संस्कृत, पालि एण्ड चायनीज़ इनटू टिबेटन एण्ड एनाल्स ऑफ टिबेटन ट्रान्सलेटर टिल 21सेन्चुरी” विषयक निबन्ध प्रस्तुत किया।
2. डॉ. पेन्पा दोर्जे तथा डॉ. लोसंग दोर्जे ने अप्रैल में और पुनः ङवङ् ग्यलछन नेगी के साथ 20-30 नवम्बर 2013 में पटना म्युजियम में राहुल सांकृत्यायन द्वारा संकलित भोट ग्रन्थों का सर्वेक्षण किया तथा 600 से अधिक ग्रन्थों की सूची तैयार की।
3. डॉ पेन्पा दोर्जे एवं ङवङ ग्यलछन नेगी ने दिनांक 1 फरवरी, 2013 से 30 जनवरी, 2014 तक डिपार्टमेंट ऑफ रिलिजन एण्ड कल्चर, सीटीए, धर्मशाला द्वारा वरिष्ठ भिक्षु एवं भिक्षुणियों के लिए आयोजित हिन्दी कार्यशाला में अध्यापन का कार्य किया।
4. भिक्षु ज़लछेन नमडोल ने धर्मशाला में विभिन्न विहारों के भिक्षु एवं भिक्षुणियों को “लब छेन गे छ़ोकसोक चुल और रिनपोछे सुम गी तम गी डेलपा” तथा “अहिंसा” विषय पर दो व्याख्यान दिया।
5. विभाग के समस्त सदस्यों ने दिनांक 10-12 दिसम्बर, 2013 को ज्ञानप्रवाह और विश्वविद्यालय के संयुक्त आयोजकत्व में आयोजित राष्ट्रीय सेमीनार “बुद्धिज़्म : आर्ट एण्ड फिलॉसफी” में भाग लिया। डॉ. पेन्पा दोर्जे ने इसमें “द कन्सेप्ट ऑफ भवचक्र एकॉर्डिंग टू बुद्धिस्ट प्रोस्पेक्ट” विषयक निबन्ध प्रस्तुत किया।
6. डॉ. लोसंग दोर्जे ने धर्मशाला में विभिन्न विहारों के भिक्षु एवं भिक्षुणियों को “धर्मचक्र प्रवर्तनसूत्र और बुद्ध का जीवन” तथा “द मिरेकल्स ऑफ द बुद्ध एण्ड थ्री बुद्धिस्ट काउंसिल” विषय पर व्याख्यान दिया।
7. दिनांक 12-16 मार्च, 2014 को रिलिजियस एफेयर्स, सीटीए, धर्मशाला द्वारा विश्वविद्यालय में आयोजित “वर्कशॉप ऑन रिसर्च मैथडोलॉजी” में भि. ज़लछेन नमडोल ने “मैथड ऑफ रिसर्च ऑन गुह्यसमाजतन्त्र”, डॉ. पेन्पा दोर्जे ने “मैथड ऑफ एडीटिंग” तथा “टैक्स्चुएल रिसर्च” और डॉ. लोसंग दोर्जे ने “मैथड ऑफ टरेसिंग द सोर्स ऑफ रेफ्रेंस” विषय पर व्याख्यान दिये।
8. दिनांक 13-15 जनवरी, 2014 को रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर में आयोजित राष्ट्रीय सेमीनार “फिलॉसफी ऑफ नागार्जुन” में डॉ. पेन्पा दोर्जे ने भाग लिया तथा “नागार्जुनाज़ कन्सेप्ट ऑफ डिपेंडेंट ओरिजिनेशन विद स्पेशल रेफ्रेंस टू प्रतीत्यसमुत्पादादिविभंगनिर्देशसूत्र” नामक निबन्ध प्रस्तुत किया।

(3) अन्य शैक्षणिक गतिविधियाँ-

1. डॉ. पेन्पा दोर्जे ने मई 2013 से जुलाई 2013 तक इन्टरनेशनल इंस्टीच्यूट ऑफ हायर टिबेटन स्टडीज़, आस्ट्रिया में बौद्धदर्शन एवं तिब्बती भाषा का अध्यापन कार्य किया।
2. भिक्षु ज्ञलछेन नमडोल ने धीः 54वें अंक के लिए "तन्त्र का आभिप्रायिक अर्थ चतु न्याय और षट्कोटि" नामक लेख प्रस्तुत किया। भिक्षु ज्ञलछेन नमडोल जे रिनपोछे के ग्रन्थों का विवरणात्मक सूची तैयार कर रहे हैं।
3. डॉ. लोसंग दोर्जे तथा भिक्षु ङवङ् ज्ञलछेन ने इग्नू, नयी दिल्ली के लिए तैयार किए गए बौद्धदर्शन पाठ्यक्रम के निर्माण में सहयोग दिया।
4. डॉ पोन्पा दोर्जे नियमित रूप से शास्त्री द्वितीय वर्ष के छात्रों को तिब्बती इतिहास का अध्यापन कर रहे हैं।
5. डॉ. लोसंग दोर्जे एवं भिक्षु ङवङ् ज्ञलछेन पटना म्युजियम में संग्रहीत तिब्बती ग्रन्थों की नयी सूची का निर्माण कर रहे हैं।

(4) प्रशासनिक कार्य-

1. डॉ. लोसंग दोर्जे ने सांची विश्वविद्यालय में बौद्ध विद्या के पाठ्यक्रम के निर्माण के लिए गठित समिति के सदस्य के रूप में कार्य किया।
2. डॉ. पेन्पा दोर्जे और लोसंग दोर्जे, इग्नू में प्रस्तावित पाठ्यक्रम के लिए सलेवस तैयार करने के लिए गठित समिति के सदस्य के रूप में कार्य किया।
3. डॉ. पेन्पा दोर्जे ने दिनांक 3-5 अक्टूबर, 2013 को आइ सी पी आर के साथ संयुक्त आयोजित संगोष्ठी "बुद्धिज्म : न्यू बुद्धिस्ट एण्ड द क्वेश्चन ऑफ कास्ट" तथा दिनांक 10-12 दिसम्बर, 2013 को ज्ञानप्रवाह के साथ आयोजित गोष्ठी "बुद्धिज़्म आर्ट एण्ड फिलॉसफी" के आयोजन समिति के सदस्य के रूप में कार्य किया।

2. अनुवाद विभाग

उद्देश्यः

अनुवाद विभाग शोध विभाग का एक महत्त्वपूर्ण अंग है, जो बुद्ध वचन के साथ-साथ उन पर प्राचीन भारतीय बौद्धाचार्यों की टीकाओं तथा भोटाचार्यों द्वारा विरचित ग्रन्थों के अनुवाद एवं भोटपाठ का सम्पादन सहित शोधपरक समीक्षात्मक भूमिका लेखन द्वारा ग्रन्थों के प्रकाशन कार्य में संलग्न है। इस सातत्य में वज्रच्छेदिकाप्रज्ञापारमिताटीका, अतीश विरचित एकादश ग्रन्थ, कातन्त्रोणादिसूत्र, शतगाथा, छन्दोरत्नाकर, बोधिपथप्रदीप (द्वितीय संशोधित संस्करण), सुहल्लेख-व्यक्तपदा टीका, महायानसंग्रह आदि ग्रन्थों का संस्कृत भाषा में पुनरुद्धार किया गया तथा अभिसमयालंकारस्य कायव्यवस्थाटीका, मुक्तालतावदानम् (द्वितीय संशोधित संस्करण), सुहल्लेख एवं स्फुटार्थाटीका (द्वितीय संशोधित संस्करण), नीतिशतकम्, अष्टांगहृदयम्, पूर्वयोगटिप्पणी, मिलारेपा का जीवन वृत्तान्त, वज्रसूची, जल-वृक्षसुभाषितशास्त्र, गुरुसमन्तभद्रमुखागम (कुनसङ् लामइ श्यल लुङ्) आदि का हिन्दी अनुवाद किया गया। इन सभी ग्रन्थों के प्रारम्भ में हिन्दी, तिब्बती एवं अंग्रेजी भाषा में आवश्यकतानुसार समीक्षात्मक भूमिका, पाद टिप्पणियाँ एवं अनेक सूचनाओं सहित ग्रन्थ के अन्त में एक उपयोगी परिशिष्ट भी दिये गए हैं।

इस वर्ष विभाग ने पिछले वर्ष से चले आ रहे कुछ महत्त्वपूर्ण एवं बड़े ग्रन्थों जैसे- मृत्युवञ्चना, चरकसंहिता का तिब्बती में अनुवाद, युक्तिषष्ठिकावृत्ति तथा बोधिपथप्रदीपपञ्जिका का संस्कृत पुनरुद्धार व हिन्दी अनुवाद, मध्यमकावतार के छठवें अध्याय की वृत्ति सहित हिन्दी अनुवाद, शीघ्रबोध का सम्पादन एवं अनुवाद, अशोकावदानम्, नागानन्दनाटकम् एवं हरिभट्ट की जातकमाला आदि कार्यों को निर्बाध गति से आगे बढाया। विभाग के सदस्यों ने पुनरुद्धार विभाग के साथ सामूहिक कार्य के रूप में विमलकीर्तिनिर्देशसूत्र का तिब्बती भाषा के सहयोग से सम्पादन किया। इसके अतिरिक्त महायानसूत्रालंकार का हिन्दी अनुवाद एवं सन्धिनिर्मोचनसूत्र का संस्कृत पुनरुद्धार कार्य भी विभाग की योजना में समावेश किया गया और महायानसूत्रालंकार पर कार्य प्रारम्भ किया गया। संस्कृत एवं तिब्बती दोनों भाषा में प्राप्त कुछ परम उपयोगी ग्रन्थों का समीक्षात्मक सम्पादन कार्य भी भावी योजना के अन्तर्गत विचारणीय है, जैसे तत्त्वसंग्रहपञ्जिका, बोधिचर्यावतारपञ्जिका एवं शिक्षासमुच्चय आदि।

इसके अतिरिक्त छात्रों को प्रोत्साहित करने के लिए, अनुवाद की प्रक्रिया से अवगत कराने के लिए तथा संस्कृत भाषा के प्रति जागरूकता एवं रुचि बढ़ाने हेतु कार्यक्रमों का आयोजन भी करती है।

कार्य प्रकृति-

भारतीय और बौद्ध धर्म विषयक महत्त्वपूर्ण ग्रंथों का संस्कृत, तिब्बती, हिन्दी और अंग्रेजी में शोध के माध्यम से अनुवाद करना इस विभाग का मुख्य कार्य है। ये सब ग्रंथों के समीक्षात्मक आलोचना का कार्य भी दिया जाता है। इसके अतिरिक्त विभाग के सदस्य शैक्षणिक और लेखन के कार्य भी करते हैं। संगोष्ठी और कार्यशाला का भी आयोजन होता है और विदेशों से आये हुए राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय छात्रवृत्ति प्राप्त किये हुए विद्वानों एवं शोध छात्रों को मार्गदर्शन दिया जाता है।

विभाग में कार्यरत सदस्य एवं पदनाम-

1. भिक्षु लोब्सङ् नोर्बू शास्त्री - एसोशिएट प्रोफेसर (अध्यक्ष)
2. डॉ. पेमा तेनजिन - एसोशिएट प्रोफेसर
3. डॉ. रामजी सिंह - शोध सहायक
4. श्री येशे वङ्दु - शोध सहायक

1. मुख्य योजनाएँ

(क) वर्तमान सत्र में विभाग द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ-

मुक्तालतावदानम् (द्वितीय संशोधित संस्करण, संस्कृत, तिब्बती, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा में)

(ख) वर्तमान कार्य-

1. **मृत्युवञ्चना** : (संस्कृत एवं तिब्बती का सम्पादन सहित हिन्दी एवं अंग्रेजी अनुवाद) ग्रन्थ के भोट एवं संस्कृत संस्करणों का सम्पादन सहित हिन्दी एवं अंग्रेजी अनुवाद कार्य सम्पन्न हो चुका है। इस सत्र में शोधपरक भूमिका लेखन तथा परिशिष्ट पर कार्य किया गया। ग्रन्थगत ज्योतिष एवं दार्शनिक आयामों पर कालचक्रतन्त्र के आधार पर कार्य प्रगति पर है।
2. **वैद्यजीवनम्** : (लोलिम्बराज कृत) ग्रन्थ के भूमिका लेखन हेतु सम्बद्ध ग्रन्थों का अध्ययन किया गया।

3. **युक्तिषष्ठिकावृत्ति** : (संस्कृत पुनरुद्धार एवं हिन्दी अनुवाद) इस ग्रन्थ का संस्कृत पुनरुद्धार एवं हिन्दी अनुवाद सम्पन्न किया गया तथा अन्तिम संशोधन का कार्य प्रोफेसर रामशंकर त्रिपाठी के साथ चल रहा है।

4. **बोधिपथप्रदीपपञ्जिकाः** (संस्कृत पुनरुद्धार एवं हिन्दी अनुवाद) इस सत्र में ग्रन्थ के संस्कृत पुनरुद्धार का पुनः सम्पादन एवं संशोधन कार्य सहित कुछ संस्कृत श्लोकों का पुनरुद्धार कार्य भी सम्पन्न किया गया।

5. **वृत्ति सहित मध्यमकावतार का छठाँ अध्याय: (**हिन्दी अनुवाद) इस ग्रन्थ का मोटे तौर पर हिन्दी अनुवाद का कार्य सम्पन्न हो चुका है। सम्प्रति अन्तिम भाषा संशोधन एवं सम्पादन का कार्य चल रहा है, जिसके अन्तर्गत 40 श्लोकों का वृत्ति सहित संशोधन पूर्ण किया गया।

6. **बोधिपथप्रदीप** : (तृतीय संस्करण) ग्रन्थ का तीसरा संस्करण प्रकाशित होने जा रहा है, जिसके लिए ग्रन्थगत आवश्यक सम्पादन एवं संशोधन का कार्य किया गया है।

7. **महायानसूत्रालंकार टीका सहित** : (हिन्दी अनुवाद) इस ग्रन्थ के तीन अध्यायों का भोटभाषा से हिन्दी में अनुवाद कार्य सम्पन्न कर लिया गया।

8. **प्रज्ञापारमितापिण्डार्थ** : इस ग्रन्थ के 30 कारिकाओं का हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा में अनुवाद किया गया तथा भूमिका के कुछ अंशों को तैयार किया गया।

9**.** **विमलकीर्तिनिर्देशसूत्रम् :** विविध भोट संस्करणों के सहयोग से विमलकीर्तिनिर्देशसूत्र का संस्कृत एवं भोट-पाठ का सम्पादन पुनरुद्धार विभाग के साथ सामूहिक कार्य के रूप में किया जा रहा है, जिसमें वर्तमान सत्र में ग्रन्थ का दोनों भाषाओं में सम्पादन पूर्ण कर लिया गया है।

10. **भोट चिकित्सा में अनुसंधान की प्रणाली** : प्रस्तुत ग्रन्थ भोट चिकित्सा पद्धति के क्षेत्र में अध्ययन तथा शोध की प्रक्रिया पर आधारित है, जिस पर वर्तमान सत्र में दो अध्यायों को अन्तिम स्वरूप दिया जा चुका है।

2. अध्यापन कार्य

1. विगत कई वर्षों से डॉ. पेमा तेनजिन, विश्वविद्यालय के शैक्षणिक विभाग में उत्तर मध्यमा प्रथम वर्ष के छात्रों को नियमित रूप से अनिवार्य संस्कृत भाषा का अध्यापन कार्य कर रहे हैं।

2. डॉ. पेमा तेनजिन ने धर्म एवं संस्कृति विभाग, निर्वासित तिब्बती सरकार द्वारा चलाये जा रहे हिन्दी कार्यशाला के तहत धर्मशाला से आये भिक्षु एवं भिक्षुणियों को मार्च 2013 से लेकर जनवरी 2014 तक 'गुरुसमन्तभद्रमुखागम (कुलसङ् लामइ श्यल लुङ्)' ग्रन्थ का हिन्दी एवं तिब्बती भाषा में अध्यापन कार्य किया।

3. डॉ. रामजी सिंह, विश्वविद्यालय के शैक्षणिक विभाग में वैकल्पिक विषय ख वर्ग के अन्तर्गत चार कक्षाओं का नियमित संस्कृत अध्यापन कर रहे हैं।

4. श्री यिशे वांगदु ने मार्च, 2013 से पूर्व मध्यमा प्रथम वर्ष के छात्रों को आंग्ल-भाषा का अध्यापन किया।

5. श्री एल. एन. शास्त्री ने शास्त्री प्रथम वर्ष के छात्रों को नियमित रूप से तिब्बती इतिहास पर दिनांक 15 अक्टूबर 2013 से 11 नवम्बर 2013 तक शिक्षा प्रदान किया।

6. दिनांक 17 नवम्बर 2013 से 23 दिसम्बर 2013 तक की एल.एन. शास्त्री ने "प्रेजेन्टेशन आफ द थ्री वेहीकल्स आफ रत्नाकर शान्ति", आचार्य रत्नाकर शान्ति के मध्यमकोपदेश और इसके ऊपर लिखी गयी "मध्मकालंकारवृत्ति मध्यमाप्रतिपदसिद्धिनाम" नाम की समीक्षा पर शिक्षा प्रदान किया। अमेरिका के अतिथि विद्वान् डेनियल मेक्नामारा को मध्यमकोपदेश एवं उसकी टीका का अंग्रेजी भाषा के माध्यम से भी इन्होंने अध्यापन कार्य किया।

3. सेमिनार एवं कार्यशाला में प्रतिभागिता

1. भिक्षु एल. एन. शास्त्री ने 24-25 अप्रैल, 2013 को काशी विद्यापीठ द्वारा आयोजित "बुद्धिज्म एण्ड सोशल जस्टिज" नामक संगोष्ठी में भाग लिया और 'बुद्धिज्म एण्ड सोशल जस्टिज : ए प्रिव्यू' विषय पर पावर प्वाइन्ट के माध्यम से प्रस्तुति दी।
2. भिक्षु एल. एन. शास्त्री ने दिनांक 12-13 जून, 2013 को सेरा-जे महाविहार द्वारा 'तिब्बतन मोंक्स इनगेज्ड इन दि प्रजेन्ट टाइम एण्ड एवेन्यूज ऑफ एक्सचेंज प्रोग्राम विद इण्डियन युनिवर्सिटीज' विषय पर आयोजित कार्यशाला में भाग लिया और पावर प्वाइन्ट के माध्यम से दो भाषण दिये।
3. भिक्षु एल. एन. शास्त्री ने दिनांक 10-12 दिसम्बर, 2013 को ज्ञानप्रवाह द्वारा आयोजित "बुद्धिज्मः आर्ट एण्ड फिलॉसफी" नामक त्रिदिवसीय गोष्ठी में भाग लिया और शोध प्रपत्र बुद्धिस्ट आर्ट : ए प्रिव्यू ऑन टिबेटन पेन्टिंग' प्रस्तुत किया।
4. दिनांक 13-15 जनवरी, 2014 को रायपुर विश्वविद्यालय, छत्तीसगढ़ द्वारा आयोजित "नागार्जुनाज़ फिलॉसफी" नामक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया और 'एटिमोलॉजी ऑफ प्रतीत्यसमुत्पाद : माध्यमिक व्यू' विषय पर लेख प्रस्तुत किया।
5. डॉ. पेमा तेनजिन ने 3-5 जुलाई, 2013 को संस्कृति एवं भाषा अकादमी, शिमला, हिमाचल प्रदेश द्वारा आयोजित 'भारत-तिब्बत ज्ञान सम्बन्ध परम्परा' नामक राष्ट्रीय परिसंवाद गोष्ठी में भाग लिया तथा अपना शोध प्रपत्र 'भोट-हिन्दी वैयाकरणिक अनुभेद' प्रस्तुत किया।
6. दिनांक 17-19 सितम्बर, 2013 तक महाबोधि सोसायटी, सारनाथ द्वारा आयोजित अनागारिक धर्मपाल के 149वें जन्म-दिवस पर 'अनागारिक्स कन्ट्रीब्यूशन एण्ड इट्स अचीवमेन्ट्स' विषय पर व्याख्यान दिया।
7. दिनांक 3-8 नवम्बर, 2013 निर्वासित तिब्बती सरकार के शिक्षा विभाग द्वारा मोन्टेसरी टीचर्स के लिए आयोजित कार्यशाला के उद्घाटन एवं समापन-सत्र में मुख्य अतिथि रहे।

4. सेमिनार एवं कार्यशाला का आयोजन

1. वालेंटरी कम्यूनिटी फॉर सोशल साइंस के सदस्यों के साथ श्री एल. एन. शास्त्री ने "बेसिक फिजिक्स एण्ड बुद्धिज्म" विषय पर दिनांक 5 मार्च 2013 से प्रत्येक सप्ताह में बुद्धवार एवं शुक्रवार को कई व्याख्यानमाला का आयोजन किया।
2. भिक्षु एल. एन. शास्त्री ने 3-5 अक्टूबर, 2013 को "बुद्धिज्म, नियो-बुद्धिज्म एण्ड क्वेशचन ऑफ कास्ट" विषय पर त्रि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजन समिति के सदस्य के रूप में दायित्व का निर्वहन किया।

3. भिक्षु एल. एन. शास्त्री ने 27-29 जनवरी, 2014 को मेकिनतोष कम्प्यूटर सोफ्टवेयर इंजिनियर श्री लोब्संग मोनलम के सहयोग से शोध विभाग के कार्यकर्ताओं के लिए त्रि-दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया।

4. भिक्षु एल. एन. शास्त्री ने 12-16 मार्च, 2014 तक धर्मशाला स्थित केन्द्रीय तिब्बती प्रशासन के धर्म एवं संस्कृति विभाग एवं के.ति.अ.वि.वि., सारनाथ के सहयोग से तिब्बती महाविहारों के गेशे एवं आचार्यों के लिए आयोजित "रिसर्च मेथडोलॉजी" विषय पर पाँच-दिवसीय कार्यशाला में कोर्डिनेटर का दायित्व निभाया।

5. व्याख्यान

भिक्षु एल. एन. शास्त्री ने निम्नलिखित व्याख्यान दियेः-

1. आषाढ़ पूर्णिमा के दिन धर्मचक्रप्रवर्तन दिवस पर 22 जुलाई 2013 को अतिथि वक्ता के रूप में "रोल ऑफ प्रमोशन एण्ड प्रोपागेशन ऑफ दि बुद्धधम्मा इन प्रजेन्ट टाइमः ए प्रिव्यू" विषय पर व्याख्यान दिया।

2. महाबोधि सोसायटी ऑफ इण्डिया, सारनाथ, मूलगंध कुटी विहार द्वारा आयोजित अनागारिक धर्मपाल के 149वें जन्म-दिवस पर एक कार्यक्रम की अध्यक्षता की। कार्यक्रम का विषय था 'अनागारिक के अवदान एवं कृतियाँ का योगदान' जो आयोजित हुआ था दिनांक 17-19 सितम्बर 2013।

3. तिब्बती निर्वासित सरकार गांगछेन, किशोंग, धर्मशाला के, शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित 'मोन्टेसरी टीचर्स' कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में सहभागिता किया। यह कार्यक्रम 3-8 नवम्बर 2013 में सम्पन्न हुआ।

4. दिनांक 13 मार्च, 2014 को तिब्बती महाविहारों के गेशे एवं आचार्यों को 'रिसर्च मेथेडोलॉजी ऑन ट्रान्सलेशन' विषय पर व्याख्यान दिया।

5. दिनांक 30 दिसम्बर, 2013 से 19 जनवरी, 2014 तक आयोजित एक्सचेंज प्रोग्राम के तहत अमेरिका से आये छात्रों के लिए 'बोधिपथप्रदीप, फोर नोबुल ट्रुथ एवं एटफोल्ड नोबुल पाथ तथा ट्रान्सलेशन ऑफ बुद्धिस्ट टेक्सः चेलेंजेज एण्ड प्रोबलम' विषयों पर तीन व्याख्यान दिये।

6. दिनांक 24 जनवरी, 2014 को भूटान के इन्स्टीट्यूट ऑफ लेंगवेज एण्ड कल्चर के अध्यापकों के लिए 'दि वेनिफिट ऑफ संस्कृत एण्ड टिबेटन लैंगवेज इन अन्डरस्टेन्डिंग बुद्धिज्म : एन एनालिसिस' विषय पर व्याख्यान दिया।

7. एक्सचेंज प्रोग्राम के तहत दक्षिण कोरिया के वोंगकोंग डिजिटल युनिवर्सिटी से आये अध्यापकों एवं छात्रों के लिए 8 फरवरी, 2014 को 'फोर नोबुल ट्रुथ' विषय पर तथा 9 फरवरी 2014 को 'एटफोल्ड नोबुल पाथ' विषय पर दो व्याख्यान दिये।

8. डॉ. पेमा तेनजिन ने 3 अगस्त, 2013 को पूर्व मध्यमा प्रथम वर्ष के छात्रों के लिए 'संस्कृत भाषा का महत्त्व एवं कैसे इसे सीखा जाय' विषय पर, 27 सितम्बर 2013 को इटली के ग्रुप को 'इन्ट्रोडक्शन टू बुद्धिज्म' विषय पर तथा 6 अक्टूबर, 2013 को इटली के एक अन्य ग्रुप को 'बुद्ध एण्ड हिज टीचिंग' विषय पर व्याख्यान दिया।

9. विश्वविद्यालय की छात्र पत्रिका 'रिग्-लब्' द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में इन्होंने पावर प्वाइंट के माध्यम से 4 वेद एवं 6 वेदांग : एक विवरण विषय पर 25 सितम्बर 2013 में व्याख्यान दिया।

10. श्री यिशे वांगदु ने 22वें शैक्षणिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के सह संयोजक के रूप में कार्य किया तथा एक्सचेंज प्रोग्राम के तहत अमेरिका के छात्रों के लिए 'राइट एण्ड इक्वालिटी इन बुद्धिज्म' विषय पर व्याख्यान दिया। यह कार्यक्रम 30 दिसम्बर 2013 से 19 जनवरी 2014 तक चला।

6. शोध-प्रबन्धः (प्रकाशित)

डॉ. पेमा तेनजिन ने 'धी-पत्रिका, भाग-53' में 'तिब्बत में पूर्वानूदित सूत्र-तन्त्र का परिचय' नामक शीर्षक के अन्तर्गत 'गुरुयोग की भावना' विषय पर अपना लेख प्रकाशित किया।

7. अन्य क्रियाकलाप

डॉ. पेमा तेनजिन ने परम पावन दलाई लामा के "मध्यममार्ग की नीति तथा सम्बद्ध दस्तावेज" नामक ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद एवं सम्पादन का कार्य किया और प्रकाशनार्थ उसकी सी.आर.सी. तैयार की।

8. शोध-निर्देशन

1. श्री दोर्ते कामरिड, वियाना युनिवर्सिटी, आस्ट्रिया को वृत्ति सहित विग्रहव्यावर्त्तनी पर निर्देशन किया।
2. श्री केथरीन पिरुइट, धर्म विभाग, एमोरी युनिर्सिटी, अमेरिका को उसके पीएच.डी शोध प्रबन्ध हेतु निर्देशन किया।
3. फुलेरटोन युनिवर्सिटी, अमेरिका से आये डॉ० ङवङ् फुनछोग, फुल ब्राइट नेहरु शोधछात्र को निर्देशन किया।
4. नार्थ केरोलिना युनिवर्सिटी, अमेरिका से आये श्री पेट्रिक दाउद, फुलब्राइट नेहरु शोधछात्र को निर्देशन किया।
5. एमोरी युनिवर्सिटी, अमेरिका से आये श्री स्टेफन डोमिनिक को उनके "दि मेडनेस ऑफ ब्लिसः सेक्सुअल एथिक्स ऑन दि थ्रेसहोल्ड ऑफ टिबेटन बुद्धिस्ट मॉडर्निज्म" नामक शोध प्रबन्ध के लिए दिशा निर्देश किया।
6. इमोरी विश्वविद्यालय के फुलब्राइट अनुसन्धानकर्ता डेनियल मेक्नामारा, पीएच.डी. को उनके शोध "फिलॉसफी एस मेडिटेशनः स्वसंवेदन इन 11 सेन्चुरी इण्डियन बुद्धिज्म" विषय पर मार्गदर्शन किया।
7. ग्राफ एलेक्जेण्डर, पीएच.डी. छात्र को "सितु पनछेन्स ग्रेट कॉमेन्टरी" विषय पर मार्ग निर्देश किया।

9. अन्य प्रशासनिक कार्य

डॉ. पेमा तेनजिन विगत कई वर्षों से अतिरिक्त कार्य के रूप में प्रकाशन अनुभाग के प्रभारी का कार्यभार संभाल रहे हैं।

10. समिति की सदस्यता

श्री एल. एन. शास्त्री स्टेन्डर्डाइजेशन ऑफ टिबेटन फॉर मॉडर्न साइंस एण्ड टेक्निकल टर्म्स, शिक्षा विभाग, केन्द्रीय तिब्बती प्रशासन, धर्मशाला के सदस्य हैं।

3. दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध विभाग

(1) विभाग एवं शैक्षणिक पृष्ठभूमि

क. परिकल्पना-

ऐतिहासिक विडम्बना के फलस्वरूप भारत से प्राचीन बौद्ध संस्कृत साहित्य का अधिकांश भाग प्रायः विलुप्त हो चुका था। भारत के इस प्राचीन सम्पदा का कुछ अंश भारत के पड़ोसी देशों विशेषकर नेपाल एवं तिब्बत में पाण्डुलिपियों के रूप में उपलब्ध हुए हैं। परवर्ती समय में इन देशों से अनेक पाण्डुलिपियाँ विश्व के अनेक पुस्तकालयों में पहुँच गयीं। उस विलुप्त साहित्य का विशेषकर बौद्धतन्त्र-साहित्य का पुनरुद्धार, सम्पादन, प्रकाशन तथा शोध की परिकल्पना की दृष्टि से इस विभाग की स्थापना की गयी थी।

ख. स्थापना-

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थों के शोध एवं प्रकाशन की इस अति महत्त्वपूर्ण एवं महत्त्वाकांक्षी योजना को मानव संसाधन विकास मन्त्रालय के सहयोग से इस विश्वविद्यालय (उस समय के केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान) में नवम्बर, 1985 से प्रारम्भ किया गया था। प्रारम्भ में इसके कार्य-क्षेत्र एवं अध्ययन तथा शोध के आयामों के निर्धारण के लिये पाँच महीने का पायलट प्रोजेक्ट संचालित किया गया था। तत्पश्चात् इसकी उपलब्धियों, विषय की महत्ता एवं व्यापकता को दृष्टि में रखते हुए 1 अप्रैल, 1986 से इसे पंचवर्षीय योजना का रूप प्रदान कर संचालित किया गया, जिसे बाद में विश्वविद्यालय के स्थायी विभाग के रूप में स्वीकृत किया गया और सम्प्रति यह विभाग विश्वविद्यालय के शोध विभाग के अन्तर्गत स्थायी विभाग के रूप में कार्य कर रहा है। इस शोध विभाग के प्रथम निदेशक एवं द्रष्टा स्व. प्रो. जगन्नाथ उपाध्याय थे।

ग. विभाग में कार्यरत सदस्य एवं पदनाम-

1. डॉ. ठाकुरसेन नेगी - एसोशिएट प्रोफेसर
2. डॉ. बनारसी लाल - एसोशिएट प्रोफेसर
3. श्री टी. आर. शाशनी - शोध-सहायक
4. डॉ. छेरिंग डोलकर - शोध-सहायक
5. डॉ. रञ्जन कुमार शर्मा - शोध-सहायक
6. डॉ. विजयराज वज्राचार्य - शोध-सहायक

(2) प्रकाशन, सम्पादन एवं शोध कार्य

क. शोध-पत्रिका 'धीः' का प्रकाशन

बौद्धतन्त्र से सम्बन्धित नवीन शोध कार्यों और उससे प्राप्त निष्कर्षों तथा हो रहे शोध कार्यों की नवीनतम सूचनाओं को विश्व के विद्वानों एवं शोधार्थियों तक पहुँचाने के लिये विभाग द्वारा 'धीः' नामक वार्षिक शोध-पत्रिका प्रकाशित की जाती है। विभाग के प्रारम्भ से अद्यावधि यह पत्रिका अविच्छन्न रूप से प्रकाशित हो रही है। बौद्ध अध्ययन विशेषकर बौद्धतन्त्रों के अध्ययन में संलग्न विद्वानों द्वारा इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा हो रही है। देश-विदेश के अनेक शोध-पत्रिकाओं के साथ सम्प्रति विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में इसका विनिमय भी हो

रहा है। इस पत्रिका के प्रायः सभी स्तम्भ एवं शोध-निबन्ध विभाग के सदस्यों द्वारा प्रस्तुत किये जाते हैं। प्रस्तावित आलोच्य वर्ष तक इस शोध-पत्रिका के 53 अङ्क प्रकाशित हो चुके हैं।

'धीः' शोध-पत्रिका के 53वें अंक का प्रकाशन

शोध-पत्रिका 'धीः' के 53वें अंक का प्रकाशन अपने नियत समय दिनांक 25 मई, 2013 को बुद्ध-जयन्ती समारोह के अवसर पर कर दिया गया। इस अंक में 2 नवीन स्तोत्र, 6 शोध-निबन्ध तथा 5 लघुग्रन्थ एवं ग्रन्थों के परिच्छेद सम्मिलित हैं।

ख. ग्रन्थों का प्रकाशन

1. कालचक्रतन्त्र लघुग्रन्थसंग्रह (भाग-1)

विभाग में कालचक्रतन्त्र से सम्बद्ध साहित्य का संकलन करने की योजना है, तदनुसार इस ग्रन्थ में 'श्रीकालचक्रभगवत्साधन' एवं 'श्रीकालचक्रपूजाविधि' नामक दो लघुग्रन्थ सम्मिलित हैं। परिशिष्ट में अभयाकरगुप्त रचित कालचक्रमण्डल का भी सन्निवेश किया गया है। इस ग्रन्थ का सम्पादन, विस्तृत भूमिका एवं परिशिष्ट का सम्पादन कार्य सम्पन्न कर प्रकाशनार्थ प्रकाशन अनुभाग को सौंप दिया गया है।

2. गुह्यसमाजतन्त्रप्रदीपोद्योतनटीका षट्कोटिव्याख्या

आचार्य चन्द्रकीर्तिकृत इस ग्रन्थ को पुनः संशोधन एवं सम्पादन कर 'धीः' शोध-पत्रिका में क्रमशः प्रकाशित किया जा रहा है। आलोच्य वर्ष में 'धीः' के 53वें अंक में 11वाँ परिच्छेद प्रकाशित किया गया है।

3. तत्त्वरत्नावली

आचार्य अद्वयवज्रपाद विरचित इस ग्रन्थ को चार संस्कृत, दो प्रकाशित संस्करण और भोट पाठ के सहयोग से संशोधन एवं सम्पादन कर 'धीः' के 53वें अङ्क में प्रकाशित किया गया।

4. श्रीचक्रसंवराभिसमयव्याख्या

आचार्य शाश्वतवज्रपाद विरचित इस ग्रन्थ का संशोधन एवं सम्पादन कर 'धीः' शोध-पत्रिका के 53वें अङ्क में प्रकाशित किया गया।

5. स्तोत्र के प्रकाशन

'वाङ्गण्डलनमस्कारश्लोकाः' और 'भगवत्स्तुतिः' नाम के दो स्तोत्र के सम्पादन और प्रकाशन धीः पत्रिका, अंक-53 में हुए।

ग. ग्रन्थों का सम्पादन-कार्य एवं प्रूफ-संशोधन

1. **सम्पुटतन्त्र (संस्कृत) -** इस ग्रन्थ के 7वें पटल के चतुर्थ प्रकरण का विभिन्न 13 संस्कृत पाण्डुलिपियों, 4 भोट-संस्करणों, बुस्तोन टीका एवं अभयाकरगुप्त की आम्नायमञ्जरी टीका की सहायता से पाठ-निर्णय कर सम्पादन कार्य सम्पन्न किया गया।

2. **सम्पुटतन्त्र (भोट) -** इस ग्रन्थ के 7वें पटल के चतुर्थ प्रकरण का विभिन्न 4 भोट-संस्करणों तथा आचार्य बुस्तोन एवं अभयाकरगुप्त की टीकाओं और संस्कृत की विभिन्न 13 पाण्डुलिपियों के आधार पर तथा आचार्य इन्द्रभूति (1197 तो.), अभयाकरगुप्त (1198 तो.) एवं आचार्य वीरवज्र (1199 तो.) की टीकाओं की सहायता से सम्पादन कार्य तथा प्रूफ-संशोधन कार्य सम्पन्न किया गया।

3. **अभिषेकविधि -** सम्पादन के पश्चात् इस ग्रन्थ का प्रूफ-संशोधन कार्य सम्पन्न किया गया है।
4. **संक्षिप्ताभिषेकविधि -** सम्पादन के पश्चात् इस ग्रन्थ का प्रूफ-संशोधन का कार्य किया जा रहा है।
5. **यमारिमण्डलोपायिका -** सम्पादन के पश्चात् इस ग्रन्थ का प्रूफ-संशोधन का कार्य किया जा रहा है।
6. **पञ्चविंशति अमनसिकारधर्मसमुच्चय -** इस ग्रन्थ के अन्तर्गत अद्वयवज्र कृत 'कुदृष्टिनिर्घातनम्' तथा 'कुदृष्टिनिर्घातवाक्यटिप्पणिका' नामक ग्रन्थों का अन्तिम पाठ-निर्णय सहित संस्कृत एवं भोट सहित सम्पादन सम्पन्न किया गया।
7. **डाकिनीवज्रपञ्जरटिप्पणी -** इस ग्रन्थ का पाठ-संशोधन तथा प्रूफ-संशोधन का कार्य किया जा रहा है।
8. **रत्नगुणसञ्चयगाथाव्याख्या -** इस ग्रन्थ के प्रथम परिच्छेद का भोट-पाठ के साथ मिलान करते हुए पुनः सम्पादन किया गया।
9. **'धीः' शोध-पत्रिका -** इस शोध-पत्रिका के 54वें अङ्क हेतु लेख तथा सामग्रियों का संकलन, सम्पादन एवं प्रूफ-संशोधन का कार्य किया गया।
10. **अभयाकरगुप्तकृत कालचक्रावतार -** इस ग्रन्थ का सम्पादन कार्य सम्पन्न किया गया।

घ. भोट ग्रन्थों का हिन्दी अनुवाद तथा सम्पादन

1. **चक्रसंवर की परम्परा एवं इतिहास -** भोटाचार्य सोनम सेङ्गे द्वारा रचित इस ग्रन्थ का हिन्दी में अनुवाद-कार्य किया जा रहा है तथा धीः पत्रिका में क्रमशः प्रकाशित किया जा रहा है।
2. **ग्युद-दे-चि-यी नम्-शग दुस-पा ग्यु-दे-रिन-पो-छेई तेरगो जेद पई दे-मिग (तन्त्र की सामान्य एवं संक्षिप्त व्याख्या) -** आचार्य बुस्तोन रिनपोछे द्वारा रचित इस भोट ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद सम्पन्न हो चुका है। आलोच्य वर्ष में ग्रन्थ में उपलब्ध उद्धरणों का अन्वेषण कार्य किया गया।
3. **बुद्धकपालक्रमप्रद्योतन नाम मण्डलविधि -** इस ग्रन्थ का क्रमशः हिन्दी अनुवाद किया जा रहा है तथा धीः पत्रिका के अंकों में अनूदित अंश प्रकाशित किया जा रहा है।

ङ पाण्डुलिपियों और भोटानुवाद से पाठ-मिलान का कार्य

1. **सम्पुटतन्त्र (संस्कृत एवं भोट) -** इसके नवें पटल के 2-4 प्रकरण का 13 संस्कृत पाण्डुलिपियों से पाठ संकलन किया गया। इसका तिब्बती अनुवाद, बुस्तोन टीका और आम्नायमञ्जरी से भी पाठ संकलित किया गया। इसी प्रकार भोट पाठ का भी चार कग्युर संस्करणों, संस्कृत पाठ और टीकाओं से मिलान कर पाठ संकलित किया गया।
2. **तथागताचिन्त्यगुह्यनिर्देशसूत्र (संस्कृत) -** इस ग्रन्थ का मूल पाण्डुलिपि से 25 से 32 परिवर्त तक पुनः मिलान का कार्य सम्पन्न किया गया।
3. **यमारिमण्डलोपायिका (संस्कृत)** - इस ग्रन्थ का भोट-पाठ के साथ मिलान कार्य किया जा रहा है।
4. **संशिप्तभिषेकविधि** - इस ग्रन्थ का भोट-पाठ के साथ मिलान कार्य किया जा रहा है।

5. **अभिषेक विधि** - इस ग्रन्थ की 'क्रियासंग्रह' एवं 'क्रियासमुच्चय' तथा 'मण्डलोपायिका' से पाठ-मिलान का कार्य किया गया।

6. **बुद्धसमायोगडाकिनीजालसंवरतन्त्र (संस्कृत)** - इस ग्रन्थ के चतुर्थ परिच्छेद का भोट-पाठ के साथ मिलान का कार्य किया जा रहा है।

7. **अभिधानोत्तरतन्त्र** - इस ग्रन्थ का पुनः पाठ-मिलान का कार्य किया जा रहा है।

8. **श्रीकालचक्रानुसारीगणित** - इस ग्रन्थ का पाठ-मिलान का कार्य किया गया।

च. कम्प्यूटर में डाटा इनपुट तथा प्रूफ-रीडिंग

विभाग के सदस्यों ने विभाग में सम्पन्न होने वाले सम्पादित ग्रन्थों, पाण्डुलिपियों की प्रतियों, सम्पादित होने वाले अंशों, क्रमशः सम्पन्न होने वाले प्रूफ-संशोधनों, प्रकाशित होने वाले ग्रन्थों की भूमिका, परिशिष्ट, श्लोक-सूचियों, धीः पत्रिका की शोध सामग्री एवं लेखों का कम्प्यूटर में करेक्शन, इनपुट एवं प्रूफ-संशोधन इत्यादि का काम सम्पन्न किया।

छ. विभाग का पुस्तकालय

1. **पुस्तकालय की स्थापना**

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध विभाग में प्रारम्भ से ही पृथक् रूप से विभाग में पुस्तकालय की स्थापना की गई है, जिसमें विभाग के शोध को दृष्टि में रखकर बौद्ध, शैव, शाक्त तथा अन्य तन्त्रों से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण तन्त्र साहित्य का संकलन किया जाता है। आलोच्य वर्ष में कुल 12 ग्रन्थ संकलित किये गये हैं।

2. **वर्ष 2013-2014 में नये ग्रन्थों का चयन तथा क्रय**

वर्ष 2013-2014 में विभागीय पुस्तकालय के लिये ग्रन्थों की खरीद नहीं की गई। विश्वविद्यालय के प्रकाशन अनुभाग से तथा विभिन्न स्रोतों से 12 ग्रन्थ भेंट स्वरूप प्राप्त हुए। इन ग्रन्थों का मूल्य ₹ 1355.00 है। इनमें 3 भोट भाषा, 1 संस्कृत तथा 4 बहुभाषिक एवं 4 द्विभाषी ग्रन्थ हैं। आलोच्य वर्ष में भेंटस्वरूप प्राप्त किये गये ग्रन्थों को परिग्रहण पञ्जिका में क्रमानुसार क्र.सं. 2309 से 2320 तक में अंकित किया गया है।

ज. बुद्धजयन्ती का आयोजन

विभाग की ओर से दिनांक 25.05.2013 को विश्वविद्यालय के प्रांगण में 'बुद्धजयन्ती' का आयोजन किया गया। इस समारोह की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ङवङ् समतेन ने की। पालि के प्रख्यात् विद्वान् प्रो. एन.एच. साम्तानी, बौद्धदर्शन के प्रख्यात् विद्वान् प्रो. रामशङ्कर त्रिपाठी, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के पालि एवं बौद्धदर्शन के विद्वान् प्रो. लालजी श्रावक तथा दर्शन के विद्वान् प्रो. पी. गोखले ने 'आज के युग में बौद्धधर्म' विषय पर व्याख्यान प्रदान किये। इस शुभ अवसर पर 'धीः' 53वें अंक का बुद्धार्पण किया गया।

झ. कार्यशाला तथा गोष्ठियों में सहभागिता

1. विभाग के समस्त सदस्य शोध विभाग द्वारा दिनांक 27 से 29 जनवरी, 2014 तक आयोजित "Training on Software and Discussion by Lobsang Monlam" के कार्यशाला में सम्मिलित हुए।

2. (क) डॉ. बनारसी लाल ने "पश्चिमोत्तर हिमालयी संस्कृति एवं बौद्धधर्म" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी दिनांक 18-19 मई, 2013 मनाली (हिमाचल प्रदेश) में भाग लिया तथा "पश्चिमोत्तर हिमालयी समाज पर बौद्धधर्म का प्रभाव" विषय पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया।

   (ख) दिनांक 3 से 5 जुलाई, 2013 को शिमला, हिमाचल प्रदेश में आयोजित "भारत तिब्बत ज्ञान सम्बन्ध परम्परा" विषयक सेमिनार में सम्मिलित हुए तथा "भारत तिब्बत ज्ञान सम्बन्ध परम्परा के विविध आयाम एवं प्रतिमा निर्माण-विद्या" विषय पर अपना शोध-निबन्ध प्रस्तुत किया।

   (ग) दिनांक 12 से 15 फरवरी, 2014 तक शाक्यमुनि तापस फाउण्डेशन औरंगाबाद द्वारा "वज्रयान : दर्शन और साधना" विषय पर आयोजित कार्यशाला में सम्मिलित हुए तथा "दुर्लभ मानव जीवन और बौद्ध जीवन दृष्टि" विषय पर अपना लेख प्रस्तुत किया।

   (घ) दिनांक 12 से 16 मार्च, 2014 तक धर्म और संस्कृति विभाग, धर्मशाला (हि.प्र.) एवं के.ति.अ.वि.वि., सारनाथ द्वारा आयोजित "शोध पद्धति" नामक कार्यशाला में "बौद्ध तन्त्रों में शोध की समस्याएं एवं सम्भावनाएं" विषय पर व्याख्यान प्रदान किया।

   (ङ) दिनांक 8-9 मार्च, 2014 तक राहुल सांकृत्यायन प्रतिष्ठान, दिल्ली द्वारा आयोजित "संस्कृत वाङ्मय की लोकधर्मी परम्पराएँ : संस्कृत वाङ्मय के अभिवर्धन में राहुल सांकृत्यायन का योगदान" विषय के गोष्ठी में भाग लिया तथा "राहुल संकलन में बौद्धतन्त्रों के कुछ नवीन शीर्षक" विषय पर लेख प्रस्तुत किया।

   (च) दिनांक 4.2.2013 से 31 जनवरी, 2014 तक धर्म एवं संस्कृति विभाग, धर्मशाला, (हिमाचल प्रदेश) द्वारा वरिष्ठ भिक्षुओं एवं भिक्षुणियों हेतु आयोजित हिन्दी प्रशिक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत सप्ताह में दो दिन व्याख्यान प्रदान किये।

ञ. अन्य शैक्षणिक गतिविधियाँ

1. विभाग के एसोशियेट प्रोफेसर डॉ. ठाकुरसेन नेगी 'हेवज्रसाधनवज्रप्रदीपटिप्पणी' नामक ग्रन्थ का भोट पाठ से पाठ-मिलान एवं सम्पादन का कार्य कर रहे हैं।
2. डॉ. बनारसी लाल ने विश्वविद्यालय की 'वार्षिक रिपोर्ट समिति (2012-13)' के अध्यक्ष के रूप में वार्षिक रिपोर्ट के सम्पादन का कार्य सम्पन्न किया।
3. डॉ. विजयराज वज्राचार्य, 'विमलकीर्तिनिर्देशसूत्र' (संस्कृत) के 4-5वें तथा 11वें पटल का भोट की विभिन्न 5 पाण्डुलिपियों के साथ मिलान कार्य सम्पन्न करने में तथा 12वें पटल के मिलान कार्य में अनुवाद एवं पुनरुद्धार विभाग को सहयोग प्रदान कर रहे हैं तथा सम्पादित अंश का कम्प्यूटर में टंकण भी कर रहे हैं।
4. डॉ. बनारसी लाल, 'दिङरीशतक' का हिन्दी अनुवाद तथा उस पर व्याख्या लिख रहे हैं।
5. डॉ. बनारसी लाल, विश्वविद्यालय से प्रकाश्यमान ग्रन्थ 'महायान बौद्धधर्म का साधना-क्रम और काय-व्यवस्था' नामक ग्रन्थ का प्रूफ-संशोधन एवं सम्पादन का कार्य कर रहे हैं।
6. डॉ. रञ्जनकुमार शर्मा, भिक्षु एल. एन. शास्त्री जी द्वारा सौंपे गये 'सुभाषितसंग्रह' तथा शाक्य पण्डित विरचित 'त्रिसंवर प्रभेद नामक शास्त्र' के हिन्दी अनुवाद की भाषा को संशोधित कर रहे हैं।

ट. सर्वेक्षण यात्रा

डॉ. बनारसी लाल तथा श्री ठिनलेराम शाशनी, विश्वविद्यालय के शोध विभाग के अन्य विद्वानों के साथ दिनांक 19.11.2013 से 1.12.2013 तक पटना म्यूजियम में महापण्डित राहुल सांकृत्यायन द्वारा तिब्बत से लाये गये कग्युर, तंग्युर एवं सुङ्बुम की पोथियों तथा अन्य पाण्डुलिपियों के सर्वेक्षण हेतु यात्रा में गये थे तथा दिनांक 31.03.2013 से 4.04.2013 तक डॉ. बनारसी लाल ने राहुल संकलन के 'स्थिति रिपोर्ट' प्रस्तुत करने हेतु गठित समिति के सदस्य के रूप में भाग लेकर रिपोर्ट प्रस्तुत किया। इस यात्रा के दौरान राहुल संकलन में प्राप्त फोटो प्लेटों में उपलब्ध संस्कृत ग्रन्थों का विस्तृत सर्वेक्षण किया तथा उनमें विद्यमान अज्ञात ग्रन्थों को प्रकाश में लाया, जिसकी विस्तृत रिपोर्ट विश्वविद्यालय को प्रस्तुत की गयी।

4. कोश विभाग

कुछ दशक पहले जब महायानी बौद्ध परम्परा के प्रति विश्व-जनमानस में जिज्ञासा उत्पन्न हुई, तब इससे सम्बद्ध वाङ्मय तिब्बती, चीनी आदि प्राच्य भाषाओं तक ही सीमित था। महापण्डित राहुल सांकृत्यायन आदि के प्रयास से कुछ संस्कृत ग्रन्थ पाठकों के सामने आए, किन्तु वे बहुत त्रुटिपूर्ण एवं अपूर्ण थे। उक्त स्थिति को देखते हुये तत्कालीन विद्वानों ने एक बृहत् कार्ययोजना तैयार की, जिसका मुख्य लक्ष्य इस प्रकार थाः– उपलब्ध संस्कृत ग्रन्थों का परिष्कृत संस्करण तैयार करना, विलुप्त संस्कृत ग्रन्थों को उनके तिब्बती अनुवाद की सहायता से पुनः अपने मूल रूप में प्रतिष्ठित करना, प्राच्य भाषाओं में उपलब्ध सामग्रियों का उपयोग करते हुये उच्चस्तरीय शोध कार्य को प्रोत्साहित करना तथा प्राचीन भाषाओं में उपलब्ध बौद्ध वाङ्मय को अर्वाचीन भाषाओं में सुलभ करना।

इस महत्त्वकांक्षी योजना के अन्तर्गत संपादन कार्यों को पूरा करने के लिये विभिन्न प्रकार के कोशों के निर्माण की अवश्यकता का अनुभव किया गया। तदनुसार केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी ने एक बृहत् कोश योजना तैयार की, जिसमें दो प्रकार के कोशों के निर्माण का प्रावधान है, सामान्य और विषयगत कोश। सामान्य कोश के अन्तर्गत विभाग ने भोट-संस्कृत-कोश पर कार्य शुरु किया, जो सोलह भागों में पूरा हुआ। उपलब्ध भोट-संस्कृत-कोशों में यह सबसे बडा कोश है। भोट-संस्कृत धर्मसंग्रह-कोश एवं भोट-संस्कृत सन्दर्भनिर्देशिका-कोश का भी प्रकाशन हो चुका है तथा भोट-संस्कृत छात्रोपयोगी-कोश के निर्माण का कार्य चल रहा है। विषयगत कोश के रूप में भोट-संस्कृत आयुर्विज्ञान-कोश एवं ज्योतिष-कोश का कार्य भी अन्तिम चरण पर है।

विभाग में कार्यरत सदस्य एवं पदनाम-

1. डॉ. रमेशचन्द्र नेगी - प्रोफेसर (कार्यकारी)
2. डॉ. टशी तोपग्यल - शोध सहायक
3. डॉ. टशी छेरिंग - शोध सहायक

4. आचार्य तेन्जिन सिदोन - शोध सहायक
5. आचार्य तेन्जिन नोर्बू - शोध सहायक (संविदा)
6. श्रीमती लोब्संग छोडोन - शोध सहायक (संविदा)

निर्माणाधीन कोश-

आयुर्विज्ञान-कोश :

यह कोश, अष्टाङ्गहृदय एवं इसके भोटानूदित तथा कुछ संस्कृत टीकाओं पर आधारित है। यह कोश अन्तिम चरण में है और आगामी वर्ष तक प्रकाशन के लिये तैयार हो जाएगा। इसे दो भागों में प्रकाशित किया जायेगा।

ज्योतिष-कोश :

यह कोश ज्योतिष एवं खगोल विज्ञान से सम्बन्धित संस्कृत एवं उसके भोटानूदित ग्रन्थों पर आधारित है। पारिभाषिक शब्दों के अर्थों को बताने के लिये शास्त्रीय उद्धरणों को प्रयोग में लिया गया है। ज्योतिष एवं खगोल शास्त्र से सम्बन्धित पारिभाषिक शब्दों एवं इसके प्रयोग के रूप में उद्धरणों का चयन कर लिया गया है। साथ ही चीनी ज्योतिष शास्त्र के पारिभाषिक शब्दों, जिसके संस्कृत ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है, उनका क्रमशः संस्थान के अनुवाद विभाग के भिक्षु लोब्सङ् नोर्बू शास्त्री से परामर्श कर संस्कृत पर्याय देने का कार्य चल रहा है।

भोट-संस्कृत छात्रोपयोगी-कोश :

यह मुख्यतया स्व. जे. एस. नेगी जी के बृहत् भोट-संस्कृत कोश पर आधारित एक सामान्य-कोश है। यह कोश तीन चरणों में सम्पन्न होगा। पहले चरण के रूप में बृहत् भोट-संस्कृत कोश से सरल शब्दों का चयन कर उसके संस्कृत पर्याय दिया जाना है। दूसरे चरण में अन्य आधुनिक कोशों से बोल-चाल के शब्दों का चयन कर संस्कृत पर्याय तथा अन्तिम चरण में संशोधन से सम्बन्धित कार्य होगा। इसके अतिरिक्त भोटी प्रविष्टियों का अंग्रेजी लिप्यन्तरण और उच्चारण भी दिये जायेंगे, जिससे भोट लिपि से अनभिज्ञ छात्र, प्रविष्टि को अंग्रेजी लिप्यन्तरण वा उच्चारण के माध्यम से सरलता पूर्वक जान सके। वर्तमान में द्वितीय चरण का कार्य चल रहा है। यह कोश दो भागों में प्रकाशित होगा। प्रथम भाग के लिये 'द वर्ण' तक के भोटीय प्रविष्टियों का अंग्रेजी लिप्यन्तरण और उच्चारण तथा संस्कृत पर्याय देने का कार्य सम्पन्न हो चुका है।

संस्कृत-भोट शब्दानुक्रमणिका :

यह शब्दानुक्रमणिका बृहत् भोट-संस्कृत-कोश पर आधारित है, जिसे विभाग ने रचना की है। इसमें संस्कृत पदों का तिब्बती पर्याय दिया जाना है। यह उन छात्रों व शोधकर्ताओं के लिये लाभदायक होगा, जो संस्कृत और तिब्बती ग्रन्थों पर काम करते हैं।

फोन्ट रूपान्तरण का कार्य :

विभाग ने शब्द चयन व उद्धरण आदि के लिये कई तिब्बती और संस्कृत ग्रन्थों का कम्प्यूटर में इन्पुट किया है। तिब्बती ग्रन्थ जो मैक के अतिश टी., अतीश एस., अतीश टी. एम., अतीश एस. एम. में विद्यमान है जबकि संस्कृत ग्रन्थ भारती सामान्य और भारती मीडियम में सुरक्षित है। मैक में सुरक्षित इन तिब्बती और संस्कृत ग्रन्थों को पी.सी. यूनिकोड फोन्ट पर रूपान्तरित करना भी विभाग के कार्य योजना में सम्मिलित है, ताकि ये ग्रन्थ सर्वसुलभ हो सके। फलतः विभाग ने 125 तिब्बती और 14 संस्कृत ग्रन्थों को मैक से पी.सी. यूनिकोड फोन्ट पर रूपान्तरित कर लिया है। तिब्बती अंश के प्रथम चरण के संशोधन का भी कार्य सम्पन्न हो चुका है।

भावी योजनाएँ :

1. बौद्ध न्याय कोश।
2. बौद्ध तन्त्र-कोश।
3. संदर्भ-कोश (पाँच तिब्बती संस्करणों का संदर्भ-कोश)
4. नाम-कोश (प्राचीन बौद्ध तीर्थ स्थल एवं विद्वानों के नाम कोश)
5. तिब्बती हिन्दी कोश।
6. ग्रन्थ कोश।
7. क्रिया कोश।

अध्यापन का कार्य :

1. डॉ. रमेशचन्द्र नेगी (कार्यकारी-अध्यक्ष) ने कल्चर एक्सचेंज के अन्तर्गत आये अमेरिकी छात्रों को दिनांक 31.12.2012 से 20.01.2014 तक विपश्यना साधना सिखाया।
2. दिनांक 3.01.2014 को विदेशी छात्रों के लिये आयोजित कार्यक्रम में उन्होंने 'आख्यान दग्-पो के चार धर्म' विषय पर विशेष व्यख्यान प्रस्तुत किया।

अन्य शैक्षणिक गतिविधियाँ :

1. डॉ. रमेशचन्द्र नेगी ने किन्नौर में जुलाई 2013 को परम पावन जी के होने वाले व्याख्यान हेतु 'मोक्षरत्नालंकार' नामक ग्रन्थ का सम्पादन किया।
2. शोध सहायक डॉ. टाशी छेरिङ् ने भोट विद्वान् ङुल्छु थोग्-मेद् द्वारा विरचित 'बोधिचर्यावतारटीका' नामक ग्रन्थ के तिब्बती पाठ का संशोधन व संपादन का कार्य किया।
3. डॉ. रमेशचन्द्र नेगी ने अमेरिकन विदुषी सुश्री लिण्डा के शोध-कार्य में निर्देशन किया।
4. डॉ रमेशचन्द्र नेगी ने डॉ. ठाकुरसेन नेगी के 'बुद्धकपालतन्त्रप्रद्योतन' नामक ग्रन्थ के अनुवाद कार्य में तथा डॉ. छेरिङ् डोलकर के 'चक्रसंवरतन्त्र परम्परा' नामक ग्रन्थ के अनुवाद कार्य में सहयोग दिया।
5. डॉ. रमेशचन्द्र नेगी ने महाकश्यप, महाविहार, रैवत, पूने को मूलमध्यमककारिका ग्रंथ को हिन्दी में अनुवाद करने में सहायता किया।
6. डॉ. टाशी छेरिंग ने 'वैशेषिक दर्शन का सूत्र' नामक ग्रंथ का तिब्बती भाषा में अनुवाद किया।
7. डॉ. टाशी छेरिङ् ने 'पञ्चतन्त्र' नामक ग्रन्थ के लगभग 50 कारिकाओं का तिब्बती में अनुवाद किया।
8. दिनांक 25-26 नवम्बर, 2013 को आचार्य लोबसङ् छोडोन ने लखनऊ के रिजनल साईन्स सिटी द्वारा संस्थान में आयोजित 'Portable Planetarium and Open Sky Watching' नामक प्रोग्राम में भाग लिया।
9. दिनांक 7 दिसम्बर, 2013 को डॉ. टाशी तोपग्याल ने कोलम्बिया विश्वविद्यालय अमेरिका के प्रो. बोब थर्मन की देखरेख में 'तिब्बती शब्दकोश का इतिहास एवं शब्दकोश' नामक शोध कार्य को आगे बढाने का कार्य किया।
10. आचार्य तेन्जिन नोर्बू ने शिक्षा मन्त्रालय, सी.टी.ए., धर्मशाला द्वारा दिनांक 11-19 नवम्बर, 2013 को नेपाल के प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों तथा 10-20 नवम्बर, 2013 को केन्द्रीय तिब्बती विद्यालय के स्नातकों के प्रशिक्षण हेतु आयोजित दो कार्यशालाओं में संयोजक के रूप में कार्य किया।

राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों और कार्यशालाओं में सहभागिता :

1. दिनांक 18-19 मई, 2013 को डॉ. रमेशचन्द्र नेगी ने, डोल्मा फो-टाङ फाउण्डेशन, दिल्ली द्वारा मनाली, हिमाचल प्रदेश में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया तथा "दुःख मुक्ति अर्थात् बोधि की प्राप्ति में विपश्यना का योगदान" नामक शोध-पत्र प्रस्तुत किया।
2. दिनांक 3-5 अक्टूबर, 2013 को केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ एवं इण्डियन काउन्सिल ऑफ फिलोसोफिकल रिसर्च, नई दिल्ली, द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित नेशनल सेमिनार आन "बुद्धिज्म, नियो बुद्धिज्म एण्ड द क्वेश्चन ऑफ कास्ट" विषयक त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में विभाग के सभी सदस्यों ने भाग लिया।
3. दिनांक 17 नवम्बर, 2013 को डॉ. रमेशचन्द्र नेगी ने, रामकृष्ण मिशन, इलाहाबाद द्वारा आयोजित संगोष्ठी में "बौद्ध धर्म के अनुसार सर्वधर्म समभाव" विषय पर व्याख्यान दिया।
4. दिनांक 10-12 दिसम्बर, 2013 को केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय और ज्ञानप्रवाह द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित "नेशनल सेमिनार ऑन बुद्धिस्ट आर्ट एण्ड फिलोसफी" विषयक संगोष्ठी में विभाग के सभी सदस्यों ने भाग लिया।
5. दिनांक 12-15 फरवरी, 2014 को डॉ. रमेशचन्द्र नेगी ने, शाक्यमुनि बुद्ध तपस् फाउण्डेशन, औरंगाबाद में "वज्रयान दर्शन और साधना" विषयक चतुर्दिवसीय कार्यशाला में "साधना कैसे करें?" विषय पर शोध-पत्र प्रस्तुत किया।
6. डॉ. रमेशचन्द्र नेगी ने, सेन्टर फार बुद्धिस्ट स्टडीज आर्य पहिला पी.जी. कालेज चेतगंज, वाराणसी द्वारा 6-12 मार्च, 2014 तक आयोजित "बुद्ध एवं पालि साहित्य" विषयक सप्त-दिवसीय कार्यशाला के दौरान 9 मार्च, 2014 को "पालि साहित्य में विपश्यना" विषय पर शोध-पत्र प्रस्तुत किया।

अन्य संस्थाओं में व्याख्यान :

1. दिनांक 14 सितम्बर, 2013 को हिन्दुस्तार समाचार द्वारा बनारस क्लब, कचहरी में आयोजित "भारतीय भाषाएँ वर्तमान स्थिति, चुनौतियाँ व सम्भावनाएँ" विषयक एक दिवसीय संगोष्ठी में भाग लिया और सम्मानित विद्वान् होने का गौरव प्राप्त किया।
2. अगस्त 2013 को धर्म संगम काशी के निवेदन पर "विश्व की खुशहाली में धर्म-सम्प्रदायों का योगदान" नामक व्याख्यान दिया।
3. विश्वभारती, शान्तिनिकेतन, द्वारा आयोजित "विपश्यना साधना की प्रासंगिकता : एक अध्ययन" विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में डॉ. रमेशचन्द्र नेगी ने सहभागिता किया और पेपर प्रस्तुत किया।

4. शान्तरक्षित ग्रन्थालय

विश्वविद्यालय का शान्तरक्षित ग्रन्थालय एक विशिष्ट ग्रन्थालय है। इस ग्रन्थालय में प्राचीन संस्कृत पाण्डुलिपियों के तिब्बती अनुवाद के रूप में भारतीय बौद्ध-वाङ्मय का समृद्ध संग्रह अपने मौलिक रूप में काष्ठोत्कीर्णत (Xylograph), मुद्रित एवं मल्टीमीडिया ग्रंथों के स्वरूप में विद्यमान है। ग्रन्थालय में विद्यमान ग्रन्थों का यह संग्रह विश्वविद्यालय के उद्देश्यों पर आधारित है, जिसे भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय महत्त्व का संग्रह घोषित किया गया है।

इस ग्रन्थालय का नामकरण प्राचीन नालन्दा महाविहार के प्रसिद्ध भारतीय बौद्ध विद्वान् आचार्य शान्तरक्षित, जिन्होंने बौद्ध धर्म के प्रसार हेतु 8वीं शताब्दी में तिब्बत की यात्रा की थी, के नाम पर हुआ है।

इस ग्रन्थालय में संरक्षित बौद्ध, तिब्बती और हिमालयीय-अध्ययन विषयक ग्रन्थों का समृद्ध संग्रह संसार-भर के विद्वानों के आकर्षण का केन्द्र है। बौद्ध-वाङ्मय की दृष्टि से यह अद्वितीय ग्रन्थालय है।

शान्तरक्षित ग्रन्थालय अत्याधुनिक सूचना तकनीक सुविधाओं से सम्पन्न हैं तथा ग्रन्थालय के संपूर्ण संग्रह की कम्प्यूटरीकृत बहुभाषी ग्रन्थसूची के आधार पर ग्रंथालय सेवाएं प्रदान की जाती है, यह बहुभाषी सूचीपत्रक (ओपेक) विश्वविद्यालय के बेबसाईट (www.cuts.ac.in) पर भी अपलोड कर दिया गया है।

शान्तरक्षित ग्रंथालय विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अन्तर्विश्वविद्यालयी केन्द्र इनफ्लिब्नेट, अहमदाबाद (www.inflibnet.ac.in) द्वारा संचालित इन्फोनेट (ऑन लाइन जर्नल्स योजना) का सदस्य है, जिसके फलस्वरूप अर्थशास्त्र एवं राजनीति की साप्ताहिकी (www.epw.in) स्प्रिंगर से प्रकाशित (www.link.springer.com) ऑन लाइन जर्नल्स तथा आई.एस.आई.डी. (www.isid.org.in), जे.सी.सी.सी. (www.jccc-ugcinfonet.in), और जेस्टोर (www.jstor.org) डेटाबेस, विश्वविद्यालय के इण्टरनेट नेटवर्क का प्रयोग कर मुफ्त में देखें, पढ़ें और डाउन-लोड किए जा सकते हैं।

शान्तरक्षित ग्रन्थालय को टी.सी.आई.पी. (तिब्बती क्लासिक इनपुट परियोजना) के समस्त संसाधनों को ऑनलाइन उपयोग की अनुमति भी प्राप्त है।

मुद्रित और ऑनलाइन प्रलेख के अलावा, ग्रन्थालय माइक्रोफिश, माइक्रोफिल्म और ऑडियो और वीडियो दस्तावेजों के समृद्ध संग्रह का प्रबंधन करता है। ग्रन्थालय तिब्बती साहित्य और संस्कृति के विकास के लिए दलाई लामा फाउंडेशन, धर्मशाला के साथ जुड़ा हुआ है।

ग्रंथालय व्यावसायिकों के कौशल विकास तथा पुस्तकालय सेवाओं और उत्पादों की गुणवत्ता में वृद्धि हेतु वर्ष 2013-14 के दौरान, ग्रन्थालय में दिनांक 23-24 अप्रैल, 2013 को वीडियोग्रॉफी और फोटोग्रॉफी पर द्विदिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया था।

शान्तरक्षित ग्रंथालय के सात प्रमुख अनुभाग हैं –

1. अवाप्ति, तकनीकी एवं इनफ्लिब्नेट अनुभाग।
2. सामयिकी, पत्र-पत्रिका एवं सन्दर्भ अनुभाग।

3. तिब्बती अनुभाग।
4. आदान-प्रदान अनुभाग।
5. संचयागार अनुभाग।
6. मल्टीमीडिया अनुभाग।
7. कम्प्यूटर अनुभाग।

1. अवाप्ति एवं तकनीकी अनुभाग

1.1 ग्रंथ अवाप्ति

(क) ग्रन्थालय के अवाप्ति अनुभाग द्वारा वर्ष 2013-14 में ₹45,68,207.60 मूल्य के कुल 3658 ग्रन्थों की अवाप्ति कर आगम संख्या 100794 से 104480 में पंजीकृत किया गया। इनमें से ₹43,65,958.00 मूल्य के 3032 ग्रंथ खरीदे गये तथा ₹202249.60 मूल्य के 626 ग्रंथ दानस्वरूप एवं विश्वविद्यालय-प्रकाशनों के विनिमय द्वारा प्राप्त हुए।

ग्रन्थालय संग्रह में इस वर्ष जुड़े ग्रन्थों की भाषा क्रमवार तालिका-

क्रं.सं.	**भाषा**	**संख्या**
1.	तिब्बती	1532
2.	संस्कृत	36
3.	हिन्दी	1031
4.	अंग्रेजी	890
5.	बहुभाषी	166
6.	अन्य	3
	योग	**3658**

(ख) इस वर्ष ग्रन्थालय के संग्रह में 133 मल्टीमिडिया प्रलेख सम्मिलित हुए, जिन्हें आगम सं. 21248 से 21380 तक पंजीकृत किया गया, इनमें से ₹1000.00 के 12 मल्टीमिडिया प्रलेख क्रय किये गये तथा शेष 121 दान, विनिमय एवं विश्वविद्यालय में आयोजित विभिन्न शैक्षणिक कार्यक्रमों की रिकार्डिंग कर तैयार किये गये।

1.2 तकनीकी अनुभाग

1. वर्ष 2013-14 में अनुभाग द्वारा कुल 1745 ग्रंथों का वर्गीकरण एवं सूचीकरण कर सामान्य संचयागार में स्थानान्तरित किया गया।
2. डुप्लीकेट चेकिंग एवं स्लिम डेटाबेस में परिग्रहण, बुक प्राप्त रिपोर्ट आदि कार्यों में अवाप्ति अनुभाग की सहायता की गई।
3. स्लिम डेटाबेस में पुस्तकों के डुप्लीकेट परिग्रहण को सुधारने तथा संपादन का कार्य किया गया।
4. त्वरित पाठक सेवाएं प्रदान की गयीं।

2. सामयिकी, पत्र-पत्रिका व सन्दर्भ अनुभाग

2.1 अवाप्ति-

आलोच्य वर्ष 2013-14 में अनुभाग द्वारा 21 जर्नल्स, 26 पत्र-पत्रिकाओं एवं न्यूज क्लिपिंग सेवा की अवाप्ति पर ₹2,73,074.00 व्यय किये गये तथा अनुभाग को 3 जर्नल्स दान स्वरूप व 4 जर्नल्स विश्वविद्यालय प्रकाशनों से विनिमय के फलस्वरुप प्राप्त हुए, जिनका विवरण निम्नवत् है-

क्र.सं.	सामयिकी व्यय	क्रय का प्रकार	शीर्षक	भाग	अंक	मूल्य (₹)
1.	विदेशी सामयिकी	क्रय	9	9	27	1,94,211.00
2.	राष्ट्रीय सामयिकी	क्रय	12	17	47	14,650.00
3.	विनिमय सामयिकी	विनिमय	4	5	9	00.00
4.	आभार स्वरूप		3	4	5	00.00
5.	सामान्य पत्रिकाएं एवं समाचार पत्र (26)	स्थानीय	26	-	-	23,761.00
6.	न्यूज पेपर क्लिपिंग्स	क्रय	1	-	-	40,452.00
	योग		**55**	**35**	**88**	**2,73,074.00**

2.2 सेवाएँ-

1. अनुभाग द्वारा अवाप्त किये गये शैक्षणिक जर्नल्स की 350 लूज इशु को जिल्दबन्दी हेतु तैयार किया गया।
2. वर्ष 2013-14 में 422 जर्नल्स आर्टिकल्स का सूचीकरण कर ग्रन्थालय डेटाबेस में उनका निवेश किया गया, जिसके फलस्वरूप ग्रन्थालय डेटाबेस में जर्नल्स आर्टिकल्स की कुल संख्या 14516 हो गई।

3. तिब्बती अनुभाग

3.1. ग्रन्थालय के अवाप्ति अनुभाग द्वारा इस वर्ष क्रय किये गये तिब्बती भाषा के 1534 ग्रन्थों का सूचीकरण एवं ग्रन्थालय डेटाबेस में उनका निवेश किया गया जिसके फलस्वरूप अनुभाग में पोथियों सहित ग्रंथों की कुल संख्या 29011 हो गई।

3.2. अनुभाग द्वारा संस्थान के शोध अनुभागों, शोध छात्रों, परियोजनाओं तथा अन्य को उनकी माँग के अनुसार विशेष ग्रन्थालय सेवाएँ प्रदान की गयीं।

3.3. काष्ठोत्कीर्णित ग्रन्थों (Xylographs) की जाँच एवं संरक्षण का कार्य किया गया।

3.4 आलोच्य वर्ष में 982 ग्रंथ जिल्बन्दी के पश्चात् वापस संग्रहीत कर दिया गया।

3.5. नये खरीदे गये ग्रंथों की स्लिम डाटाबेस प्रविष्टि की गयी तथा तिब्बती पत्रिकाओं के 389 लेखों की वैश्लेषिक प्रविष्टि की गयी।

3.6 कुल 81 जीर्ण-शीर्ण ग्रंथों को चिन्हित कर राइट-आफ हेतु संस्तुत किया गया।

4. आदान-प्रदान अनुभाग

पंजीकृत पाठकों की संख्या-

विद्यार्थी	508
संकाय सदस्य	061
कर्मचारी	075
अनियत	117
विभाग	009
योग	**770**

4.1 आलोच्य वर्ष में ग्रन्थालय में 770 सदस्यों का पंजीकरण/सदस्यता नवीनीकरण किया गया। जिनमें 508 विद्यार्थी, 61 संकाय सदस्य, 75 अधिकारी/कर्मचारी, 117 अनियत सदस्य एवं 9 विभागीय सदस्य सम्मिलित हैं।

4.2 आदान, प्रदान, आरक्षण आदि से सम्बन्धित 17361 प्रविष्टियों का ग्रन्थालय डेटाबेस में निवेश किया गया।

4.3 वर्ष 2013-14 में कुल 7094 ग्रन्थों का निर्गमन पाठकों द्वारा कराया गया तथा कुल 14811 पाठकों ने ग्रन्थालय का उपयोग किया।

4.4 वर्ष 2013-14 में 63 नये ग्रंथालय सदस्यों का नामांकन किया गया।

5. संचयागार अनुभाग

संचयागार द्वारा प्रदान सेवाओं एवं रख-रखाव के कार्यों का विवरण निम्नलिखित तालिका में प्रस्तुत है-

5.1 सेवाएँ-

1.	संचयागार में आए पाठकों की संख्या (माँग पर्चियों की संख्या के आधार पर)	1191
2.	फलक से निकाले गए ग्रन्थों की संख्या (माँग पर्चियों की संख्या के आधार पर)	1467
3.	अध्ययन-कक्ष से फलक पर व्यवस्थित किए गए ग्रन्थों की संख्या	21591
4	विशेष संग्रहों से प्रदान की गईं पाठक सेवाएं	45

5.2 संग्रह में आए नए ग्रन्थ तथा संचयागार का रख-रखाव-

1.	संग्रह में आए नए ग्रन्थों की संख्या	1762
2.	ट्रांसक्राईब किए गए नए व पुराने ग्रन्थों की संख्या	1894
3.	जिल्दबंदी हेतु निकाले एवं भेजे गए ग्रन्थों की संख्या	232
4.	जिल्दबंदी के पश्चात् प्राप्त ग्रंथों की संख्या	232

6. मल्टीमीडिया अनुभाग

ग्रन्थालय का मल्टीमीडिया अनुभाग, अत्याधुनिक तकनीकी सुविधाओं से सुसज्जित है। यहाँ माइक्रोफिल्म, माइक्रोफिश, आडियो/विडियो कैसेट्स, सी.डी., एम.पी.3 एवं डी.वी.डी. आदि प्रारूपों में प्रलेख उपलब्ध हैं। यह अनुभाग मल्टीमीडिया प्रलेखों की अवाप्ति, संग्रहण व निर्माण कर इन पर आधारित पाठक सेवाएँ प्रदान करता है।

6.1 आडिओ वीडियो एवं फोटो प्रलेखन

आलोच्य वर्ष में विश्वविद्यालय में आयोजित निम्नलिखित कार्यक्रमों की वीडियो रिकार्डिंग कर निम्नलिखित मल्टीमीडिया प्रलेख अनुभाग के संग्रह में सम्मिलित किए गये-

(1) स्नो लायन फाउन्डेशन, नेपाल के अधीन विद्यालयों के प्राथमिक शिक्षकों हेतु सी.टी.ए., धर्मशाला तथा विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित कार्यशाला।

(2) शिक्षा विभाग सी.टी.ए., धर्मशाला तथा विश्वविद्यालय द्वारा विद्यालयों के प्राथमिक शिक्षकों हेतु आयोजित कार्यशाला।

(3) बौद्ध कला और दर्शन पर ज्ञानप्रवाह तथा विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार।

(4) प्रो. माईकल क्रुज का Aims of Interpretation विषयक सेमिनार।

(5) भाषा तथा सांस्कृतिक अध्ययन संस्थान, रायल विश्वविद्यालय, भूटान के संकाय सदस्यों हेतु आयोजित शोध प्रविधि विषयक कार्यशाला।

(6) विश्वविद्यालय के राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा आयोजित काव्य गोष्ठी।

(7) सी.टी.ए., धर्मशाला तथा विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न तिब्बती बौद्ध संप्रदायों व बोन संप्रदाय के शोध छात्रों हेतु शोध प्रविधि विषयक कार्यशाला

(8) विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा आयोजित संस्कृत कवि सम्मेलन।

(9) विश्वविद्यालय तथा आई.सी.पी.आर. नई दिल्ली द्वारा Buddhism, Neo Buddhism and the Question of Caste विषय पर आयोजित राष्ट्रीय गोष्ठी।

(10) प्रो. कमलाकर मिश्रा द्वारा वेदान्त दर्शन विषयक व्याख्यानमाला।

(11) विश्वविद्यालय की छात्र कल्याण समिति द्वारा वरिष्ठ छात्रों हेतु आयोजित कैम्प।

उपर्युक्त कार्यक्रमों की कार्यवाही रिकॉर्ड कर डी.वी.डी. एवं एमपी-3 प्रारूप में सम्पादित कर पाठकों की सेवा हेतु ग्रंथालय में संग्रहीत किया गया।

इसके अतिरिक्त भी विश्वविद्यालय में होने वाले विभिन्न विषयों पर व्याख्यान तथा अन्य बाहर से आने वाले विशिष्ट विद्वानों द्वारा समय-समय पर दिये गये व्याख्यानों को भी रिकॉर्ड कर संग्रह में सम्मलित किया गया है।

6.2 आडिओ कैसेट्स का डिजिटाइजेशन

आलोच्य वर्ष में अनुभाग द्वारा 200 कैसेटों (21शीर्षकों) का एमपी-3 फार्मेट में रूपान्तरण किया गया।

6.3 दुर्लभ पाण्डुलिपियों का डिजिटाइजेशन

1. नारथांग कग्युर के 103 भागों को डिजिटाइज कर पीडीएफ स्वरूप में परिवर्तित किया गया है।

2. नारथांग कग्युर का बहुभाषी सूचीपत्र का संपादन किया गया।
3. माइक्रोफिल्म में संग्रहीत संस्कृत बौद्ध ग्रंथों के 132 शीर्षकों (11545 फोलियो) को स्कैन करके संपादित किया गया तथा पीडीएफ फार्मेट में रूपान्तरित किया गया।
4. वर्ष 1990,1991 और 1993 के लगभग 5146 पृष्ठ न्यूज पेपर क्लिपिंग्स को स्कैन कर पीडीएफ स्परूप में रूपान्तरित किया गया।

6.4 मल्टीमीडिया प्रलेखों का डिजिटल ग्रंथालय

मल्टीमीडिया प्रलेखों के डिजिटल ग्रंथालय की सर्जना हेतु स्लिम के विशेषज्ञों से विस्तार से चर्चा तथा आवश्यकतानुसार परिवर्धन के उपरान्त उनके द्वारा विकसित स्लिम के डी-कोल माड्यूल का प्रयोग प्रारम्भ किया गया। आलोच्य वर्ष 2013-14 में लगभग 50 प्रतिशत आडियो प्रलेखों को ग्रंथालय सर्वर में अपलोड कर वेब ओपेक से जोड़ दिया गया है, जो अब विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर ग्रंथालय ओपेक के माध्यम से आन-लाइन उपलब्ध हैं।

6.5 पाठक सेवाएँ-

(1) अनुभाग द्वारा कुल 118605 फोटोप्रतियाँ की गयी जिसमें से 62059 फोटोप्रतियाँ कार्यालयी व शैक्षणिक उद्देश्य से की गयीं तथा 56546 फोटोप्रतियाँ भुगतान आधारित पाठक सेवाओं के निमित्त की गयीं जिससे अनुभाग को ₹62410.00 प्राप्त हुए तथा मीडिया संग्रह प्रतिलिपिकरण हेतु अनुभाग को ₹1788.00 प्राप्त हुए।

(2) आलोच्य वर्ष में अनुभाग द्वारा 750 पाठकों के माँगे जाने पर मल्टीमीडिया संग्रह पर आधारित पाठक सेवाएं प्रदान की गई।

(3) अनुभाग द्वारा विभिन्न पाठक समूहों के आग्रह पर विशेष वीडिओ शो आयोजित किए गए।

7. कम्प्यूटर अनुभाग

ग्रंथालय के संगणक अनुभाग द्वारा सूचना तकनीक से सम्बन्धित समस्त उपकरणों एवं सेवाओं के क्रय एवं अवाप्ति हेतु अनुशंसा एवं उनका संरक्षण तथा प्रबंधन किया जाता है। साथ ही अनुभाग द्वारा विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों, कर्मचारियों एवं अस्थायी सदस्यों को इण्टरनेट, टेक्स्ट कम्पोजिंग एवं प्रिन्टिंग तथा अन्य कम्प्यूटर आधारित सेवाएँ प्रदान की जाती हैं। अनुभाग द्वारा विश्वविद्यालय के नेटवर्क, साफ्टवेयर, यूपीएस तथा सर्वर आदि का संचालन और अनुरक्षण भी किया जाता है।

आलोच्य वर्ष 2013-14 में अनुभाग द्वारा सम्पादित प्रमुख कार्य निम्नवत् हैं-

7.1 विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों हेतु सी.सी.ए. / डी.सी.ए. पाठ्यक्रम का विधिवत संचालन किया गया।

7.2 अनुभाग द्वारा समस्त इलेक्ट्रानिक उपकरणों सम्बन्धी 301 शिकायतों का निस्तारण किया गया।

7.3 विश्वविद्यालय के परिसर नेटवर्क एवं इन्टरनेट तथा लाइब्रेरी साफ्टवेयर तथा अन्य सम्बन्धित सेवाओं का समुचित प्रबन्धन किया गया।

7.4 छात्रों एवं विश्वविद्यालयी कर्मचारियों की मांग पर कम्प्यूटर सेवाएं उपलब्ध करायी गयीं।

7.5 स्लिम लाइब्रेरी साफ्टवेयर द्वारा संचालित डेटाबेस की समय-समय पर वर्ड इन्डेक्सिंग, बैक अप, अपग्रेडेशन तथा क्लाइंट इंस्टालेशन आदि का कार्य किया गया।

7.6 विश्वविद्यालय के विभिन्न अनुभागों के लिए आवश्यक हार्डवेयर, साफ्टवेयर की क्रय अनुशंसा एवं अनुरक्षण का कार्य सम्पादित किया गया।

7.7 विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित शैक्षणिक कार्यक्रमों में तकनीकी सेवाएं प्रदान की गयीं।

7.8 जुलाई 2013 में एल्गोरिद्म, पुणे के सर्विस इंजीनियर को आमन्त्रित कर स्लिम लाइब्रेरी साफ्टवेयर का अपडेट इंस्टाल कराया गया तथा सम्बन्धित ग्रंथालय कर्मियों को इससे अवगत कराया गया।

अन्य शैक्षणिक गतिविधियाँ-

डॉ. जितेन्द्र कुमार सिंह (तकनीकि अधिकारी / कम्प्यूटर प्रोग्रामर ग्रेड-1)

1. स्कूल ऑफ मैनेजमेन्ट सांइस, वाराणसी द्वारा दिनांक 22-23 फरवरी, 2014 को आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लेकर "सिग्नीफिकेन्स आफ स्किल डेवलपमेण्ट फार इन्फारमेशन सिस्टम आडिट एँड कन्ट्रोल – अ स्टडी" विषयक लेख प्रस्तुत किया।
2. जे.आर.एन. राजस्थान विद्यापीठ (मानित विश्वविद्यालय), उदयपुर द्वारा दिनांक 22-24 नवम्बर, 2013 को आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लेकर "इनक्लाइनेशन टुवर्ड्स इन्फारमेशन सिस्टम आडिट – अ स्टडी" विषयक लेख प्रस्तुत किया।
3. "ई-वेस्ट मैनेजमेण्ट – अ नेसेसिटी" विषयक लेख इण्टरनेशनल जर्नल आफ इकोनामिक्स एण्ड मैनेजेरियल थॉट (द्विवार्षिक प्रकाशन), वाराणसी, 4(1), अप्रैल-सितम्बर 2013, 18-21 पृष्ठ, आई.एस.एस.एन- 2229-3736, में प्रकाशित हुआ।

श्री ठिनले धारग्ये (सिस्टम एडमिनिस्ट्रेटर व लेक्चरर)

1. आई.आई.एस.सी. बंगलौर द्वारा दिनांक 17-19 अक्टूबर, 2013 को आयोजित द्वितीय एन.के.एन. कार्यशाला में सम्मलित हुए।

अन्य गतिविधियाँ

1. जनसूचना इकाई-

प्रलेखन अधिकारी श्री आर. के. मिश्र ने विश्वविद्यालय के जन सूचना अधिकारी का कार्य सम्पादित किया। यह शासकीय नागार्जुन स्नातकोत्तर विज्ञान महाविद्यालय, रायपुर में दिनांक 11-12 सितम्बर, 2013 तक आयोजित महाविद्यालय ग्रंथालयों के कम्प्यूटरीकरण पर आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार में विषय स्थापना वक्तव्य हेतु आमंत्रित किए गए। विषय स्थापना वक्तव्य के अतिरिक्त WINISIS : The CDS/ISIS for Windows विषयक लेख का पाठ भी किया। इन्होंने वसन्त महिला महाविद्यालय, राजघाट, में दिनांक 9 अक्टूबर, 2013 को संकाय सदस्यों हेतु आयोजित कार्यशाला में E-Literacy विषयक व्याख्यान भी प्रदान किया।

2. राजभाषा इकाई-

सहायक ग्रन्थालयाध्यक्ष श्री चन्द्रधरमणि त्रिपाठी ने विश्वविद्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य-सचिव का कार्य सम्पादित किया।

3. क्रय एवं अवाप्ति इकाई-

श्री नवांग छेपक क्रय एवं आवप्ति समिति के सदस्य-सचिव का कार्य सम्पादित किया।

4. संचयागार अनुभाग-

डॉ. डी. पी. सिंह प्रोफेशनल असिस्टेंट, संचयागार अनुभाग अधिकारी विश्वविद्यालय की वार्षिक रिपोर्ट वर्ष 2012-13 के समिति सदस्य के रूप में कार्य किया।

5. प्रशासन

विश्वविद्यालय प्रशासन के मुख्यतः पाँच प्रमुख अंग हैं– सामान्य प्रशासन, कार्मिक प्रशासन, शैक्षणिक प्रशासन, वित्तीय प्रशासन एवं प्रकाशन विभाग। विश्वविद्यालय की प्रमुख प्रशासनिक गतिविधियों को निम्नलिखित संगठन चार्ट के अनुसार संचालित किया जाता है–

कुलपति

कुलसचिव

प्रशासन-1	प्रशासन-2	परीक्षा अनुभाग	अनुरक्षण अनुभाग	वित्त अनुभाग	प्रकाशन विभाग
• शैक्षणिक संवर्ग के कर्मचारियों की पत्रावलियों का रख-रखाव • संगोष्ठी, सम्मेलन तथा कार्यशाला • क्रय एवं अवाप्ति इकाई का पर्यवेक्षण • विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से पत्राचार • शैक्षिक एवं शोध प्रस्तावों/योजनाओं का प्रबंधन संचालन • अन्य शैक्षणिक संस्थाओं/निकायों से पत्राचार • शैक्षणिक एवं शोध सम्बन्धी मामलों में सचिवालयीय सहायता • अन्य प्रशासनिक मामले	• सभी शिक्षणेतर कर्मचारियों की पत्रावलियों का रख-रखाव • कार्मिक नीति • अस्थाई श्रमिकों की व्यवस्था • सभी संवर्ग की अस्थाई एवं तदर्थ नियुक्तियाँ • सेवा शर्तें • वैधानिक मामले • संस्कृति मंत्रालय से पत्राचार • कर्मचारी कल्याण • सुरक्षा • परिवहन • मानक प्रपत्र एवं उनका मुद्रण • अन्य प्रशासनिक मामले	• परीक्षा संचालन हेतु प्रेलखन • परीक्षकों एवं संशोधकों की नियुक्ति • सारणीकरण • प्रश्नपत्र • परिणाम • प्रमाण-पत्र एवं अंकपत्र जारी करना • परीक्षा से सम्बन्धित अन्य मामले	• परिसर का रख-रखाव एवं सफाई • विद्युत एवं जल व्यवस्था • अतिथि-गृह • विद्युत एवं सिविल रख-रखाव • बागवानी • केन्द्रीय भण्डारण एवं वस्तु-सूची • वार्षिक रख-रखाव संविदाएं • रख-रखाव सम्बन्धी अन्य मामले	• बजट • लेखा परीक्षा • वेतन एवं मजदूरी का भुगतान • बिलों का भुगतान एवं अन्य वित्तीय मामले	• भोट-बौद्ध दर्शन के शोधपरक पुनरुद्धार, अनुवाद, मौलिक, व्याख्यायित एवं सम्पादित ग्रन्थों का प्रकाशन • प्रूफ-रीडिंग का कार्य • प्रकाशित ग्रन्थों का विक्रय

केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सोसाइटी पंजीकरण अधिनियम द्वारा पंजीकृत एक मान्य विश्वविद्यालय है, जो संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार से प्राप्त सहायता अनुदान से संचालित है। सोसायटी, प्रबन्ध परिषद्, विद्वत् परिषद्, वित्त समिति, ये चार विश्वविद्यालय के महत्त्वपूर्ण अंग हैं। विश्वविद्यालय के प्रधान कार्यपालक अधिकारी कुलपति हैं, जो कुलसचिव के सहयोग से कार्य सम्पादित करते हैं।

विश्वविद्यालय के महत्त्वपूर्ण निकाय

सोसायटी- सोसायटी, विश्वविद्यालय का सर्वोपरि निकाय है। इसके पदेन अध्यक्ष, सचिव, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार होते हैं। इसके सदस्यों की संख्या परिशिष्ट-2 में दी गई है।

अधिशासी बोर्ड- विश्वविद्यालय के कुलपति, प्रबन्ध परिषद् के पदेन अध्यक्ष होते हैं। परिषद् के सदस्य, संस्कृति मन्त्रालय भारत सरकार, परम पावन दलाई लामा जी एवं विश्वविद्यालय के कुलपति द्वारा मनोनीत होते हैं। सदस्यों की सूची परिशिष्ट-3 में दी गयी है।

विद्वत् परिषद्- विश्वविद्यालय की विद्वत् परिषद् एक महत्त्वपूर्ण निकाय है, जो शैक्षणिक मामलों में दिशा-निर्देश करती है। विश्वविद्यालय के कुलपति, इसके भी पदेन अध्यक्ष होते हैं। सदस्यों की सूची परिशिष्ट-4 में दी गई है।

वित्त समिति- यह समिति विश्वविद्यालय के वित्तीय मामलों एवं अनुमानित बजट की संवीक्षा करने के साथ-साथ विश्वविद्यालय के लिए अनुदान की भी संस्तुति करती है। विश्वविद्यालय के कुलपति, इसके अध्यक्ष होते हैं। अन्य सदस्य, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा नामित होते हैं। सदस्यों की सूची परिशिष्ट-5 में प्रस्तुत की गयी है।

योजना एवं प्रबोधक परिषद्- यह परिषद् विश्विद्यालय की योजनाओं की रूपरेखा तथा उसकी निगरानी (मॉनिटेरिंग) करती है। सदस्यों की सूची परिशिष्ट-6 में दी गई है।

विश्वविद्यालय को प्राप्त अनुदान

विश्वविद्यालय का प्रशासन अनुभाग मुख्यतः सामान्य प्रशासन, कार्मिक प्रशासन, शैक्षणिक प्रशासन एवं वित्तीय प्रशासन तथा सहायक सेवाओं का संचालन, रख-रखाव एवं नियंत्रण करता है। विश्वविद्यालय को वर्ष 2013-2014 में संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा निम्नलिखित अनुदान प्राप्त हुए–

		प्राप्त अनुदान	**व्यय**
गैर-योजना	-	₹ 1270.00 लाख	₹ 1368.84 लाख
योजनान्तर्गत	-	₹ 750.00 लाख	₹ 750.00 लाख

इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा वर्ष 2013-14 में ₹ 50.00 लाख का अनुदान भी प्राप्त हुआ, जिसमें ₹ 63.87 लाख व्यय किया गया।

प्रकाशन अनुभाग

प्रकाशन अनुभाग विश्वविद्यालय के उद्देश्यों के अनुसार भोट-बौद्ध दर्शन के शोधपरक ग्रन्थों का प्रकाशन एवं विक्रय करता है। अनुभाग से बौद्ध धर्म एवं दर्शन से सम्बद्ध शोध-विषयक, पुनरुद्धार, अनुवाद, मौलिक, व्याख्यायित एवं सम्पादित ग्रन्थ प्रकाशित होते हैं।

विश्वविद्यालय द्वारा स्थापित व संचालित शोध विभाग एवं शोध योजनाएं ही प्रकाशन-सामग्री के मुख्य स्रोत हैं। बाहरी विद्वानों द्वारा भोट-बौद्ध दर्शन पर विरचित एवं सम्पादित शोध ग्रन्थों को भी प्रकाशित किया जाता है। प्रकाशित ग्रन्थों पर बाहरी विद्वानों को निर्धारित दर पर मानदेय प्रदान किया जाता है। अब तक प्रकाशित ग्रन्थों में मुख्य रूप से भोट-बौद्ध दर्शन के उच्चस्तरीय, बहुभाषी, शोधपरक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ रहे हैं।

सम्प्रति निम्नलिखित नौ ग्रन्थमालाओं के अन्तर्गत विश्वविद्यालय के ग्रन्थ प्रकाशित हो रहे हैं। इनके अतिरिक्त सन् 1986 से प्रारम्भ दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध पत्रिका 'धीः' के अब तक 53 अंक प्रकाशित हो चुके हैं। शोध-पत्रिका धीः विगत 25-26 वर्षों से लगातार प्रकाशित होती रही है। कोश सीरीज के अन्तर्गत भोट संस्कृत कोश के अब तक सम्पूर्ण 16 अंक प्रकाशित हो चुके हैं। इसके अलावा कोश सीरीज द्वितीय एवं तृतीय के अन्तर्गत भी दो कोश ग्रन्थों का प्रकाशन किया गया है। वर्ष 2012 में "Neyartha-Nitarth" सीरीज नामक एक नई श्रृंखला शुरू की गयी।

ग्रन्थमालाएँ-

ग्रन्थमालाओं के शीर्षक निम्नलिखित हैं-

(1) **भोट-भारतीय ग्रन्थमाला-** नागार्जुन, असंग आदि प्राचीन भारतीय विद्वानों के ग्रंथों का संकलन का प्रकाशन इस ग्रंथमाला के तहत प्रकाशित हुए।

(2) **दलाई लामा भोट-भारती ग्रन्थमाला-** चार तिब्बती बौद्ध प्रथाओं के प्राचीन विख्यात तिब्बती विद्वानों के ग्रंथों का प्रकाशन इस ग्रंथमाला के तहत हुआ।

(3) **सम्यक्-वाक् ग्रन्थमाला-** कई संगोष्ठियों को शोधपत्र का संकलन का प्रकाशन इस ग्रंथमाला के माध्यम से हुआ।

(4) **सम्यक्-वाक् विशेष ग्रन्थमाला-** स्व. प्रो. ए. के. शरण के महत्त्वपूर्ण कार्यों का संकलन का प्रकाशन इस ग्रंथमाला के माध्यम से सम्पन्न हुआ।

(5) **व्याख्यान ग्रन्थमाला-** विभिन्न प्रख्यात विद्वानों के आमंत्रित वक्तव्य, व्याख्यान और विचारों का संकलन इस ग्रंथमाला में प्रकाशित हुए।

(6) **दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थमाला-** दुर्लभ बौद्ध ग्रंथ एवं शोध इस विश्वविद्यालय का एक अनुभाग है। इस अनुभाग के अन्तर्गत सदस्यों के दुर्लभ बौद्ध ग्रंथ तथा तांत्रिक ग्रंथों पर कार्य का एक संकलन इस ग्रंथमाला के तहत प्रकाशित हुआ।

(7) **अवलोकितेश्वर ग्रन्थमाला-** परम पावन दलाई लामा जी के कई प्रवचनों का तिब्बती और अंग्रेजी भाषाओं से हिन्दी भाषा के अनुवाद किये गये और संकलित रूप में इस ग्रंथमाला में प्रकाशित भी किये गये।

(8) **विविध-ग्रन्थमाला-** इस ग्रंथमाला के तहत विषय के विशेषज्ञों द्वारा अनुमोदित विश्वविद्यालय की प्रकाशन समिति द्वारा संकलित रूप में इस ग्रंथमाला के तहत प्रकाशित किये गये।

(9) **'धीः' दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध-पत्रिका-** 'धीः' दुर्लभ बौद्ध ग्रंथ एवं शोध विभाग का एक शोध-पत्रिका है। इस अनुभाग के सदस्यों का यह एक सम्मिलित प्रयास है। इसकी शुरुआत सन् 1986 में हुई और इसके कई सारे अंकों के प्रकाशन हो चुके हैं।

(10) **कोश ग्रन्थमाला-** इस ग्रंथमाला के तहत तिब्बती-संस्कृत कोश के 16 अंकों का प्रकाशन सम्पन्न हुआ और धर्मसंग्रह-कोश का एक अंक भी प्रकाशित हुआ।

(11) भोट-मंगोलिया ग्रन्थमाला- एनड्रीव बाज़ारब द्वारा संकलित की गई कई तिब्बती पाण्डुलिपि और काष्ठ चित्रों की एक सूची इस ग्रंथमाला के तहत प्रकाशित हुई।

(12) नेयार्थ-नीतार्थ ग्रन्थमाला- यह ग्रंथमाला सन् 2012 से प्रकाशित हो रहा है। चोंखापा के 'नेयार्थ-नीतार्थ सुभाषितसार' पर यह एक सम्पादन का शोध कार्य है। इसके अन्तर्गत कई तिब्बती विद्वानों के संबंधित ग्रंथ एवं टिप्पणी भी सम्पादित व प्रकाशित होंगे।

उपर्युक्त बारह ग्रन्थमालाओं में विश्वविद्यालय के प्रकाशन मौलिक, व्याख्यायुक्त, शोधपूर्ण बौद्धग्रन्थ, संस्कृत-पुनरुद्धार, अनुवाद, सम्पादन, हिन्दी, भोट, संस्कृत एवं आंग्ल भाषाओं में प्रकाशित हैं। पालि, अपभ्रंश एवं चीनी भाषा में कुछ ग्रन्थ मूल व अनुवाद रूप में प्रकाशित हैं। अधिकतर ग्रन्थों की भाषा मिश्रित (दो या दो से अधिक भाषाएं) हैं।

प्रकाशन की कार्य प्रकृति

प्रकाशन की कार्य प्रकृति निम्नलिखित हैः-

(क) महत्त्वपूर्ण किताबों की समीक्षात्मक सम्पादन

(ख) बौद्ध ग्रन्थों का संस्कृत भाषा में पुनरुद्धार

(ग) बौद्ध ग्रन्थों का हिन्दी/तिब्बती/संस्कृत भाषा में अनुवाद का कार्य

(घ) बौद्ध दर्शन एवं तिब्बती अध्ययन के विभिन्न संगोष्ठियों के शोधपत्रों का सम्पादन

(ङ) बौद्ध दर्शन, तिब्बती भाषा एवं अन्य विषयों पर मौलिक शोध कार्य

प्रकाशन की भाषा

निम्नलिखित भाषाओं में प्रकाशन का कार्य सम्पन्न होता हैः-

(क) संस्कृत, (ख) हिन्दी, (ग) तिब्बती, (घ) पालि, (ङ) अंग्रेजी, (च) विभिन्न भाषा।

मार्च 2014 तक लगभग 226 शीर्षक प्रकाशित हो चुके हैं। इसके अतिरिक्त 'धीः' दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध पत्रिका के 53 अंक तथा भोट-संस्कृत कोश के 16 अंक भी प्रकाशित हैं। कोश सीरीज-2 के अन्तर्गत 'धर्मसंग्रहकोश' तथा कोश सीरीज-3 के अन्तर्गत 'कोनकोर्डेन्स ऑफ टिबेटन एण्ड संस्कृत टेक्स्ट' नामक ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं।

लगभग डेढ़ दर्जन से अधिक ग्रन्थ जो आउट ऑफ प्रिन्ट हो चुके हैं, इनमें कुछ का पुनर्मुद्रण हुआ है तथा कुछ का संशोधित-परिवर्द्धित संस्करण भी प्रकाशित हो चुका है।

नये प्रकाशन

इस आलोच्य वर्ष में निम्नलिखित नए ग्रन्थ प्रकाशित किए गए-

1. 'धीः' दुर्लभ बौद्ध ग्रंथ शोध पत्रिका, अंक 53
2. धर्मसंग्रह (अंग्रेजी, संस्कृत तथा तिब्बती) (रिप्रिन्ट), अनुवादक- टशी जङ्मो एवं देछेन छिमी
3. नेयार्थ-नीतार्थ सीरीज-1 (तिब्बती), सम्पादक- प्रो. गेशे येशे थबखे
4. नेयार्थ-नीतार्थ सीरीज-2 (तिब्बती), सम्पादक- प्रो. गेशे येशे थबखे
5. नेयार्थ-नीतार्थ सीरीज-3 (तिब्बती), सम्पादक- प्रो. गेशे येशे थबखे
6. धम्मपद (तिब्बती, पालि तथा अंग्रेजी), अनुवादक - डॉ. वङ्छुग दोर्जे नेगी
7. मुक्तालतावदानम् (तिब्बती, हिन्दी तथा अंग्रेजी) (संशोधित संस्करण), सम्पादक- डॉ. पेमा तेनजिन

विक्रय से प्राप्त धनराशि

इस वित्तीय वर्ष 2013-2014 में प्रकाशित ग्रन्थों के विक्रय से इस विभाग ने ₹ 4,37,100.00 (₹ चार लाख, सैंतीस हजार, एक सौ) की धनराशि अर्जित की।

प्रकाशित ग्रन्थों का विनिमय

विश्वविद्यालय के प्रकाशनों का देश-विदेश के प्रकाशनों से विनिमय-वितरण किया जा रहा है। 'प्रकाशन-विनिमय-योजना' के अन्तर्गत राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के उपयोगी प्रकाशन हमें प्राप्त होते हैं, जो विश्वविद्यालय के ग्रन्थालय में संग्रहीत कर रखे जाते हैं तथा यहाँ के अध्ययन-अध्यापन में काफी उपयोगी होते हैं। सम्प्रति निम्नलिखित विश्वविद्यालयों से हमारे प्रकाशनों का आदान-प्रदान हो रहा है–

1. डेर यूनिवर्सिटेट, वियना, ऑस्ट्रिया
2. अन्तर्राष्ट्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान, टोकियो, जापान
3. इण्डिका एट टिबेटिका, वेरलाग, जर्मनी
4. हैम्बर्ग यूनिवर्सिटेट, हैम्बर्ग, जर्मनी
5. ड्रेपुंग लोसेलिंग लाइब्रेरी सोसायटी, मुण्डगोड, कर्नाटक
6. गादेन शार्त्से ड्राछांग, मुन्डगोड, कर्नाटक
7. अडयार लाइब्रेरी एण्ड रिसर्च सेण्टर, अडयार, चेन्नई
8. टिबेट हाउस, नई दिल्ली
9. आई. जी. एन. ए. सी., नई दिल्ली
10. केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, चोगलमसर, लेह लद्दाख (यह प्रकाशन-विनिमय-योजना 2012 से प्रारम्भ की गयी। दोनों संस्थानों में प्रकाशित ग्रन्थों का विनिमय निरन्तर किया जायेगा।)

सामान्य प्रकाशनों के विनिमय के अतिरिक्त राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की शोध-पत्रिकाओं से भी हमारी शोध-पत्रिका 'धीः' का आदान-प्रदान वर्ष भर किया गया। इस वर्ष विनिमय योजना के अन्तर्गत निम्नलिखित पत्रिकाएं प्राप्त हुईं-

1. ईस्ट एण्ड वेस्ट (रोम, इटली)
2. हावर्ड जर्नल ऑव एशियाटिक स्टडीज (कैम्ब्रिज, यू.एस.ए.)
3. धर्मा वर्ल्ड (टोक्यो, जापान)
4. ड्रेलोमा (मण्डगोड)
5. बुलेटिन ऑव डेकन कालेज (पुणे)
6. इण्डियन फिलॉस्फिकल क्वार्टली (पूना विश्वविद्यालय, पूना)
7. जर्नल ऑव ओरियण्टल इंस्टीट्यूट, (ओरियण्टल इंस्टीट्यूट, बड़ौदा)
8. प्राची ज्योति (कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र)
9. बुलेटिन ऑव टिबेटोलॉजी (सिक्किम शोध संस्थान, गंगटोक)
10. अन्वीक्षा (जाधवपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता)
11. शोधप्रभा (श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली)
12. एनल्स ऑफ दि भण्डारकर ओरियण्टल रिसर्च इंस्टीट्यूट (पुणे)
13. बुलेटिन डी इट्यूडे इंडीन्नीस (पेरिस, फ्रान्स)

प्रकाशन समिति

विश्वविद्यालय के प्रकाशनों के मुद्रण व प्रकाशन पर विचार-विमर्श व निर्णय करने हेतु एक उच्चस्तरीय प्रकाशन समिति का गठन किया जाता है, जिसमें प्रकाशन कार्य से सम्बद्ध कुछ बाहरी विशेषज्ञ सदस्यों सहित विश्वविद्यालय के विशिष्ट विद्वानों, अधिकारियों व विभागाध्यक्षों को भी शामिल किया जाता है। सम्प्रति इसमें कुल दस सदस्य हैं। विश्वविद्यालय के कुलपति इस समिति के पदेन अध्यक्ष हैं। समिति के सदस्यों की सूची परिशिष्ट-7 में दी गई है।

अतिरिक्त कार्य

विभाग ने प्रकाशन के अतिरिक्त गैर विभागीय कुछ प्रकाशन कार्य, वार्षिक रिपोर्ट मुद्रण, परीक्षा विभाग की डिग्री, विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह और विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के कई अन्य विविध सामग्रियों के मुद्रण आदि में सहयोग किया।

6. गतिविधियाँ

विश्वविद्यालय की शैक्षणिक गतिविधियाँ

शैक्षिक वर्ष 2013-14 में विश्वविद्यालय द्वारा निम्नलिखित शैक्षणिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गयाः-

1. प्रवेश परीक्षाओं का आयोजन

विश्वविद्यालय बौद्धधर्म दर्शन, सोवा-रिग्पा, ज्योतिष, फाइन आर्टस्, एम. फिल. एवं विद्यावारिधि के पाठ्यक्रमों को संचालित करता है तथा इन पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए समय-समय पर प्रवेश परीक्षाएं आयोजित करती है। वर्ष 2013-14 के नये सत्र के लिए पूर्व मध्यमा, सोवा-रिग्पा तथा फाइन आर्टस् में प्रवेश के लिए प्रवेश परीक्षाएं दिनांक 2-4 जुलाई, 2013 को विश्वविद्यालय में आयोजित की गईं। एम. फिल कक्षा के लिए प्रवेश परीक्षा दिनांक 20-21 जनवरी, 2014 को आयोजित की गई।

2. शैक्षिक संकाय के सदस्यों के लिए अंग्रेज़ी भाषा का विशेष कक्षाओं का आयोजन

विश्वविद्यालय के शैक्षणिक संकाय के उन सदस्यों के लिए जो परम्परागत रूप से महाविहारों से अध्ययन पूर्ण कर के आएं हैं, उन्हें अंग्रेज़ी भाषा का सामान्य ज्ञान प्राप्त हों तथा जो सदस्य थोड़ा बहुत जानते हैं। उन्हें, उसमें प्रवीणता लाने के लिए विश्वविद्यालय ने अप्रैल 2013 के प्रथम सप्ताह से 21 मई, 2013 तक अंग्रेज़ी भाषा की विशेष कक्षाओं का आयोजन किया। एतदर्थ मि. फिलिप गिब्सन को अध्यापन के लिए विश्वविद्यालय में निमन्त्रित किया गया। उन्होंने प्रतिदिन दो-दो कक्षाएं लेकर इसे पूर्ण किया।

3. रॉयल युनिवर्सिटी ऑफ भूटान के शैक्षिक दल का आगमन

रॉयल विश्वविद्यालय, भूटान, के भाषा एवं संस्कृति अध्ययन संस्थान के 15 सदस्यीय दल 10 दिन के अध्ययन के लिए 20 से 29 जनवरी 2014 तक विश्वविद्यालय में प्रवास किये। उनके प्रवास के दौरान विश्वविद्यालय के विद्वानों के साथ अपने शोध योजनाओं पर काम किये तथा उसके साथ अनुभव संचय करने के लिए विश्वविद्यालय के कक्षाओं में भी सभी प्रतिभागी उपस्थित रहे। उनके लिये विश्वविद्यालय में "बौद्ध एवं तिब्बती अध्ययन में शोध" नामक कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसको विश्वविद्यालय के संकाय एवं शोध विद्वानों ने संचालित किया।

4. राजभाषा कार्यान्वयन समिति की गतिविधियाँ

भारत सरकार के राजभाषा अधिनियम के अनुसार विश्वविद्यालय में राजभाषा हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग को उद्देश्य को दृष्टि में रखकर राजभाषा कार्यन्वयन समिति का गठन किया गया है। इस समिति द्वारा वर्ष भर में अनेक प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है, जैसे कार्यशाला, वाद-विवाद, पत्र लेखन, व्याख्यान, कार्यालीय टिप्पणी एवं राजभाषा हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य करने वाले कर्मचारियों को पुरस्कृत करने इत्यादि का कार्य। इस समिति द्वारा वर्ष 2013-14 में विश्वविद्यालय के कर्मचारियों के लिए आयोजित कार्यक्रम निम्नलिखित हैं-

(क) कार्यशाला का आयोजन

दिनांक 08-06-2013 तथा 20-03-2014 को राजभाषा कार्यन्वयन समिति द्वारा विश्वविद्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए एक दिवसीय राजभाषा विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया।

(ख) राजभाषा हिन्दी सप्ताह का आयोजन

समिति द्वारा दिनांक 14.09. 2013 से 18.09.2013 तक विश्वविद्यालय में राजभाषा हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया। इसके अन्तर्गत दिनांक 18.09.2013 को विश्वविद्यालय में कवि गोष्ठी का आयोजन किया गया। दिनांक 14.09.2013 को "राजभाषा का महत्त्व" विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता, दिनांक 16.09.2013 को "पर्यावरण" विषय पर लेखन प्रतियोगिता तथा दिनांक 17.09.2013 को "बदलते परिवेश में राजभाषा का योगदान" विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया तथा वर्ष 2011-12 में हिन्दी में अधिक एवं उत्कृष्ट कार्य करने वाले तीन कर्मचारियों को नगद पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

(ग) विश्वविद्यालय में दिनांक 08.10.2013 को राजभाषा विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन हुआ, जिसमें श्री राकेश कुमार, उप-निदेशक (कार्यन्वयन), भारत सरकार, गृह मन्त्रालय, राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यालय (उत्तरप्रदेश) का व्याख्यान सम्पन्न हुआ।

(घ) दिनांक 21-12-2013 को राजभाषा समिति ने "कार्यालयी टिप्पणी एवं पत्र लेखन" विषय पर विश्वविद्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया।

5. शैक्षणिक आदान-प्रदान कार्यक्रम

केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय अन्य अनेक विदेशी एवं भारतीय संस्थाओं के साथ शैक्षणिक आदान-प्रदान का कार्यक्रम आयोजित करता है । इस कार्यक्रम के अन्तर्गत दूसरे विश्वविद्यालयों के छात्र एवं अध्यापक विश्वविद्यालय में आते हैं और विश्वविद्यालय के अध्यापक अन्य विश्वविद्यालयों में अध्यापन कार्यों के लिए भेजे जाते हैं। सम्प्रति विश्वविद्यालय निम्नलिखित संस्थाओं के साथ शैक्षणिक आदान-प्रदान का कार्यक्रम संचालित करती है । तस्मानिया विश्वविद्यालय, आस्ट्रेलिया, मैसाच्युसेट के पाँच कालेज, अमेरिका, वोंकवांक डिजिटल विश्वविद्यालय, दक्षिण कोरिया, इंटरनेशनल इंस्टीच्यूट ऑफ हायर टिबेटन स्टडीज़, आस्ट्रिया, इमोरी विश्वविद्यालय, अमेरिका, इन्स्टीट्यूट ऑफ मंगोलियन, बुद्धिस्ट एण्ड तिब्बतन स्टडीज ऑफ द साइबेरियन ब्रांच ऑफ द रसियन अकेदमी ऑफ साइंस, ऊलन-उडे, लबसुम बुद्धिस्ट कालेज एसोसियेशन ऑफ रिपब्लिक ऑफ चाइना, ताईवान, यूनिवर्सिटी ऑफ पुने, पुने, तथा इन्दिरा गांधी मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।

(क) पश्चिमी मैसाच्युसेट के पाँच कालेजों के दल का आगमन

इस वर्ष शैक्षणिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अन्तर्गत दिनांक 29 दिसम्बर, 2013 से 20 जनवरी, 2014 तक अमेरिका के मैसाच्युसेट के पाँच कालेजों के छात्रों एवं अध्यापकों के दल का विश्वविद्यालय में आगमन हुआ। इस अवसर पर विश्वविद्यालय में उनके लिए "बौद्धधर्म दर्शन और तिब्बती संस्कृति" पर विशेष पाठ्यक्रम संचालित किया गया। इस पाठ्यक्रम में विश्वविद्यालय के अध्यापकों ने उन छात्रों को अध्यापन का कार्य किया तथा वहाँ के संकाय के अध्यापकों ने विश्वविद्यालय के छात्रों एवं अध्यापकों के लिए विशिष्ट व्याख्यान दिए।

(ख) वोंकवांग डिजिटल विश्वविद्यालय, दक्षिण कोरिया के सदस्यों का आगमन

प्रतिवर्ष की भान्ति इस शैक्षणिक वर्ष में भी वोंकवांग डिजिटल विश्वविद्यालय, दक्षिण कोरिया के दल का शैक्षणिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अन्तर्गत विश्विविद्यालय में आगमन हुआ। यह कार्यक्रम विगत कई वर्षों से संचालित हो रहा है । विश्वविद्यालय नियमित रूप से वहाँ के छात्रों एवं अध्यापकों के लिए बौद्धदर्शन, योग, सोवा रिग्पा एवं साधना आदि विभिन्न विषयों पर सीमित अवधि का पाठ्यक्रम संचालित करता है। जिसमें उपर्युक्त विषयों पर विश्वविद्यालय के अध्यापक अध्यापन का कार्य करते हैं। इस शैक्षणिक सत्र में उक्त विश्वविद्यालय के छात्रों एवं अध्यापकों का दल दिनांक 8 फरवरी से 12 फरवरी, 2014 तक विश्वविद्यलय में आयोजित उपर्युक्त पाठ्यक्रम में सम्मिलित हुए।

(ग) इन्टरनेशनल इंस्टीच्यूट ऑफ हायर टिबेटन स्टड़ीज़, आस्ट्रिया का यात्रा

शैक्षणिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अन्तर्गत केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय से अध्यापकों एवं शोध विभाग के सदस्यों को इन्टरनेशनल इंस्टीच्यूट ऑफ हायर टिबेटन स्टड़ीज़, आस्ट्रिया भेजा जाता है। इस शैक्षणिक वर्ष में शोध विभाग के डॉ. पेन्पा दोर्जे, मई 2013 से जुलाई 2013 तक उक्त संस्थान में गए और वहाँ तिब्बती भाषा एवं साहित्य का अध्यापन कार्य सम्पन्न किया। इसी सातत्य में विश्वविद्यालय के कुलपति गेशे ङवङ् समतेन दिनांक 17-29 सितम्बर, 2013 तक उक्त संस्थान में गए और "बुद्धिस्ट फिलॉसफी एण्ड़ स्प्रिच्युअलटी" विषय पर आयोजित सघन पाठ्यक्रम के अन्तर्गत वहाँ के छात्रों और अध्यापकों को अध्यापन किया।

6. विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित विशिष्ट व्याख्यान

(क) प्रो. जोसे केबेज़ोन का व्याख्यान

1. दिनांक 06-09-2013 को युनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया, सन्ता बारबारा, यू. एस. ए. के 14वें दलाई लामा चेयर इन बुद्धिज़्म एण्ड कल्चरल स्टड़ीज़ के प्रोफेसर प्रो. जोसे केबेज़ोन का "बुद्धिज़्म इन द वेस्ट" विषय पर व्याख्यान आयोजित हुआ। इसमें विश्वविद्यालय के समस्त संकाय के सदस्यों, शोध विभाग के सदस्यों, शोध छात्र एवं छात्र छात्राओँ ने भाग लिया

2. दिनांक 14-09-2013 को इस शृंखला में युनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया, सन्ता बारबारा, यू. एस. ए. के 14वें दलाई लामा चेयर इन बुद्धिज़्म एण्ड कल्चरल स्टड़ीज़ के प्रोफेसर प्रो. जोसे केबेज़ोन का "हिस्ट्री ऑफ रिइनकारनेशन लिनेज (स्कु ठेंग)" विषय पर व्याख्यान आयोजित हुआ। इसमें विश्वविद्यालय के समस्त संकाय के सदस्यों, शोध विभाग के सदस्यों एवं शोध छात्रों ने भाग लिया।

(ख) डॉ. जॉन विन्सेन्ट बेलेज़ा का व्याख्यान (John Vincent Bellezza)

दिनांक 22 नवम्बर, 2013 को विख्यात पुरातत्त्ववेत्ता एवं सांस्कृतिक-इतिहासज्ञ प्रो. जॉन विन्सेन्ट बेलेज़ा का "प्रि-बुद्धिस्ट हिस्ट्री ऑफ टिबेट" विषय पर विश्वविद्यालय में व्याख्यान आयोजित हुआ। इसमें विश्वविद्यालय के समस्त अध्यापकों एवं छात्रों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

(ग) डॉ. लोसंग रपगे का व्याख्यान

दिनांक 2-4 जनवरी, 2014 को युनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया, लॉस एंजेल्स, यू. एस. ए. के रिसर्च सायक्लोजिस्ट और डायरेक्टर ऑफ द स्टडी ऑन सस्टेन्ड एटेन्शन, वर्किंग मेमोरी एण्ड मेटा-कॉगनिशन इन एन्ज़ायटी डिस्आर्डर एण्ड लर्निंग के प्रोफेसर डॉ. लोसंग रपगे का "इन्ट्रोडक्शन टू न्यूरो-साइंस ऑफ सस्टेन्ड एटेन्शन फ्रॉम द बुद्धिस्ट एण्ड वेस्ट कॉगनेटिव साइंस पर्सपेक्टिव" विषय पर तीन व्याख्यान विश्वविद्यालय में आयोजित किये गए। इस

व्याख्यानमाला में विश्वविद्यालय के समस्त संकाय के सदस्यों, शोध विभाग के सदस्यों एवं शोध छात्रों ने भाग लिया।

(घ) प्रोफेसर माईकल क्राउस का व्याख्यान-

दिनांक 21.01.2014 को "एम्ज़ ऑफ इन्टरप्रेटेशन" विषय पर एक लघु परिचर्चा सत्र का आयोजन किया गया। इसमें बनारस के विभिन्न संस्थाओं से विद्वानों को निमन्त्रित किया गया। गोष्ठी में ब्रायन मावर कालेज, यू. एस. ए., प्रोफेसर माईकल क्राउस, सी. नाहम प्रोफेसर ऑफ फिलॉसफी ने "द आईडियाज़ एण्ड ऐमज़ ऑफ इन्टरप्रेटेशन" विषय पर अपना विद्वत्ता पूर्ण शोधपत्र प्रस्तुत किया। इस लघु गोष्ठी में विश्वविद्यालय के संकाय के सदस्यों, शोध विभाग के सदस्यों एवं शोध छात्रों ने भी भाग लिया।

(ङ) प्रोफेसर कमलाकर मिश्र का वेदान्त दर्शन पर व्याख्यान

दिनांक 31.12.2013 तथा 20.01.2014 को वेदान्त दर्शन के प्रख्यात विद्वान् प्रो. कमलाकर मिश्र का वेदान्त दर्शन विषय पर व्याख्यान का आयोजन विश्वविद्यालय में किया गया। यह व्याख्यान भारतीय दर्शनों एवं बौद्धदर्शन के मध्य प्राचीन संवाद परम्परा को पुनः स्थापित करने की दृष्टि से आयोजित किया गया। व्याख्यान के पश्चात् व्यापक विचार-विमर्श भी सम्पन्न हुआ। इस व्याख्यानमाला में विश्वविद्यालय के समस्त संकाय के सदस्यों, शोध विभाग के सदस्यों, शोध छात्रों एवं छात्र छात्राओं ने भाग लिया।

7. संस्कृत कवि सम्मेलन का आयोजन

विश्वविद्यालय का संस्कृत भाषा विभाग वर्ष भर में छात्रों के लिए विविध प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन करता है, जैसे संस्कृत में भाषण, नाटकों का मंचन, आशु कविता रचना आदि ताकि छात्रों को शास्त्रीय ज्ञान के साथ-साथ संस्कृत भाषा का व्यवहारिक ज्ञान भी मिल सके। इसी क्रम में विभाग द्वारा दिनांक 29.03 2014 को संस्कृत कवि सम्मेलन आयोजित किया। इसकी अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति गेशे ङवङ् समतेन ने की। इसमें प्रो. शिवजी उपाध्याय ने मुख्य अतिथि पद विभूषित किया। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ तथा इस विश्वविद्यालय के विद्वानों कवियों ने सुन्दर, मधुर कविताओं की प्रस्तुति की। इस अवसर पर संस्कृत वाद-विवाद, भाषण तथा निबन्ध लेखन आदि विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजयी छात्रों को पुरस्कार वितरित किया गया।

8. संगोष्ठी एवं कार्यशालाओं का आयोजन

(क) दिनांक 3-5 अक्टूबर, 2013 को केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय ने इंडियन काउंसिल ऑफ फिलॉसिफिकल रिसर्च, (आई. सी. पी. आर.) के साथ मिलकर विश्वविद्यालय में "बुद्धिज़्म, न्यू बुद्धिज़्म एण्ड द क्वेश्चन ऑफ कास्ट" विषय पर त्रिदिवसीय अखिल भारतीय सेमिनार का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में भारत के विभिन्न शिक्षा संस्थाओं के विद्वानों ने भाग लिया तथा अपने शोध-पत्र प्रस्तुत किए।

(ख) दिनांक 10-12 दिसम्बर, 2013 को केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय और ज्ञान-प्रवाह, नगवां, वाराणसी द्वारा संयुक्त रूप से "बुद्धिज़्म : ऑर्ट एण्ड फिलॉसफी" विषय पर त्रिदिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया। इस त्रिदिवसीय संगोष्ठी के सत्र दोनों संस्थानों में सम्पन्न हुए। इस अखिल भारतीय संगोष्ठी में भारतवर्ष के विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों एवं विश्वविद्यालयों के विद्वानों ने भाग लिया तथा अपने शोधपूर्ण पत्र प्रस्तुत किए।

(ग) शोध-पद्धति पर कार्यशाला

दिनांक 12.3.2014 से 16.3.2014 तक शोध पद्धति विषय पर विश्वविद्यालय के सहयोग से धर्म और संस्कृति विभाग, केन्द्रीय तिब्बती प्रशासन, धर्मशाला ने विभिन्न महाविहारों से चयनित वरिष्ठ गेशे एवं खेनपो लोगों के लिए परम्परागत अध्ययन में शोध की नयी दृष्टि विकसित करने के लिए आधुनिक शोध पद्धति विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें विश्वविद्यालय के शैक्षणिक सदस्यों, शोध विभाग के सदस्यों तथा साथ में वाराणसी के विभिन्न संस्थाओं से निमन्त्रित विद्वानों का शोध पद्धति विषय पर व्याख्यान सम्पन्न कराए गए।

(घ) टी. जी. टी. एवं पी. जी टी. अध्यापकों का प्रशिक्षण कार्यशाला

दिनांक 11-19 नवम्बर, 2013 को शिक्षा विभाग, केन्द्रीय तिब्बती प्रशासन, धर्मशाला की ओर से टी.जी.टी एवं पी.जी.टी.अध्यापकों के लिए एक कार्यशाला का आयोजन विश्वविद्यालय में सम्पन्न हुआ। इस आयोजन में विश्वविद्यालय के अध्यापकों ने रिसोर्स-परसन के रूप में योगदान दिया।

(ङ) मोंटेसेरी अध्यापकों के लिए कार्यशाला

दिनांक 3-8 नवम्बर, 2013 को निर्वासित तिब्बती सरकार, शिक्षा विभाग, केन्द्रीय तिब्बती प्रशासन, धर्मशाला की ओर से नेपाल के स्नो लाईन फाउण्डेशन के अन्तर्गत मोंटेसरी विद्यालयों के अध्यापकों हेतु एक कार्यशाला का आयोजन विश्वविद्यालय में सम्पन्न हुआ।

(च) बुद्ध जयन्ती समारोह एवं परिचर्चा सत्र का आयोजन

दिनांक 25 मई, 2013 को विश्वविद्यालय के परिसर में बुद्ध जयन्ती समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर "आज के युग में बौद्धधर्म" विषय पर विद्वत् परिचर्चा सत्र का भी आयोजन किया गया। इस परिचर्चा सत्र की अध्यक्षता प्रो. गेशे ङवङ् समतेन ने की। परिचर्चा में प्रो. एन.एच. समतानी, डॉ. लालजी श्रावक, प्रो. पी.पी. गोखले तथा प्रो. रामशंकर त्रिपाठी ने भाग लिया तथा विद्वत्तापूर्ण स्थापनाएं प्रस्तुत कीं।

9. तारा स्तोत्र का पाठ

विश्वविद्यालय अपने उद्देश्यों के अनुरूप अनेक सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक आयोजनों को समय-समय पर सम्पन्न करता है तथा अपने मौलिक चरित्र, परम्परा एवं संस्कृति के संरक्षण के लिए सदा सचेत है। बौद्ध परम्परा एवं शास्त्रों के अनुसार बौद्ध शास्त्रों, स्तोत्रों एवं बुद्धवचनों के पढ़ने, लिखने एवं पाठ करने तथा कराने का अत्यधिक महत्त्व है। इसके वाचन से पुण्य का संचय होता है और उस पुण्य को विश्वशान्ति एवं प्राणियों के कल्याण के लिए परिणामित कर दी जाती है। इसी परम्परा में दिनांक 17-18 मार्च, 2014 को विश्वविद्यालय के अध्यापकों, छात्रों एवं कर्मचारियों ने सामूहिक रूप से "तारा स्तुति" का पाठ किया।

10. सोशल मीडिया एण्ड ग्लोबल एक्सचेंज कोर्स-वर्क

"सोशल मीडिया एण्ड ग्लोबल एक्सचेंज कोर्स-वर्क" अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर छात्रों का कार्यक्रम है। इसके अन्तर्गत छात्रों को स्थानीय स्तर पर ग्रुप बनाकर, वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से सोशल मीडिया के वर्तमान चुनौतियों का सामना करने एवं उनको हल करने का अवसर प्रदान करता है।

वाशिंगटन विश्वविद्यालय (अमेरिका) के प्रो. ग्रेग तुके (Greg Tuke) विगत अनेक वर्षों से इस विषय पर छात्रों के साथ कार्य कर रहे हैं। वे वाशिंगटन विश्वविद्यालय की तरफ से संयोजक के रूप में कार्य किये और इस विश्वविद्यालय की तरफ से डॉ. टाशी छेरिंग (एस), अध्यक्ष, हेतु एवं अध्यात्म विद्या संकाय, संयोजक के रूप में इस कोर्स-वर्क में कार्य किये। प्रो. तुके ने अपने अनुभव को विश्वविद्यालय के छात्रों के साथ बाँटने की इच्छा व्यक्त की, तदनुसार जनवरी, 2014 में वे विश्वविद्यालय में आए और यहाँ के छात्रों को विशेषकर सोशल मीडिया के परिप्रेक्ष्य में मानवीय मूल्यों, सांस्कृतिक और सामाजिक समस्याओं का किस प्रकार समाधान किया जा सकता है, इस विषय पर अपने महत्त्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत किए और विश्वविद्यालय के करीब 20 छात्रों को इस कोर्स-वर्क से सम्बद्ध किया।

11. गेन-एक्स्पीरियेंस-ह्वाइल-लर्न स्कीम

केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय का प्रयास है कि यहाँ विद्यार्थी अत्यन्त सादगी एवं पवित्र महौल में अध्ययन करें। विश्वविद्यालय में अध्ययन करते हुए विद्यार्थी शास्त्रों के सैद्धान्तिक पक्षों का अध्ययन करते हुए शास्त्रों में

प्रतिपादित मानवीय जीवन के मूल्यों एवं परम्परगत जीवन मूल्यों का भी व्यावहारिक जीवन में आचरण में लाएं। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागीय कार्यालयों, अनुभागों एवं विभागों में अध्ययन के दौरान अंशकालिक कार्य करते हुए कार्य-संस्कृति का अनुभव भी प्राप्त करें। इस उद्देशय को परिपूर्ण करने के लिए विश्वविद्यालय ने अपने छात्रों को अध्ययन करते हुए अंशकालिक रूप में विश्वविद्यालयके विभिन्न कार्यालयों तथा अनुभाग एवं विभागों में प्रतिदिन 2 घण्टे कार्य करने का अवसर प्रदान किया, ताकि छात्रों का अपना अध्ययन भी प्रभावित न हों। इस स्कीम के अन्तर्गत विभिन्न चरणों में दो-दो छात्रों को शान्तरक्षित पुस्तकालय में कार्य करने के लिए नियोजित किया गया।

12. छात्रों का ग्रीष्मकालीन अध्यापन-प्रशिक्षण योजना

विश्वविद्यालय अनेक वर्षों से इच्छुक छात्रों को तिब्बती समुदाय और भारतीय हिमालयी क्षेत्रों के लोगों को बौद्धधर्म दर्शन एवं तिब्बती भाषा के अध्यापन के लिए भेजता है। इसमें छात्रों को सामुदायिक कार्यों में भागीदारी के साथ-साथ अध्यापन करने का भी अनुभव मिलता है, जो उनके भावी जीवन के लिए महत्त्वपूर्ण होता है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत बौद्धधर्म दर्शन, इतिहास और तिब्बती भाषा इत्यादि का अध्यापन करते हैं। विगत वर्षों की भान्ति इस सत्रान्त के ग्रीष्म अवकाश में चार दलों में विभाजित कर छात्रों के दल दोनदेनलिङ टिबेटन सेटलमेंट कोलेगल, जिला- चामराजनगर, कर्नाटक, फुन्चोक लिङ टिबेटन सेटलमेंट, जिला- गजपत्ति, ओडिसा, टशी स्कूल, काठमाण्डू, नेपाल और नोरज़ेलिङ टिबेटन सेटलमेंट, बन्डारा, महाराष्ट्र में भेजे गए। इसके लिए छात्रों को विश्वविद्यालय की ओर से पारिश्रमिक तथा आनुषाङ्गिक व्यय के लिए उचित धनराशि प्रदान किए गए।

कुलपति महोदय के शैक्षणिक कार्यक्रम एवं गतिविधियाँ

वर्ष 2013-14 में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गेशे ङवङ् समतेन के शैक्षणिक कार्यक्रमों एवं अन्य गतिविधियों का विवरणः-

1. दिनांक 6 अप्रैल, 2013 को राजश्री स्कूल्ज़ ऑफ मैनेजमेंट एण्ड टेक्नोलॉजी, वाराणसी के निमन्त्रण पर वहाँ आयोजित राष्ट्रीय सेमीनार "डायमेंशनज़ ऑफ वर्क कल्चर इन इंडिया" के समापन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए तथा समापन व्याख्यान प्रदान किया।
2. दिनांक 13 अप्रैल, 2013 को डी. ए. वी.कालेज वाराणसी में आयोजित "गांधीयन थॉट ऑन सोशल अस्पेक्ट" विषयक राष्ट्रीय सेमीनार का उद्घाटन किया तथा उद्घाटन व्याख्यान प्रदान किया।
3. दिनांक 23 मई, 2013 को नई दिल्ली में सेन्ट्रल इंस्टीच्यूट ऑफ हिमालयन कल्चर स्टडीज़, दाहुंग अरुणाचल प्रदेश के बोर्ड ऑफ गवर्नर्ज़ की मीटिंग में भाग लिया।
4. दिनांक 5-7 जून, 2013 को डिपार्टमेंट ऑफ एजुकेशन, सेन्ट्रल टिबेटन एडमिनिस्ट्रेशन धर्मशाला द्वारा आयोजित प्रथम एजुकेशन एडवायजरी कमेटी की मीटिंग में भाग लिया।
5. दिनांक 25-27 जुलाई, 2013 को पुणे महाराष्ट्र में आयोजित परम पावन दलाई लामा जी के प्रवचन में सम्मिलित हुए एवं सहयोग किये। पूने में दूसरे कार्यक्रमों का उन्होंने परिवेक्षण किया।
6. दिनांक 4-9 अगस्त, 2013 को प्रेज़ीडेंट इन्टरनेशनल फेडरेशन ऑफ फिलॉसाफिकल सोसायटीज़ तथा अध्यक्ष 23वीं वर्ल्ड कांग्रेस ऑफ फिलॉसफीज़ के निमन्त्रण पर एथेंस, ग्रीक में 23वीं वर्ल्ड कांग्रेस ऑफ फिलॉसफी में भाग लिया तथा "बुद्धिस्ट फिलॉसफी" सत्र की अध्यक्षता की और "एफ्रो एशियन फिलॉसफी" सत्र के राउंड टेवल कान्फ्रेंस में सम्मिलित हुआ।

7. दिनांक 8-9 सितम्बर तथा दिनांक 16-17 नवम्बर, 2013 को नयी दिल्ली में नालन्दा ट्रेडीशन डॉक्युमेंटरी फिल्म का रिव्यू तथा सम्पादन किया।

8. दिनांक 17-29 सितम्बर, 2013 को इन्टरनेशनल इंस्टीच्यूट ऑफ हायर टिबेटन स्टडीज़, आस्ट्रिया के निमन्त्रण पर आस्ट्रिया गये और "बुद्धिस्ट फिलॉसफी एण्ड स्प्रिच्युअलटी" पर आयोजित सघन पाठ्यक्रम का वहाँ के अध्यापकों और छात्रों को अध्यापन किया तथा वियाना सिटी के विद्वानों एवं विविध शैक्षणिक संस्थाओं द्वारा आयोजित कार्यक्रम में व्याख्यान प्रदान किया।

9. दिनांक 13-14 नवम्बर, 2013 को "नालन्दा ट्रेडीशन ऑफ बुद्धिज्म इन एशिया" विषय पर टिबेट हाउस (द कल्चरल सेंटर ऑफ हिज होलिनेस द दलाई लामा), इन्दिरा गांधी सेन्टर फार आर्टस तथा विनय के. बहल फिल्मज़, दिल्ली द्वारा संयुक्त रूप से आयेजित राष्ट्रीय सेमिनार में भाग लिया तथा "फिलॉसफी ऑफ नालन्दा एण्ड प्रोमिनेंट सेंट स्काऑलर्ज़ ऑफ नालन्दा" चर्चा सत्र की अध्यक्षता की। इस संगोष्ठी में उन्होंने 'नालन्दा ट्रेडिसन प्रिजर्व्ड बाई टिबेट' विषय पर व्याख्यान दिया।

10. दिनांक 1 दिसम्बर, 2013 को डालिम्स सनबीम स्कूल, वाराणसी में मुख्य अतिथि के रूप में वार्षिक समारोह "स्टारलिट विज़न 2020-IV" और साइंस एक्ज़ीविसन का उद्घाटन किया तथा इस अवसर पर छात्रों, अध्यापकों के सम्बोधित किया।

11. दिनांक 5 दिसम्बर, 2013 को एजुकेशन डिपार्टमेंट, उत्तर प्रदेश सरकार के निमन्त्रण पर राज्य स्तरीय खेल प्रतियोगिता का उद्घाटन किया तथा उक्त अवसर पर प्रतिभागियों को सम्बोधित किया।

12. दिनांक 10 दिसम्बर, 2013 को केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय सारनाथ और ज्ञान प्रवाह, नगवां वाराणसी द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी "बुद्धिज्म: आर्ट एण्ड फिलॉसफी" के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की और अध्यक्षीय उद्बोधन दिया।

13. दिनांक 13 दिसम्बर, 2013 को विहार सरकार के निवेदन पर कग्युर, तन्युर और सुङबुम के हिन्दी अनुवाद की योजना तैयार करने के लिए आहूत एक-दिवसीय बैठक में भाग लिया तथा अनुवाद का प्रारूप तैयार किया गया।

14. दिनांक 18 दिसम्बर 2013 को एसेसिएशन ऑफ इंडियन युनिवर्सिटीज़ और एसोचेम के संयुक्त तत्त्वाधान में आयोजित नेशनल कान्फ्रेंस "राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान : चैलेंजेस एण्ड ओपोरचुनीटीज़ फॉर हायर एजुकेशन इंस्टीच्युशन्ज़" में भाग लिया।

15. दिनांक 20-21 दिसम्बर, 2013 को ताइवान से आए दल को बुद्धिस्ट फिलॉसफी एण्ड स्प्रिचुअल्टी पर व्याख्यान दिया।

16. दिनांक 28 दिसम्बर, 2013 को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष के निमन्त्रण पर विज्ञान भवन, नयी दिल्ली में आयोजित यू. जी. सी . के डायमंड जुबली फंकशन में भाग लिया।

17. दिनांक 2-3 जनवरी, 2014 को डॉ. लोसंग रबगे, रिसर्च सायक्लोजिस्ट तथा डायरेक्टर SSAWMMADL, डिपार्टमेंट ऑफ साइक्याट्री, युनिवर्सिटि ऑफ केलिफोर्निया, अमेरिका का व्याख्यान माला "इन्ट्रोडक्शन टू न्युरो-साइंस ऑफ सस्टेंड एटेंशन फ्रॉम ए बुद्धिस्ट एण्ड वेस्ट कोग्निटिव साइंस पर्सपेक्टिव" की अध्यक्षता की, जिसमें विश्वविद्यालय के अध्यापकों एवं छात्रों ने भाग लिया।

18. दिनांक 6 जनवरी, 2014 को सदस्य के रूप में नेशनल मोनीटरिंग कमेटी फार मायनोरीटीज़ एजुकेशन के वार्षिक मीटिंग में भाग लिया।

19. दिनांक 9 जनवरी, 2014 को येले नुस कालेज, सेन्टर फॉर इन्टरनेशनल एण्ड प्रोफेशनल एक्सप्रेरिएंस कालेज, सिंगापुर के सिनियर प्रोग्राम मैनेजर मिस्टर ङ तेंग कुआन दोनों संस्थाओं के मध्य शैक्षणिक विनिमय पर विचार करने के लिए विश्वविद्यालय में आए और कुलपति महोदय से इस विषय पर चर्चा की।

20. दिनांक 12-15 जनवरी, 2014 को रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर तथा केन्दीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ के द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी "फिलॉसफी ऑफ नागार्जुन" में भाग लिया तथा उक्त गोष्ठी के उद्धाटन सत्र में बीज-व्याख्यान प्रस्तुत किया। सेमीनार का उद्धाटन परम पावन दलाई लामा जी ने किया।

21. दिनांक 20 जनवरी, 2014 को विश्वविद्यालय में वेदान्त दर्शन पर आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला की अध्यक्षता की। इस कार्यशाला का आयोजन मूलशास्त्र और सम्प्रदायशास्त्र विभाग ने किया, इसमें विश्विद्यालय के अध्यापकों एवं छात्रों ने भाग लिया।

22. दिनांक 21 जनवरी, 2014 को विश्वविद्यालय में आयोजित एक दिवसीय संगोष्ठी "एम्ज़ ऑफ इनटरप्रेटेशन" की अध्यक्षता की। इस संगोष्ठी में ब्रिन मावर कालेज, अमेरिका के प्रोफेसर माईकल क्रउस ने "द आईडियलस एण्ड एम्ज़ ऑफ इनटरप्रेटेशन" पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया तथा विश्विद्यालय के अध्यापकों एवं छात्रों ने इस में भाग लिया।

23. दिनांक 23 जनवरी, 2014 को इंडिया-भूटान फाउंडेशन, थिम्पु सेक्रेटिएट, एम्बेसी ऑफ इंडिया के संयुक्त प्रायोजिकत्व में इंस्टीच्यूट ऑफ लैंग्वेज एण्ड कल्चरल स्टडीज़, रायल युनिवर्सिटि ऑफ भूटान के अध्यापकों के दल को सम्बोधित किया, जो विश्वविद्यालय में दस दिनी शैक्षिक यात्रा में आए हुए थे।

24. दिनांक 26 जनवरी, 2014 को गणतन्त्रता दिवस के अवसर पर कुलपति महोदय ने ध्वजोत्तोलन किया तथा इस अवसर पर विश्वविद्यालय के अध्यापकों, कर्मचारियों और छात्रों को सम्बोधित किया।

25. दिनांक 1 फरवरी, 2014 को आई. आई. टी. , बी. एच. यू. द्वारा आयोजित कान्फ्रेंस "साइंस एण्ड स्प्रिचुअल क्वेस्ट" में भाग लिय तथा "इन्टेग्रेटिंग स्प्रिचुअलिटि इन एजुकेशन" नामक सत्र की संयुक्त रूप से अध्यक्षता की। इस संगोष्ठी में 'इन्टीग्रेटिंग स्प्रिचुअलिटी इन एड्डुकेशन' विषय पर उन्होंने व्याख्यान दिया।

26. दिनांक 11 फरवरी, 2014 को वोङकोंग विश्वविद्यालय, दक्षिण कोरिया के अध्यापकों एवं छात्रों को विश्वविद्यालय में "एजुकेशन एण्ड स्प्रिचुअलिटि" विषय पर व्याख्यान प्रदान किया।

27. दिनांक 19 फरवरी, 2014 को एसोचेम द्वारा आयोजित राष्ट्रीय कान्फ्रेंस "एक्सीलेंस इन एजुकेशन" में भाग लिया।

28. दिनांक 20 फरवरी, 2014 को निदेशक इलाहाबाद म्युजियम, मिनिस्टरी ऑफ कल्चर के निवेदन पर "नागार्जुनाज़ फिलॉसफी ऑफ शून्यता" पर व्याख्यान प्रदान किया, जिसमें इलाहाबाद के अनेक वरिष्ठ विद्वान् एवं गणमान्य लोगों ने भाग लिया।

29. दिनांक 28 फरवरी, 2014 को सेन्टर ऑफ रिलीजन एण्ड सोसायटी, भोपाल द्वारा आयोजित द्वितीय इन्टरनेशनल कान्फ्रेंस ऑन "धर्म-धम्म" में भाग लिया।

30. दिनांक 12 मार्च, 2014 को डिपार्टमेंट ऑफ रिलीजन एण्ड कल्चर, सेन्ट्रल टिबेटन एडमिनिस्ट्रेशन, धर्मशाला द्वारा केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय के सहयोग से आयोजित "शोध पद्धति" विषयक कार्यशाला का उद्घाटन किया तथा प्रतिभागियों को उद्बोधन किया।
31. दिनांक 15 मार्च, 2014 को धर्मचक्र इण्डो-वर्ल्ड बुद्ध थीम कल्चरल सोसायटी, सारनाथ द्वारा आयोजित "विश्व शान्ति की अवधारणा औऱ आज का समय" विषयक गोष्ठी की अध्यक्षता की तथा इस अवसर अपना व्याख्यान प्रदान किया।
32. दिनांक 21-23 मार्च, 2014 को नयी दिल्ली में आयोजित परम पावन दलाई लामा जी के मति शोधन का आठ गाथा तथा सैंतीस बोधिसत्त्व हस्तग्राह्य अनुष्ठान के प्रवचन में सम्मिलित हुआ।
33. दिनांक 29 मार्च, 2014 को डॉ. वी.सी. झा के नेतृत्व में नेशनल एटलस एण्ड थीमेटिक मेपिंग, डिपार्टमेंट ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, भारत सरकार से आए दल से भेंट किया तथा उन्हें बौद्ध पुरातात्त्विक स्थलों के एटलस तैयार करने के लिए दिशा निर्देश प्रदान किया।

छात्रों की गतिविधियाँ

1. एस. डब्ल्यू. एफ. सी.

विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के सामुदायिक कार्य विश्वविद्यालय के नियमानुसार छात्र-कल्याण परिषद् (एस. डब्ल्यू. एफ. सी.) द्वारा संचालित किये जाते हैं। इस परिषद् की स्थापना 1972 में हुई थी। इसके द्वारा छात्रों को सांस्कृतिक, शैक्षिक एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी विषयों में जागरूकता तथा इस दिशा में कार्य करने के लिए अवसर प्रदान किया जाता है। इसके सदस्यों का चुनाव प्रतिवर्ष लोकतांत्रिक ढंग से किया जाता है। वर्तमान, 42वीं छात्र-कल्याण परिषद् के पदाधिकारी निम्नलिखित हैं–

क्र.सं.	नाम	पद	कक्षा
1.	पेम्बा नोर्बू शेर्पा	अध्यक्ष	शास्त्री (तृतीय)
2.	शेरब लोडो	उपाध्यक्ष	शास्त्री (तृतीय)
3.	ङवङ् टशी	महासचिव	शास्त्री (तृतीय)
4.	छेरिंग छोइक्यी	कोषाध्यक्ष	बी.एस.एम.एस. (चतुर्थ)
5.	दोर्जे थकछोइ	सहायक कोषाध्यक्ष	आचार्य (प्रथम)
6.	लोब्संग तेन्यल	शिक्षा सचिव	शास्त्री (तृतीय)
7.	लोसंग डोलमा	सांस्कृतिक सचिव	शास्त्री (तृतीय)
8.	योनतन फुनचोक	चिकित्सा प्रभारी	शास्त्री (तृतीय)
9.	शेरब वङ्ग्ज़ल	क्रीडा प्रभारी	शास्त्री (तृतीय)

परिषद् के उद्देश्य

- विद्यार्थियों के कल्याण तथा ज्ञानवर्धन के निमित्त संसाधनों का प्रबन्ध करना।
- अतिरिक्त कक्षाओं, वाद-विवाद प्रतियोगिताओं, शिविरों, कार्यशाला आदि के आयोजन द्वारा विद्यार्थियों में रचनात्मक अभिरुचि एवं स्वस्थ शैक्षणिक परिस्थिति पैदा करना।
- विख्यात भारतीय एवं विदेशी विद्वानों को निमन्त्रित कर व्याख्यान सम्पन्न करना।
- विद्यार्थियों के लिए चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी सुविधाएँ उपलब्ध कराना।
- यक्ष्मा एवं अन्य गम्भीर रोगों से पीड़ित विद्यार्थियों को चिकित्सा हेतु आर्थिक सहायता की व्यवस्था करना।
- छात्रों को इन्टर-नेट में शिक्षा, स्वास्थ्या एवं टेक्नोलॉजी आदि विषयों के प्रति जागरूकता का प्रचार-प्रसार करना।
- विश्वविद्यालय के शैक्षणिक एवं पर्यावरण के विकास के लिए छात्रों के सुझावों का संकलन करना।
- विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए आउट-डोर तथा इन-डोर खेलों जैसे फुटबाल, बास्केट-बाल, टेबल-टेनिस इत्यादि का प्रतियोगिताओं का आयोजन करना तथा उसके लिए व्यवस्था करना।

1. वर्ष 2013-14 में आयोजित कार्यक्रम

(क) परिषद् ने दिनांक 2-4 अगस्त, 2013 को विश्वविद्यालय में पूर्वमध्यमा प्रथम वर्ष में प्रविष्ट नये छात्रों के लिए समर कैम्प का आयोजन किया। इस शिविर में परम्परागत एवं आधुनिक विषयों के शिक्षण का केन्द्र होने से नये छात्रों को बोन सहित चारों भोट सम्प्रदायों, भोट भाषा एवं साहित्य, पर्यावरण तथा विश्वविद्यालय के गठन इत्यादि का परिचय दिया गया।

(ख) परिषद् ने दिनांक 12-14 सितम्बर, 2013 को विश्वविद्यालय के वरिष्ठ छात्रों के लिए विशेष शिविर का आयोजन किया। इस अध्ययन शिविर में विश्वविद्यालय के अध्यापकों सहित बाहरी संस्थाओं के लब्ध-प्रतिष्ठ विद्वानों को निमन्त्रित किया गया तथा विविध शास्त्रीय विषयों, दर्शन तथा आधुनिक विषयों पर व्याख्यान आयोजित किए गए। परिचर्चा के विविध सत्रों में छात्रों को अपने विचार प्रस्तुत करने एवं विचार-विमर्श का अवसर प्रदान किया गया।

(ग) दिनांक 4 सितम्बर, 2013 को परिषद् ने प्रख्यात विद्वान् डॉ. रचेल ब्राउन तथा डॉ. एण्ड्रयू बम्बेर का "बौद्ध एवं दर्शन का सम्बन्ध" विषय पर व्याख्यान आयोजित किया।

(घ) दिनांक 10-25 अक्टूबर, 2013 को परिषद् ने विश्वविद्यालय के वरिष्ठ छात्रों के लिए शैक्षिक-यात्रा का आयोजन किया, इसके अन्तर्गत छात्रों ने भूटान की यात्रा की और वहाँ के शैक्षणिक संस्थाओं के छात्रों के साथ आपसी ज्ञान का आदान-प्रदान किया तथा भूटान में स्थित महत्त्वपूर्ण बौद्ध स्थलों का दर्शन किया।

(ङ) छात्रों के स्वास्थ्य एवं तन्दुरुस्ती को दृष्टि में रखते हुए विभिन्न प्रकार के खेल, जैसे फुटबाल, बास्केट बाल इत्यादि के प्रतियोगिता का आयोजन किया।

(च) विश्वविद्यालय के कुलपति एवं अध्यापकों की उपस्थिति में एक माह के लिए ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण योजना में गए छात्रों के अनुभवों को बतलाने के लिए परिषद् ने सभा का आयोजन किया।

2. रिग-लब छात्र पत्रिका का प्रकाशन एवं कार्यशाला का आयोजन

छात्रों का रिग्-लब सम्पादकीय मण्डल द्वारा वर्ष में दो बार रिग्-लब पत्रिका प्रकाशित की जाती है। आज तक इसके 21 अंक प्रकाशित हो चुके हैं। इसका मुख्य उद्देश्य भोट संस्कृति की सुरक्षा तथा छात्रों में लेखन-कौशल का विकास करना है। एतदर्थ प्रतिवर्ष उपर्युक्त उद्देश्यों के अनुसार वर्कशाप का भी आयोजन किया जाता है, जिसमें बाहरी संस्थाओं से विख्यात् विद्वानों को आमन्त्रित किया जाता है। इस वर्ष विशेष रूप से पू.म. प्रथम से शास्त्री तृतीय वर्ष के छात्रों के मध्य तिब्बती भाषा में कवि गोष्ठी एवं प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

3. नाट्य-कला छात्र संगठन

विश्वविद्यालय में नाट्य-कला छात्र संगठन की स्थापना सन् 2004 में की गई थी। इसके मुख्य उद्देश्यों का विवरण इस प्रकार है-

(1) तिब्बत का सांस्कृतिक और पारम्परिक गीत एवं नृत्य के संरक्षण के लिए नृत्य एवं गायन प्रतियोगिताओं का आयोजन करना।

(2) हिमालयी क्षेत्रों के धर्म, संस्कृति एवं परम्परा के संरक्षण के लिए आयोजन करना।

(3) छात्रों को प्रतिभा-प्रदर्शन का अवसर प्रदान करना।

(4) विशिष्ट तिब्बती संस्कृति के विकास के लिए छात्रों को जागरूक करना।

(5) विभिन्न पवित्र उत्सवों के अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करना, जैसे नववर्ष एवं दलाई लामा का जन्म दिवस आदि।

(6) नवीन पीढ़ी को तिब्बती संस्कृति का ज्ञान प्रदान करना।

4. समाजसेवा जनकल्याण स्वयंसेवक संघ

विश्वविद्यालय में छात्रों का एक स्वयंसेवक संघ है। यह संघ समाज के प्रगति एवं सर्वाङ्गीण उत्थान के लिए प्रतिबद्ध है, तथा अतीत में मानव-समाज के उत्कृष्ट एवं महत्त्वपूर्ण दृष्टि एवं आचार-संहिता पर आधारित है। साथ ही समाज में व्याप्त मानव-सृजित सम्प्रदायवाद, सिद्धान्तवाद, जातिवाद, लिङ्गभेद, पर्यावरण प्रदूषण आदि अनेक प्रकार की विषमतायें हैं, उनसे ऊपर उठकर मनुष्यमात्र के दायित्व का बोध कराना है। यह संघ समाज के उत्तरदायित्व और पर्यावरण संरक्षण आदि निम्नलिखित उद्देश्यों के लिए गठित है-

- सामाजिक उत्थान के लिए विचार और आचरण दोनों में मौलिक परिवर्तन लाना।
- समाज में साक्षात् हानि पहुँचाने वाले सभी कार्यों का प्रतिरोध एवं निषेध करना।
- नयी पीढ़ी के युवाओं को सही मार्गदर्शन देना और अनैतिक क्रिया-कलापों से दूर रखने का प्रयास करना।
- मद्य तथा उत्तेजक पदार्थों के सेवन तथा काममिथ्याचार का प्रतिरोध एवं निषेध करना।
- पर्यावरण प्रदूषण को रोकने के लिए विरोध एवं उनके संरक्षण के उपायों को कार्यान्वित करना।

आलोच्य वर्ष में संघ की गतिविधियाँ

1. संघ के सदस्य प्रति रविवार को विश्वविद्यालय परिसर, कालचक्र मैदान, छात्रावास एवं कक्षाओं का नियमित रूप से साफ-सफाई का कार्य करते हैं।
2. संघ ने प्रति वर्ष की भाँति 2 अक्टूबर, 2013 को महात्मा गाँधी एवं स्व. प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री के जन्मदिवस के अवसर पर विविध प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन किया। जिसके अन्तर्गत सर्वधर्म प्रार्थना, सप्ताह व्यापी गाँधी जी के कृतियों का प्रदर्शनी, गाँधी जी के जीवन एवं दर्शन से सम्बद्ध विषयों पर क्विज़ प्रतियोगिताओं का आयोजन किया। सदस्यों ने इस अवसर पर अहिंसा के प्रति प्रतिबद्धता व्यक्त करते हुए दैनिक व्यावहारिक जीवन में इसके प्रयोग के लिए शपथ ली तथा इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित की।
3. दिनांक 5.11.2013 को परम्परागत रूप से प्रो. समदोङ् रिन्पोछे का जन्मदिवस मनाया तथा इस अवसर पर "सोशल स्पेक्ट्रम" नामक त्रिभाषायी पत्रिका का विमोचन किया।
4. दिनांक 6.12.2013 को संघ ने अपने उद्देश्य के अनुरूप स्थानीय गरीब एवं असहाय व्यक्तियों को गर्म कपड़े एवं कम्बल आदि का वितरण किया।
5. जनवरी, 2014 को संघ के 50 सदस्यों ने वाराणसी जाकर गंगानदी की सफाई का कार्य किया।
6. मार्च, 2014 को संघ ने "बुद्धिज्म एण्ड फिजिक्स" विषय पर इमोरी विश्वविद्यालय के शोध छात्र मि. पियोपाह दमियानो का चार सप्ताह तक व्याख्यानमाला का आयोजन किया।

परिशिष्ट-1

विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित दीक्षान्त समारोह और उनमें मानद उपाधि से सम्मानित विशिष्ट विद्वानों की सूची

विशेष दीक्षान्त समारोह	परम पावन दलाई लामा	14-01-1990	वाचस्पति
पहला	1. श्री पी.वी. नरसिम्हा राव	19-02-1990	वाक्पति
	2. भिक्षु लोबुगामा लंकनन्दा महाथेरो, श्रीलंका	19-02-1990	वाक्पति
	3. भिक्षु खेनपो लामा गादेन, मंगोलिया	19-02-1990	वाक्पति
दूसरा	1. डॉ. राजा रमन्ना	15-07-1991	वाक्पति
	2. प्रो. जी.एम. बोनगार्ड लेविन, रूस	15-07-1991	वाक्पति
तीसरा	1. डॉ. जी. राम रेड्डी, चेयरमैन, यू.जी.सी.	08-04-1993	वाक्पति
	2. आचार्य तुलसी महाराज	08-04-1993	वाक्पति
चौथा	1. एच.एच. सक्या ठ्रिजिन रिनपोछे	16-04-1994	वाक्पति
पाँचवाँ	1. डॉ. एस.डी. शर्मा, राष्ट्रपति, भारत सरकार	21-08-1996	वाक्पति
	2. प्रो.के. सच्चिदानन्द मूर्ति	21-08-1996	वाक्पति
	3. प्रो. रल्फ बूल्टी जीन, श्रीलंका	21-08-1996	वाक्पति
छठाँ	1. डॉ. ए.आर. किदवई, राज्यपाल, बिहार	5-01-1998	वाक्पति
	2. प्रो. जी.सी. पाण्डेय	5-01-1998	वाक्पति
सातवाँ	1. डॉ. कर्ण सिंह	27-12-1998	वाक्पति
	2. डॉ. (श्रीमती) कपिला वात्स्यायन	27-12-1998	वाक्पति
आठवाँ	1. प्रो. रामशरण शर्मा	31-10-1999	वाक्पति
	2. प्रो. रवीन्द्र कुमार	31-10-1999	वाक्पति
नवाँ	1. प्रो. डी.पी. चट्टोपाध्याय	25-12-2000	वाक्पति
	2. आचार्य एस.एन. गोयनका	25-12-2000	वाक्पति
दसवाँ	1. प्रो. विष्णुकान्त शास्त्री, राज्यपाल, उत्तर प्रदेश	29-12-2001	वाक्पति
	2. प्रो. वी.आर. अनन्तमूर्ति	29-12-2001	वाक्पति
	3. गादेन ठ्रि रिनपोछे लोब्संग ञीमा	29-12-2001	वाक्पति
	4. डॉ. किरीट जोशी	29-12-2001	वाक्पति

ग्यारहवाँ	1. प्रो. मुरली मनोहर जोशी, मानव संसाधन विकास मंत्री, भारत सरकार	09-03-2003	वाक्पति
	2. प्रो. डेविड सेफॉर्ड रूइग, इंग्लैण्ड	09-03-2003	वाक्पति
बारहवाँ	1. श्री बलराम नन्दा	18-02-2005	वाक्पति
	2. श्री जे.एस. वर्मा, न्यायाधीश	18-02-2005	वाक्पति
तेरहवाँ	1. डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम पूर्व राष्ट्रपति, भारत सरकार	06-03-2008	वाक्पति
	2. प्रो. सुलक शिवरक्श	06-03-2008	वाक्पति
चौदहवाँ	1. श्रीमती मीरा कुमार अध्यक्ष, लोकसभा	17-03-2012	वाक्पति
	2. प्रो. रोबर्ट थरमन	17-03-2012	वाक्पति
	3. प्रो. लोकेश चन्द्र	17-03-2012	वाक्पति

परिशिष्ट-2

सोसायटी के सदस्य (दिनांक 31-3-2014)

क्र.सं.	नाम	पद
1.	सचिव संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार, शास्त्री भवन, नई दिल्ली।	अध्यक्ष
2.	प्रो. गेशे ङवङ् समतेन, कुलपति केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
3.	संयुक्त सचिव (बी.टी.आई.) संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार, शास्त्री भवन, नई दिल्ली।	सदस्य
4.	प्रो. संघसेन सिंह 199, वैशाली एन्क्लेव पीतमपुरा, दिल्ली-88	सदस्य
5.	श्री दौलत जैन आईडियल गार्डनज़, 20-मन्डेविले गार्डन, तृतीय मंजिल, फ्लैट 3-बी, कोलकाता-700019	सदस्य
6.	डॉ. विजय कुमार सिंह ई-1. 68, पंजाब विश्वविद्यालय कैंपस, सेक्टर-14, चण्डीगढ़-160014	सदस्य
7.	श्री विनय के. बहल विजिटिंग प्रोफेसर, आर्ट्स कालेज दिल्ली 329, पाँचवी मंजिल, माउंट कैलाश टावर-I, ईस्ट कैलाश, नयी दिल्ली-110065	सदस्य
8.	डॉ. कल्पकम शंकरनारायन बैंगलो नं. 5, केदार सोसायटी, अपलब फैक्टरी के पीछे, बागले इस्टेट, थाने-400604, महाराष्ट्र।	सदस्य

9.	सुश्री लक्काराजु शेष कुमारी पूर्व डी.जी.एम. (एन.एफ.सी.एल.), मेहेर भवन, रामारावपेट, काकीनाडा, आन्ध्र प्रदेश-533005	सदस्य
10.	भिक्षु छेरिंग फुन्च़ोग भूतपूर्व कालोन (मंत्री), धर्म और संस्कृति विभाग, थेकछोग नमडोलिङ, पो. वैलाकुप्पी, जिला-मैसूर, कर्नाटक स्टेट-571104	सदस्य
11.	श्री गौतम बम्बवले संयुक्त सचिव (पूर्व एशिया) मिनिस्ट्री ऑफ एक्सटर्नल अफेयर्स, साउथ ब्लॉक, नई दिल्ली-110011	सदस्य
12.	गेशे दोर्जे दमडुल निदेशक, तिब्बत हाउस, 1, इंस्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली-110003	सदस्य
13.	प्रो. लोब्संग तेनज़िन, संकायाध्यक्ष सोवा रिग्-पा विभाग, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
14.	भिक्षु लोसंग थोकमेद (एसोशिएट प्रफेसर) केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
15.	डॉ. आर. सी. नेगी, एसिस्टेंट प्रोफेसर, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
16.	डॉ. देवराज सिंह सचिव एवं कुलसचिव, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य-सचिव

परिशिष्ट-3

अधिशासी बोर्ड के सदस्य (दिनांक 31-3-2014)

क्र.सं.	नाम	पद
1.	प्रो. गेशे ङवङ् समतेन, कुलपति केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	अध्यक्ष
2.	संयुक्त सचिव संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार, शास्त्री भवन, नई दिल्ली।	सदस्य
3.	श्री पेमा छिन्जोर कालोन (मंत्री) धर्म और संस्कृति विभाग, केन्द्रीय तिब्बती प्रशासन, गंगछेन क्यिशोंग, धर्मशाला-176214, जिला-कांगड़ा, (हिमाचल प्रदेश)।	सदस्य
4.	श्री सम्भु एस. कुमारन (आई.एफ.एस.) निदेशक (पूर्व एशिया) भारत सरकार, मिनिस्ट्री ऑफ एक्सटर्नल अफेयर्स, नई दिल्ली।	सदस्य
5.	उपसचिव (वित्त) भारत सरकार, संस्कृति मन्त्रालय (आई.एफ.डी.), शास्त्री भवन, नई दिल्ली।	सदस्य
6.	प्रो. दोबुम टुल्कु भूतपूर्व निदेशक, तिब्बत हाउस, नई दिल्ली।	सदस्य
7.	आचार्य येशे फुन्चोग एक्जीक्यूटिव प्रोग्रामर, टी.पी.पी.आर.सी., सांसद, निर्वासित तिब्बती सरकार, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश।	सदस्य

8.	प्रो. येशे थबखे रिटायर्ड प्रोफेसर, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
9.	डॉ. बी. बी. चक्रवर्ती एसोशिएट प्रोफेसर (अर्थशास्त्र), केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
10.	प्रो. लोब्संग तेनज़िन संकायाध्यक्ष, सोवा रिग्-पा विभाग, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
11.	डॉ. देवराज सिंह कुलसचिव, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य-सचिव

परिशिष्ट-4

विद्वत् परिषद् के सदस्य (दिनांक 31-03-2014)

क्र.सं.	नाम	पद
1.	प्रो. गेशे ङवङ् समतेन कुलपति, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	अध्यक्ष
2.	प्रो. लोब्संग तेनज़िन केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
3.	प्रो. सोनम ग्यात्सो केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
4.	डॉ. जम्पा समतेन केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
5.	डॉ. जम्पा छोफेल केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
6.	डॉ. डी. डी. चतुर्वेदी केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
7.	डॉ. टशी सम्फेल केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
8.	भिक्षु नवांग लोडोस् केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य

9.	डॉ. टशी छेरिंग (जे.) केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
10.	भिक्षु गोरिग तेनज़िन छोगदेन केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
11.	डॉ. मौसमी गुहा बैनर्जी केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
12.	भिक्षु लोब्संग यरफेल केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
13.	भिक्षु ल्हकपा छेरिंग केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
14.	डॉ. उमेश चन्द्र सिंह केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
15.	डॉ. टशी छेरिंग (टी) केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
16.	भिक्षु दोर्जे दमडुल केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
17.	श्री सी.जी.एस. फुन्छोग त्रिमा केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
18.	प्रो. भुवन चन्देल सेन्टर फॉर स्टडीज इन सिविलायसेशन, डीडी-24, कालकाजी, नई दिल्ली-110019	सदस्य

19.	प्रो. सुकोमल चौधरी (रि.) प्रोफेसर, पालि एवं बौद्धदर्शन, भूतपूर्व-प्राचार्य, गवर्नमेन्ट कालेज, कोलकाता।	सदस्य
20.	प्रो. एच.एस. प्रसाद दर्शन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।	सदस्य
21.	प्रो. एम. चिनचोरे दर्शन विभाग, पूना विश्वविद्यालय, पूना-411007	सदस्य
22.	प्रो. कपिल कपूर बी-2/332, एकता गार्डन 9-1, पी. एक्सटेंशन, मदर डेरी मार्ग, नई दिल्ली-110092	सदस्य
23.	प्रो. सेम्पा दोर्जे के.आई.बी.आई., बी-19/20 कुतुब इंस्टीट्यूशनल एरिया नई दिल्ली-110016	सदस्य
24.	प्रो. हरिकेश सिंह शिक्षा संकाय, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।	सदस्य
25.	प्रो. लालजी श्रावक डिपार्टमेंट ऑफ पालि एवं बुद्धिस्ट स्टडीज, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।	सदस्य
26.	प्रो. गेशे दोर्जे दमडुल निदेशक, तिब्बत हाउस, 1. इंस्टीट्यूशनल एरिया, लोधी रोड, नई दिल्ली।	सदस्य
27.	डॉ. देवराज सिंह कुलसचिव, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी-221007	सदस्य-सचिव

परिशिष्ट-5

वित्त समिति के सदस्य (दिनांक 31-3-2014)

क्र.सं.	नाम	पद
1.	प्रो. गेशे ङवङ् समतेन कुलपति, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	अध्यक्ष
2.	निदेशक/उपसचिव (बी.टी.आई.) संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार, शास्त्री भवन, नई दिल्ली।	सदस्य
3.	निदेशक/उपसचिव (वित्त) भारत सरकार, संस्कृति मन्त्रालय (आई.एफ.डी.) शास्त्री भवन, नई दिल्ली।	सदस्य
4.	प्रो. हरिशंकर प्रसाद दर्शन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110007	सदस्य
5.	डॉ. देवराज सिंह कुलसचिव, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी-221007	सदस्य-सचिव

परिशिष्ट-6

योजना एवं प्रबोधक परिषद् के सदस्य (दिनांक 31-3-2014)

क्र.सं.	नाम	पद
1.	प्रो. गेशे ङवङ् समतेन कुलपति, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	अध्यक्ष (पदेन)
2.	संयुक्त सचिव संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार, शास्त्री भवन, नयी दिल्ली।	सदस्य (पदेन)
3.	आर्थिक सलाहकार संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार, शास्त्री भवन, नयी दिल्ली।	सदस्य (पदेन)
4.	प्रो. लोसंग तेनजिन प्रो. सोवा-रिग्-पा, सोवा-रिग्-पा विभाग, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
5.	प्रो. कपिल कपूर बी-2/332, एकता गार्डन 9-1, पी. एक्सटेंशन, मदर डेरी मार्ग, नई दिल्ली-110092	सदस्य (सोसायटी के अध्यक्ष द्वारा नामित)
6.	प्रो. प्रदीप पी. गोखले दर्शन विभाग, पूना विश्वविद्यालय, गणेश खिंड, पुणे, महाराष्ट्र। [शोध विभाग, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।]	सदस्य ”

परिशिष्ट-7

प्रकाशन समिति के सदस्य (दिनांक 31-3-2014)

क्र.सं.	नाम	पद
1.	प्रो. गेशे ङवङ् समतेन कुलपति, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	अध्यक्ष
2.	प्रो. गेशे येशे थपखे केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
3.	प्रो. एन. एच. समतानी सुजाता कुटीर, प्लॉट नं. 5, झूलेलाल कालोनी महमूरगंज, वाराणसी-221010	सदस्य
4.	प्रो. रमेशचन्द्र तिवारी बी./315, सेक्टर 'बी.' महानगर, लखनऊ।	सदस्य
5.	प्रोफेसर दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध विभाग, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
6.	डॉ. देवराज सिंह कार्यवाहक कुलसचिव, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
7.	ग्रन्थालयाध्यक्ष शान्तरक्षित ग्रन्थालय, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य

8.	एसोशिएट प्रोफेसर अनुवाद विभाग, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
9.	एसोशिएट प्रोफेसर पुनरुद्धार विभाग, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य
10.	श्री सङ्ग्ये तेन्दर अध्यक्ष तिब्बती प्रकाशन, लाइब्रेरी ऑफ टिबेटन वर्क्स एण्ड ऑर्काइब्स, धर्मशाला (हि.प्र.)।	सदस्य
11.	प्रकाशन प्रभारी केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।	सदस्य-सचिव

परीक्षा का नाम	उपस्थित छात्रों की संख्या	अनुत्तीर्ण छात्रों की संख्या	उत्तीर्ण छात्रों की संख्या
पूर्वमध्यमा, प्रथम वर्ष	40	0	40
पूर्वमध्यमा, द्वितीय वर्ष	55	5	50
उत्तरमध्यमा, प्रथम वर्ष	49	0	49
उत्तरमध्यमा, द्वितीय वर्ष	40	2	38
शास्त्री, प्रथम वर्ष	39	3	36
शास्त्री, द्वितीय वर्ष	32	2	30
शास्त्री, तृतीय वर्ष	41	1	40
आचार्य, प्रथम वर्ष	23	1	22
आचार्य, द्वितीय वर्ष	20	0	20
उ.म. (आयु.), प्रथम वर्ष	9	1	8
उ.म. (आयु.), द्वितीय वर्ष	8	1	7
ज्योतिष शास्त्री, द्वितीय वर्ष	1	0	1
फाइन आर्ट्स, द्वितीय	2	1	1
बी. फाइन आर्ट्स, प्रथम	2	1	1
बी. फाइन आर्ट्स, द्वितीय	1	0	1
बी. फाइन आर्ट्स, तृतीय	4	0	4
एम.एफ.ए., प्रथम	3	0	3
बी.एस.एम.एस., द्वितीय वर्ष	4	0	4
बी.एस.एम.एस., तृतीय वर्ष	3	1	2
बी.एस.एम.एस., चतुर्थ वर्ष	5	0	5
बी.एस.एम.एस., पंचम वर्ष	2	0	2

शैक्षणिक सत्र 2013-14 के प्रथम अधिसत्र का परीक्षा-परिणाम

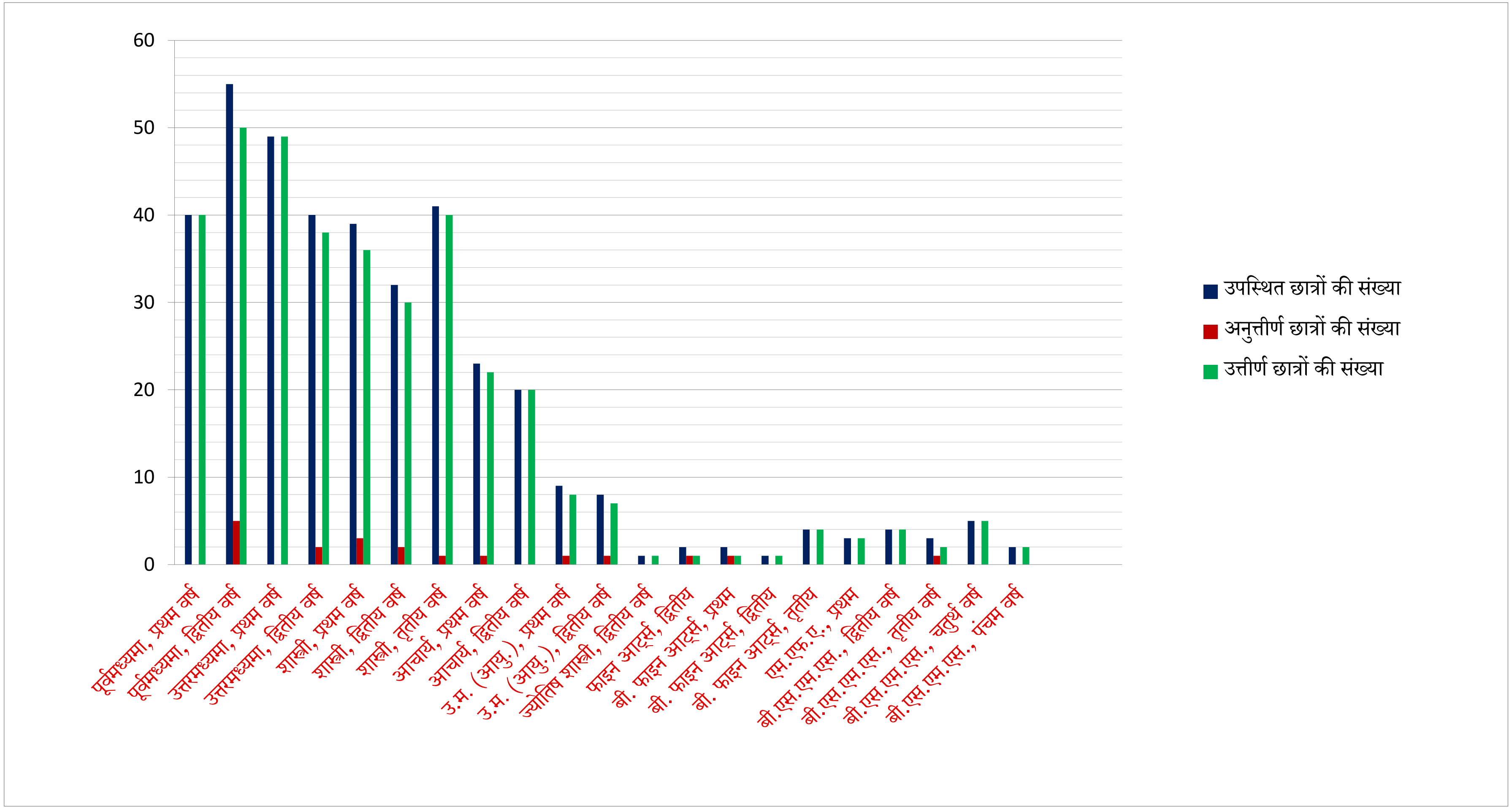

परीक्षा का नाम	उपस्थित छात्रों की संख्या	अनुत्तीर्ण छात्रों की संख्या	उत्तीर्ण छात्रों की संख्या
पूर्वमध्यमा, प्रथम वर्ष	39	4	35
पूर्वमध्यमा, द्वितीय वर्ष	57	0	57
उत्तरमध्यमा, प्रथम वर्ष	49	1	48
उत्तरमध्यमा, द्वितीय वर्ष	40	2	38
शास्त्री, प्रथम वर्ष	37	5	32
शास्त्री, द्वितीय वर्ष	34	6	28
शास्त्री, तृतीय वर्ष	41	3	38
आचार्य, प्रथम वर्ष	21	0	21
आचार्य, द्वितीय वर्ष	20	2	18
उ.म. (आयु.), प्रथम वर्ष	10	4	6
उ.म. (आयु.), द्वितीय वर्ष	8	0	8
ज्योतिष शास्त्री, द्वितीय वर्ष	1	1	0
फाइन आर्ट्स, द्वितीय	2	1	1
बी. फाइन आर्ट्स, प्रथम	2	0	2
बी. फाइन आर्ट्स, द्वितीय	1	0	1
बी. फाइन आर्ट्स, तृतीय	4	0	4
एम.एफ.ए., प्रथम	3	0	3
बी.एस.एम.एस., द्वितीय वर्ष	4	0	4
बी.एस.एम.एस., तृतीय वर्ष	3	0	3
बी.एस.एम.एस., चतुर्थ वर्ष	5	0	5
बी.एस.एम.एस., पंचम वर्ष	2	0	2

शैक्षणिक सत्र 2013-14 के द्वितीय अधिसत्र का परीक्षा-परिणाम

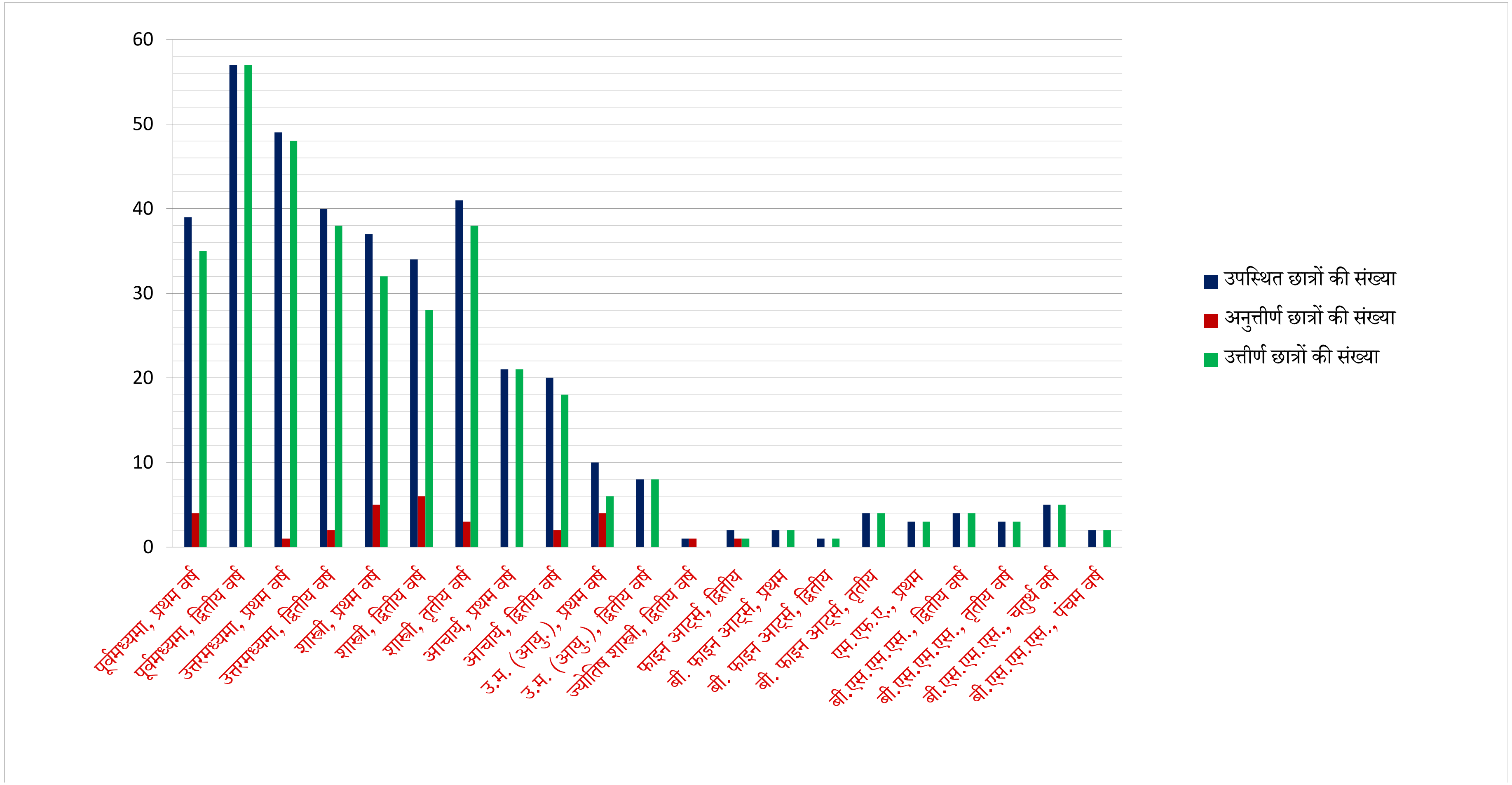

केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय

Central University of Tibetan Studies

(Deemed University)

SARNATH, VARANASI - 221007

Tel. No.: 0542-2585148, Fax No.: 0542-2585150

E-mail: cihts@yahoo.co.in

Published by
The Registrar, Central University of Tibetan Studies
Sarnath, Varanasi

Printed by
Sattanam Printers
Pandeypur, Varanasi